त्रैमासिक

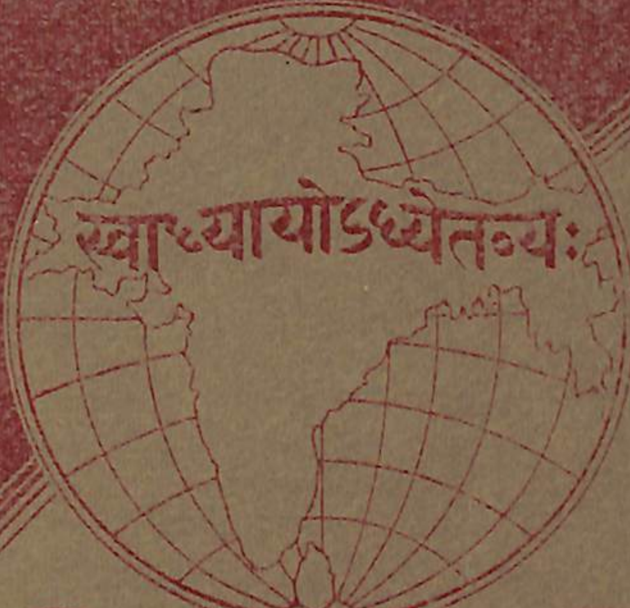
श्रीः

श्रीस्वाध्याय

हेमन्ताङ्क

वर्ष ८
सं० २००५

संख्या २
पौष



वार्षिक मूल्य ४) रु०

इस अङ्कका मूल्य १।) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

॥ श्रीः ॥

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।
धर्ममार्त्त एड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई० सोलन।
रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।
श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी०।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी सीताबर्डी, नागपुर।
श्री वेणुभाई एम० रावल पाचोरा (पूर्वखान्देश)।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ।
श्री १०५ मान् महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)
अचरोलके राजाधिराज श्री १०५ मान् हरिसिंहजी उदयपुर (मेवाड़)
श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला, बनेड़ा (मेवाड़)।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशंकरजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता उदयपुर (मेवाड़)।
श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों बी० ए० एल०-एल० बी० नाभा
श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी०ए०एल-एल० बी० सेशनजज सोलन।
श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढती खड़ (पंजाब)।
श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढती खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्याय-सदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य–

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक —

(२) जो सज्जन ५०)से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन)के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्षसमाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। बी० पी० मंगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पंचमवर्ष का 'ग्रीष्माङ्क' और विगत चतुर्थ वर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा गत सातवें वर्षका 'वसन्ताङ्क' अब कार्यालय में नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

ग्राहकोंको आवश्यक सूचना

आठवें वर्षके नववर्षाङ्क (गतांक) की अब बहुत थोड़ी प्रतियां शेष रही हैं, अतः जिन पुराने ग्राहकोंने अभी तक अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है वे शीघ्र ही ४) चार रुपये मनीआर्डर द्वारा भेज कर इस 'हेमन्तांक' के साथ ही 'नववर्षाङ्क' भी प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा विलम्ब करने पर पीछेसे यह नववर्षाङ्क किसी भी मूल्यमें उन्हें प्राप्त न हो सकेगा। यह नववर्षाङ्क और 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक अङ्क कितने उपयोगी सिद्ध हुए हैं, इस विषयमें हम अपनी ओरसे कुछ न लिख कर अनेकों महामान्य विद्वानोंकी अभी आई हुई शुभसम्मतियोंमेंसे कुछ एक आगामी पृष्ठ पर दी जा रही हैं। भारतके महामान्य नेताओं एवं साहित्य महारथियोंकी शुभसम्मतियोंका सारांश गताङ्कमें प्रकाशित किया जा चुका है।

गत 'वसन्तांक' से बने हुए ग्राहकोंके लिए

गत चैत्रमास अप्रैल १९४८ के 'वसन्ताङ्क' (वर्ष ७ संख्या ३) से बने हुए ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके पहुँचने पर समाप्त हो जायेगा। उन ग्राहकोंको इस वर्षके आगामी चैत्र और आषाढ़के शेष दो अङ्कोंका मूल्य २॥) रु० फाल्गुन शु० १५ ता० १४ मार्च १९४९ के प्रथम ही कार्यालयमें भेज देना चाहिए। जो सज्जन 'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक रहना चाहें, उनको आगामी वर्षका मूल्य ४) भी साथ ही भेजनेमें सुविधा होगी। अतः ऐसे ग्राहकोंको १८ मासके ६ अंकोंके लिए ६॥) छः रुपये आठ आने मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज देना चाहिए।

जो सज्जन गत वर्षके हेमन्ताङ्क (जनवरी १९४८) से ग्राहक बने थे उनका मूल्य गत 'नववर्षाङ्क' में समाप्त हो चुका है, इस वर्षके शेष ३ अंकोंके लिए उन्हें ३) भेज कर यह 'हेमन्ताङ्क' शीघ्र मंगवालेना चाहिए।

बिना मूल्य दुबारा अंक नहीं भेजा जायगा

'श्रीस्वाध्याय' का प्रत्येक अङ्क प्रकाशित होते ही निश्चित तिथि पर सब ग्राहकोंके नाम बहुत सावधानी पूर्वक दो बार जांच कर भेज दिया जाता है। ३॥) वाले ग्राहकों को गताङ्क (नववर्षाङ्क) रजिस्टरीसे नहीं भेजा गया, अतः ऐसे अनरजिस्टर्ड भेजे हुए कई अंक यथास्थान नहीं पहुँचनेके कारण उन्हें दुबारा अङ्क भेजना पड़ा, इस प्रकार कार्यालयको बहुत कठिनाई हुई। अतः अब यह अंक सब ग्राहकोंके नाम पौष शु० १० को अण्डर-पोस्टल-सर्टीफिकेटसे भेजा जा रहा है। जिनको न मिले वे लिफाफा या -)॥ का टिकट भेज कर कार्यालयसे पोस्ट आफिसकी रसीद मँगवा सकते हैं। स्थायी ग्राहकका अङ्क गुम हो जाने पर १५ दिनके अन्दर आधा मूल्य ॥=) और ।-) रजिस्टरी डाक खर्च प्राप्त होने पर भेजा जा सकेगा।

नाम और पूरा पता स्पष्ट देवनागरी (हिन्दी) अक्षरोंमें लिखिये

बहुतसे ग्राहक वार्षिक मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम पता और ग्राहक नम्बर आदि कुछ भी नहीं लिखते और कई उर्दू अंग्रेजीमें अस्पष्ट अक्षरोंमें लिखते हैं, इससे बड़ी कठिनाई होती और अङ्कके बिलम्बसे पहुंचने या गुम होनेका भी भय रहता है, अतः प्रत्येक ग्राहकको मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम और पूरा पता स्पष्ट देवनागरी (हिन्दी) अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

विज्ञापनका अपूर्व साधन

'श्रीस्वाध्याय' में विश्वस्त प्रामाणिक संस्थाओंके विज्ञापन प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया है। अतः आप आगामी अंकके लिए अभीसे स्थान सुरक्षित (रिजर्व) कराकर इस अपूर्व अवसरसे लाभ उठावें। विज्ञापन शुल्क (रेट्स) आदि निम्न पतेसे प्राप्त करें।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायको —

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है—

आयुर्वेद जगत्के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् अ० भा० आयुर्वेद महामण्डलके पूर्वाध्यक्ष भिषक्केसरी प्राणाचार्य श्री पं० गोवर्द्धन शर्मा जी छांगाणी महोदय नागपुरसे लिखते हैं—

'श्रीस्वाध्याय' के अवलोकनसे उस अनिर्वचनीय आनन्दका भास होता है जिसे यह क्षुद्र लेखनी प्रकट नहीं कर सकती। श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यादि महोदयोंने 'श्रीस्वाध्याय' को प्रचलित कर वस्तुतः अपने कर्तव्यका पालन किया है। यह सबका कर्तव्य है कि वह सबका सदुद्गार कर 'स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्' अतः मैं स्पष्ट कहूंगा कि हमारा प्रत्येक बन्धु 'श्रीस्वाध्याय' के पढ़नेसे वञ्चित न रहें। क्योंकि इसके लेख प्रत्येक बन्धुके लिए नितान्त कल्याणकारी एवं आनन्द प्रद रहते हैं।

* * *

रावबहादुर धर्मालङ्कार धर्मकेसरी श्री १०५ मन्महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़से लिखते हैं—

'श्रीस्वाध्याय' सोलनसे निकलने वाला त्रैमासिक पत्र सभी अभावोंकी पूर्ति करता है। इसमें राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, और विशेषकर ज्योतिषशास्त्रका ज्ञान अच्छा है, यह पत्र आठ वर्षसे अनेक कठिनाइयोंको पार करता हुआ धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा है। 'धीरे-धीरे' लिखनेका कारण यह है कि इस पत्रको जैसी सहायता मिलनी चाहिए थी नहीं मिली। हम धर्मकी दुहाई तो बहुत देते हैं किन्तु मौखिक ही। केवल धर्म ही नहीं यह पत्र तो हमारी प्राचीन संस्कृति, विज्ञान और सभ्यताका प्रतीक है। ऐसे पत्रकी सहायता करनेसे केवल धर्म ही नहीं देशोन्नति धन मान और यश प्राप्ति भी है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि देशके धनीमानी व्यक्ति इसकी सच्चेदिलसे सहायता करेंगे।

* * *

मध्यभारतके सुप्रसिद्ध साहित्यमर्मज्ञ विद्वान् श्री पं० गणेशदत्त जी 'इन्द्र' विद्यावाचस्पति आगरसे लिखते हैं—

'श्रीस्वाध्याय' के अङ्कोंको मैंने देखा। मैंने जो इसके सम्बन्धमें, इसके बिना देखे ही अपनी एक धारणा बना ली थी उससे इसे कहीं अधिक अच्छा पाया। पत्र, विविध विषयोंके विविध सुपाठ्य और परिश्रमसे लिखे गये लेखोंसे परिपुष्ट होकर सबके कामका बन गया है। ज्योतिष विषयक लेख तो पाठकोंको बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। पत्र सर्वोपयोगी सुन्दर और रुचिपूर्ण सम्पादन होता है। मैं इसे पहले कुछ वर्ष तक न देख सका इसका मुझे दुःख और पछतावा है। यदि यह मासिक हो जाय तो और भी अच्छा हो।

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृहीत्वाचिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष ८ | सोलन, पौष शु० १० रविवार सं० २००५ वि० | संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥

—अ० वा० आचार्य

विनय

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन-तरुवरके सबै पात झरि जैहैं॥
या देहीको गरब न करियै, स्यार-काग-गिध खैहैं।
तीननिमैं तन कृमि, कै विष्ठा कै ह्वै खाक उड़ैहैं॥
कहँ वह नीर, कहाँ वह सोभा, कहँ रङ्ग-रूप दिखैहैं।
जिन लोगनि सौं नेह करत है, तेहि देखि घिनैहैं॥
घरके कहत सवारे काढ़ौ, भूत होइ धरि खैहैं।
जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी देव मनैहैं॥
तेई लै खोपरी बांस दै, सीस फोरि बिखरैहैं।
अजहूँ मूढ़ करौ सत-संगति, सतनि मैं कछु पैहैं॥
नर-वपु धारि नाहि जन हरिकौं, जमकी मार सो खैहैं।
'सूरदास' भगवन्त भजन बिनु वृथा सुजनम गंवैहैं॥

—भक्त सूरदास

सम्पादकीय-विचार:—

हमारा कर्तव्य

अभी तक हमारा राष्ट्र पारतन्त्र्य-पाशमें बंधा था। इस कारण स्वभावतः प्रत्येक देशसेवा करने वाली संस्थाका एक प्रधान लक्ष्य राजनैतिक ही होता था। अब सौभाग्यसे देश पराधीनताके अन्धकारसे निकलकर स्वतन्त्रताके प्रकाशमें प्रकाशित होने लगा है। इस कारण अब देशकी सभी संस्थाओंको अपनी नीति बदलनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। अभी-अभी हम शास्य थे और विदेशी शासक थे। अब हम स्वयं अपने शासक हैं। यह स्वराज्य हमने शताब्दियोंके बलिदानोंके फलरूपमें प्राप्त किया है। महमूदके आक्रमणोंसे लेकर सन् ४२ ई० के 'भारत छोड़ो'आन्दोलन तक इन बलिदानों की परम्परा चलती ही आई। कितने ही देशभक्त दिव्य-पुरुषोंके प्राण, बलशाली वीरोंकी भुजाएँ, बुद्धिमानोंकी बुद्धियां; सहृदयोंके हृदय, ऊँचे सिर और कितने ही सुन्दर शरीर इस महासंघर्षमें बलिदान हो गए। इतना त्यागकरने पर भी अभी पूर्ण स्वातन्त्र्य-सुखके दर्शन हमें नहीं हुए। पूरी स्वतन्त्रता तो तभी कह सकते हैं जब हम प्राप्त-स्वतन्त्रताके योग और क्षेम दोनोंके लिए समर्थ हो जाएं। अभी तक तो यह केवल स्वतन्त्रताका योग ही हमने देखा। इसके क्षेमके लिए अभी हमें अथक परिश्रम करना है। इसका क्षेम अर्थात् इसे सुरक्षित रखना तभी सम्भव है जब हममें राष्ट्र-शक्ति पूर्णरूपसे जाग्रत हो। 'श्रीराष्ट्रालोक' में महामहिम आचार्यचरण श्रीं १०८ अमृतवाग्भवजी महाराजकी यह कारिका कितनी महत्वपूर्ण है —

स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव कदाचिदपि लभ्यते।
योगक्षेमसमर्थैका राष्ट्रशक्तिः प्रभाविनी॥

राष्ट्रशक्तिका स्वरूप भी वहीं (श्रीराष्ट्रालोकमें) बताया हुआ है —

राष्ट्रकाली राष्ट्रलक्ष्मीः तथा राष्ट्रसरस्वती।
सेवनीया प्रयत्नेन भोगमोक्षप्रदायिनी॥

राष्ट्र-शक्तिके तीन रूप हैं। पहला स्वरूप राष्ट्रकाली है। राष्ट्रकालीसे तात्पर्य यह है कि राष्ट्रके व्यक्तियोंका शारीरिक बल विशाल हो, राष्ट्रमें अस्त्रों और श

इतना संग्रह हो कि राष्ट्र दुष्टोंका निग्रह कर सके, चाहे वे भीतरी दुष्ट हों या बाहरी शत्रु हों। तथा सभी राष्ट्रिय अस्त्रों और शस्त्रोंका उचित प्रयोग जानते हों। दूसरे स्वरूप अर्थात् राष्ट्रलक्ष्मीसे तात्पर्य है कि राष्ट्र सर्वथा समृद्ध हो। किसी वस्तुको न्यूनता न हो। सांसारिक आवश्यकताएँ सभी राष्ट्रियोंकी पूरी होती हो। दारिद्र्यका कहीं नाम न हो। राष्ट्रकालीको जितने धनकी आवश्यकता हो उतना उसे मिलता रहे। साथ ही राष्ट्रसरस्वतीको भी पूर्ण आर्थिक सहायता मिलती रहे। तीसरी शक्ति है राष्ट्र-सरस्वती। इनमें राष्ट्रकी विद्या, बुद्धि, सद्विचार, नीतिज्ञता, कला, विज्ञान आदि आते हैं। यह तीनों शक्तियां अन्योन्याश्रित हैं। इनमें से कोई एक भी शिथिल हो जाए तो शेष दो भी निःशक्त हो जाती हैं और राष्ट्रकी अधोगति होती है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि इस समय हमारी पहली आवश्यकता यही है कि हमारे पास एक विशाल सेना हो, जो प्रभावशील और शक्तिशाली अस्त्रशस्त्रोंसे सुसज्जित हो, तथा जिसमें भूसेना और उसके साधनोंके अतिरिक्त आकाश सेना एवं सामुद्रिक सेना तथा इन दोनोंके साधन पर्याप्त मात्रामें हों। तभी हम अपने इस स्वतन्त्र राष्ट्रकी रक्षा कर सकते हैं, तभी हमारे भीतरी और बाहरी शत्रुओंका दमन हो सकता है। दूसरी महान् आवश्यकता हमें इस बातकी है कि शीघ्रातिशीघ्र हमारे राष्ट्रसे दरिद्रता देवीको निर्वासित की जाए। तीसरी बहुत बड़ी आवश्यकता हमें ऐसी शिक्षाकी है जिससे हम पूर्ण रूपसे मनुष्य बनें, हममें सभी सद्गुण विकसित हो जाएं, और हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति शीघ्रतासे होने लगे।

इन तीनों प्रयोजनोंको प्राप्त करनेके लिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम सब अपनी-अपनी शक्तियोंको इकट्ठी मिला कर एक बलशाली प्रवाहका रूप दें, पारस्परिक कलहोंको भूल कर सब मिल कर देशका उत्थान करें। हिम पर्वतोंसे टपकने वाली पानीकी बून्दें इकट्ठी हो कर एक छोटा सा जलप्रपात (झरना) बन जाता है, ऐसे अनेक झरने मिल कर ही एक नदी बनती है। हमें भी चाहिए

कि सब अपनी अपनी शक्तिकी बून्दोंको एक झरनेके अर्पण करें। ये झरने हमारी प्रान्तीय सरकारें हैं। यदि हम सब अपनी अपनी प्रान्तीय सरकारोंको पूर्ण सहयोग दें तो ये सरकारें बहुत ही बलशालिनी बनेंगी। प्रान्तीय सरकारोंका कर्तव्य है (जैसा कि वे कर भी रही हैं) कि केन्द्रीय शासन की पूरी सहायता करें। इस प्रकारसे करोड़ों व्यक्तियोंकी शक्ति एक ही केन्द्रमें केन्द्रित हो सकती है। सौभाग्य है कि नवीन विधानके अनुसार भारतका केन्द्रीय शासन बहुत ही बलशाली बनने जा रहा है। हमारे पिछले सहस्र वर्षकी दासता का प्रधान कारण यही है कि हमारे राष्ट्रमें कोई केन्द्रीय शासन न था। देशके केवल मध्य भागके ही प्रान्त जब नन्दोंके समयमें एक केन्द्रमें केन्द्रित थे तो विश्व विजयी सिकन्दरकी सेना भी भयभीत हो गई थी। स्कन्दगुप्तके समय जब केन्द्रकी शक्ति शिथिल हो गई तब हूण जातिने सफल आक्रमण करके भारतके टुकड़े टुकड़े कर दिए। उस के अनन्तर केन्द्र कभी शक्तिशाली बना ही नहीं। महाराज हर्षवर्धनने कुछ समयके लिए कुछ प्रान्तोंको मिला कर एक विशाल राष्ट्रका रूप तो दे दिया, परन्तु केन्द्र इतना शिथिल रहा कि उनकी मृत्युके साथ ही साम्राज्य भी छिन्न-भिन्न हो गया। इस प्रकारसे हमारी शक्ति छठी शताब्दीसे लेकर पांच छः सौ वर्ष तक किसी भी केन्द्रके साथ सम्बद्ध नहीं रही। सारी राष्ट्र-शक्ति अस्त व्यस्त हो गई। पांच सौ वर्षकी इस अव्यवस्थाका ही दुष्परिणाम एक सहस्र वर्ष तक हम दासताके नरकमें सड़ते रहे। अब सौभाग्यसे हमारे शुभग्रहों का उदय हुआ। हमारे पाप समाप्त हुए और पुण्योंका उदय होने लगा, हमें सावधान रहना चाहिए कि कहीं इतने कष्टोंके अनन्तर प्राप्त की हुई स्वतन्त्रताको खो न बैठें। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे पितृभू भारतवर्षके कुछ एक खण्ड इस समय दुर्दैवसे हमारे केन्द्रसे केन्द्रित नहीं। फिर भी हमें समझना चाहिए कि शेष भाग भी गुप्त साम्राज्यसे लगभग दो गुणा है। इतना देश भी एक महान् शक्तिशाली और विभूति सम्पन्न राष्ट्र बन सकता है। इस कारण हमारा पहला कर्तव्य है कि इस प्राप्त किए हुए राष्ट्रको पहले शक्तिशाली बनाएं, तदनन्तर बिछुड़े हुए भागकी चिन्ता करें। ऐसा न हो कि 'नाभूत् जारो न भर्ता च' वाली बात हो जाए। हो सकता है कि कालान्तरमें पूर्व और पश्चिम के प्रान्तोंकी शक्ति भी हमारी शक्तिसे ही केन्द्रित हो जाए। परन्तु इसमें समय लगेगा और यह कार्य वैर और झगड़ेसे नहीं होगा, यह तो साम, दाम, दण्ड, भेदके द्वारा अनुग्रह निग्रह दोनोंकी उपासनासे ही होगा।

इससे यह सिद्ध होता है कि हमें शरीर मन और वाणी से अपने सद्योजात केन्द्रीय शासनका पोषण करना चाहिए। इसे आत्मीय समझ कर इसका सहयोग करना चाहिए। हो सकता है कि इसमें अनेकों त्रुटियां हों, परन्तु यदि त्रुटियोंके कारण हम इसे नहीं अपनाएँ और इसका विरोध करें, इस की जड़ोंको भीतरसे खोखला करें तो यही समझना चाहिए कि हम अपने ही घरमें आग लगा रहे हैं, या साधारण रोग को दूर करनेके लिए विषैली औषधको खा रहे हैं, त्रुटियां धीरे-धीरे ही दूर हो सकती हैं। इसको दूर करनेके लिए राष्ट्रशक्तिकी आवश्यकता होती है। राष्ट्रशक्ति वैभवको प्राप्त करे तो ये त्रुटियां सरलतासे ही दूर की जा सकती हैं। यह भी ठीक है कि जबतक त्रुटियां रहें तबतक राष्ट्रशक्ति पूर्ण विकास को प्राप्त नहीं कर सकती। परन्तु फिर भी जितनी शक्ति हो पहले उसीको सुरक्षित रखना उचित है। उसीके बलसे त्रुटियां दूर हो सकती हैं। त्रुटियोंके नष्ट हो जाने पर राष्ट्रशक्ति और बलवती बन सकती है। यदि कुछ शेष त्रुटियां रह गई हों तो वह भी निकाली जा सकती हैं। और इस से शक्ति पूर्ण विकासको प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार से इन दोनोंका यह अन्योन्याश्रय सम्बन्ध सदासे चला आ रहा है। परन्तु इसमें पहला प्रगति शील कार्य राष्ट्रशक्ति द्वारा ही हो सकता है, फिर यह अन्योन्य-उपकारकी शृंखला चल पड़ती है। इसीलिए हम अपने स्वतन्त्र शासकोंसे भी निवेदन करेंगे कि वे भी इस समय नीतिसे काम लेकर शक्ति सञ्चयको ही अपना मुख्य ध्येय समझ कर कार्य करें। हम सब इस समय संकुचित दृष्टिसे देख कर उतावले हो रहे हैं और चाहते हैं कि हम भी असुरोंकी भांति पाशविक बलका ही विशेष प्रयोग करें। इसमें हम "रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्" के अचल सिद्धान्तको भूल कर अपने आर्यत्वका भी वस्तुतः त्याग करके अनार्य बननेको उद्यत हो रहे हैं।

सहस्र वर्षकी दासतासे हम इतने निराशसे हो गए हैं कि हम देवत्वको कलङ्कित करके असुरत्वकी प्रशंसा करते हैं और असुरोंकी भांति ही अपना व्यवहार चलानेके लिए उत्सुक हो रहे हैं। यह हमारी भारी भूल है। निरे पशुबलका प्रयोग और उसके प्रत्यक्ष फलको हमें जापान और जर्मनीकी वर्तमान दशाके परीक्षणसे भली भांति समझना चाहिए। महाकविके इन शब्दोंको भूलना नहीं चाहिए कि—

कातर्यं केवला नीतिः शौर्यं श्व पदचेष्टितम्।
अतः सिद्धि समेताभ्याम् उभाभ्यामन्वियेष सः॥

इस लिए अब हमारा प्रधान कर्तव्य यह है कि राष्ट्रके सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक उत्थानकी ओर अपनी शक्तिको लगाएं। सैकड़ों वर्षोंकी दासतासे जो दुर्गुण हमारे समाजमें आए हैं उनको दूर करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। इस लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए सरकार और जनता दोनोंका पूर्ण सहयोग ही एकमात्र राष्ट्र कल्याणका मार्ग है।

संघका सत्याग्रह

संघका व्यापक संगठन और उसकी प्रच्छन्न कार्य-प्रणालीको देखते हुए सरकारको उस पर सन्देह होना स्वाभाविक है। अपना विधान प्रकाशित करनेसे पूर्व इस समयमें सत्याग्रह प्रारम्भ करके जहां संघने यदि भारी भूल की है तो वहां सङ्घके प्रति हमारी सरकारका जो व्यवहार है वह भी प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। यदि वास्तवमें कोई संस्था या व्यक्ति-विशेष राष्ट्रद्रोही है तो उसका दमन अवश्य होना ही चाहिए। किन्तु आज जिस रूपमें हम उसे देख रहे हैं उस रूपमें नहीं, क्योंकि वह हमारा अपना ढङ्ग नहीं है। इसी प्रकारकी दमन नीतिके अन्तर्गत हमारी राष्ट्रीयता सबल हुई और स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। जिस प्रकार दमनकी यह प्रणाली कांग्रेसको दबाने में असफल रही, उसी प्रकार सङ्घका दमन करनेमें भी समर्थ न होगी।

स्व० महात्मा गांधीजीके अनुयायियों द्वारा परिचालित सरकारको उनके ही सिद्धान्तों द्वारा विरोधियोंका दमन करना चाहिए। विरोधीको समर्थक बना कर, शत्रुको मित्र बना कर और हृदयके भाव परिवर्तन करके ही सङ्घका दमन करना हितकर होगा। गांधीजीका सदैव यही सिद्धांत रहा है। एक भाईकी दूसरे भाईके साथ ऐसी ही लड़ाई होनी भी चाहिए। कांग्रेस अपनेको जन-प्रतिनिधि संस्था होनेका दावा रखती है। यदि उसे वस्तुतः अपनी इस शक्तिमें विश्वास है तो सङ्घका दमन करनेके लिये अन्य किसी भी शक्तिकी कोई आवश्यकता नहीं। जन-सहानुभूति ही सरकारकी सबसे बड़ी शक्ति है। सहस्रटांकियोंकी चोट सह कर शालिग्रामकी मूर्ति पूज्य होती है। सरकार सङ्घको उस प्रकारकी चोट सहने और बलिदान द्वारा पूज्य होने एवं जनमतको आकृष्ट करनेका अवसर कदापि न दे। इस भयंकर रोगके सफल उपचार हमारी समझसे गान्धीजीके सिद्धान्त ही हैं, जिनका पालन करना सरकारका कर्तव्य है। क्योंकि जिन सिद्धान्तोंके बल पर स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उन्हींके द्वारा उसकी रक्षा भी सम्भव है।

राष्ट्र-मण्डल और भारत

राष्ट्रमण्डल अपने साधारण अर्थके अनुसार विश्वके कतिपय राष्ट्रोंका एक संगठन है। जैसा कि इसके कथित उद्देश्यों द्वारा विदित होता है, इस सङ्गठन द्वारा विश्व-शान्तिका प्रयत्न किया जायगा। यद्यपि 'ब्रिटिश' शब्दको राष्ट्रमण्डलसे पृथक् कर दिया गया है तथापि हमारी समझ से किसी-न-किसी रूपमें राष्ट्र-मण्डलमें सम्मिलित होने वाले राष्ट्र अंग्रेज राज्यके ही नागरिक समझे जायेंगे। भारतको राष्ट्रमण्डलकी सदस्यता स्वीकार करनी चाहिए अथवा नहीं, इस प्रश्न पर विचार करनेसे पूर्व हमें इस बात पर ध्यान देना है कि राष्ट्रमण्डल अपने कथित लक्ष्यकी पूर्तिकी ओर कहां तक अग्रसर हो चुका है। क्योंकि दक्षिणी अफ्रीकाके प्रवासी भारतीयोंकी दशाको देखते हुए हमें उसके लक्ष्यमें भी सन्देह होता है। दक्षिणी अफ्रीकाके भारतीयोंकी समस्याको स्वतन्त्र-भारतकी जन-सरकारको अपने हाथमें अवश्य लेना है। राष्ट्रमण्डलमें रह कर यह सुविधा कदाचित् ही मिले। काश्मीरका प्रश्न भी इसी प्रकारका है, आर्थिक दृष्टिसे भी इसमें भारतका हित होता नहीं दीखता। क्योंकि किसी भी देशका बहिष्कार चाहे वह आर्थिक हो या व्यावसायिक, सम्पूर्ण राष्ट्रमण्डलको एक स्वरसे करना होगा। अन्यथा

शक्ति प्राप्त करो

[लेखक—अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री शङ्कराचार्य श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज]

शक्तिहीन प्राणी कुछ भी नहीं कर सकता । न वह अपनी उन्नति कर सकता है और न दूसरोंकी ही । इसलिए यथाशक्ति अधिकाधिक शक्तिसञ्चय करनेका प्रयत्न करना चाहिये ।

जिस प्रकार विद्वान्से ही विद्या और धनवान्से ही धन प्राप्त किया जा सकता है, उसी प्रकार शक्ति भी शक्तिमान् से ही प्राप्त हो सकती है। जितने बड़े विद्वान्से सम्बन्ध रक्खोगे उतनी ही अधिक विद्या प्राप्त कर सकोगे। उसी प्रकार जितने अधिक शक्तिशालीकी शरण लोगे उतनी ही अधिक शक्ति लाभ कर सकोगे।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा ही है; जिसने इस अनन्त सृष्टिकी रचनाकी है और उसका संचालन भी कर रहा है। जब किसीका आश्रय लेना ही है, तो उस निस्सीम अनन्त शक्ति-सम्पन्न परमात्माका ही सहारा लो, जिससे अधिकाधिक शक्ति प्राप्त कर सको। परमात्माकी कृपा प्राप्त करनेका उपाय करो और शक्ति सम्पन्न होकर पहले स्वयं अपना अभ्युदय सम्पादन करो; फिर अपनी शक्तिके बल पर दूसरों के कल्याणकी बात विचारो।

परमपिता परमात्मा परम दयालु हैं। उनकी कृपा प्राप्त करना बहुत कठिन नहीं है। जो उनके कृपापात्र बन चुके हैं उनके अनुभवसे लाभ उठाओ;—उनसे उपासनाका मार्ग समझकर कुछ दिन उपासना करो, तब भगवानकी कृपाका स्वयं अनुभव होने लगेगा। जो भगवान्से अपना सम्बन्ध जोड़ लेते हैं उनमें भगवान्की शक्तियोंका विकास होता है। जिस प्रकार राजा जिसे कृपा पूर्वक अपनी गोद ले लेता है उसे राज्य शक्ति प्राप्त हो जाती है; उसी प्रकार भगवान्के प्रियभक्त प्रकृतिराज्यमें सत्ता प्राप्त कर लेते हैं। प्रकृति उनके अनुकूल बर्ताव करती है। उनकी सर्वत्र विजय होती है। पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश सभी मानों उनके इङ्गित पर ही व्यवहार करते हैं और कालकी त्रिविध गति (भूत, भविष्यद्वर्तमान) पर उनका आधिपत्य सा हो जाता है। यह केवल शुष्क सिद्धान्त पक्ष ही नहीं है, भारतीय अनादिकालसे इसका प्रत्यक्ष अनुभव करते आ रहे हैं।

भक्त प्रह्लादको प्रताड़ित करनेके लिये कितनी योजनायें कार्यान्वित की गई; परन्तु उनके लिये ताड़नाके सभी साधन निष्फल रहे। पर्वत शिखरोंसे उन्हें नीचे गिराया गया, परन्तु पृथ्वीकी कठोरताने उनके लिये कोमलता धारण की, होलिका उन्हें लेकर धधकती हुई चिता पर जा बैठी, परन्तु अग्निसे कभी न जलने वाली होलिका इस बार भस्म हो गई और प्रह्लाद ज्योंके त्यों बाहर निकल आये। अपनी भक्ति के बल पर अचिन्त्य शक्ति प्राप्त कर सकने वाले ऐसे कितने ही भगवद्भक्तोंके उदाहरण भारतीय इतिहास पुराणों में मिलते हैं। आज भी कितने ही ऐसे भगवन्निष्ठावान् विशिष्ट पुरुष देखे जाते हैं, जिनमें दैवीशक्तियोंका चमत्कार प्रत्यक्ष विद्यमान है।

पुण्यभूखण्ड भारतकी सन्तानको भगवदुपासनाके अपने अन्तरङ्ग साधनों और निष्ठा द्वारा प्रकृति साम्राज्य पर प्रभुत्व स्थापित कर सकनेका अवसर प्राप्त है। विश्वास करो और सत्पुरुषोंको प्राप्त कर शक्तिसञ्चयके सनातन उपायोंको कार्यान्वित करो, आज भी दिव्यातिदिव्य अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त हो सकती हैं। जिन उपायोंसे पहले सर्व सामर्थ्य प्राप्त कर समस्त प्रकृति और भूतल पर आधिपत्य स्थापित किया जाता था, वे ही सनातन उपाय और वही सिद्ध सद्गुरु परम्परा आज भी भारतमें उपलब्ध हैं। सावधान होकर क्रियाशील होनेकी आवश्यकता है। शक्तिसञ्चयका दिव्य मार्ग और स्थायी सुख-शान्ति-पथ आज भी सदाकी भांति उज्वल है। केवल उस पथके पथिक बननेकी देरी है।

सङ्गठन ही किस बातका। अमेरिका और इंगलैंण्डकी वर्तमान मनोवृत्ति रूसके साथ अनुकूल नहीं है। अतएव यदि हम रूसके साथ अपना किसी प्रकारका सम्बन्ध स्थापित करना चाहें तो राष्ट्रमण्डलमें तदनुकूल सुविधा प्राप्त हो सकेगी अथवा नहीं, यह विषय भी विवादग्रस्त ही है। एतदर्थ राष्ट्रमण्डलमें सम्मिलित होनेसे पूर्व सरकारको ऐसी बातों पर पूर्ण रूपेण विचार कर लेना चाहिए।

श्रीब्रह्मा जी

[लेखक—श्री प्रो० भगवद्दत्तजी बी. ए. रिसर्च स्कालर]

आर्यग्रन्थोंमें इन्हें स्वयंभू ब्रह्माके नामसे स्मरण किया । ब्रह्मा जी सर्वज्ञानमय थे । सारा भारतीय वाङ्मय इस विषयमें एकमत है । दार्शनिक और वैज्ञानिक सब शास्त्र इस बातको प्रमाणित करते हैं कि ब्रह्माजीकी कृपासे वर्तमान सृष्टिमें ज्ञानका आविर्भाव हुआ । इसका वर्णन आगे किया जाता है—

१. वेदवेत्ता—इस सृष्टिको चारों वेदोंका ज्ञान देने वाले ये ब्रह्मा जी थे । श्वेताश्वतरोपनिषद्में लिखा है—

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।

अर्थात्—ईश्वरने ब्रह्माको आदिमें उत्पन्न किया और उनके लिए सारे वेदोंको दिया ।

२. ब्रह्मवेत्ता—अनेक ब्राह्मणग्रन्थोंके अन्तमें वंशक्रम पढ़े गए हैं । ऐसे ही वंशक्रम कई उपनिषदों के अन्तमें भी मिलते हैं । उन सबके अन्तमें कहा है—'स्वयंभू ब्रह्म ब्रह्मणे नमः । अर्थात्—सबसे पुरातन ऋषिने यह ब्रह्म विद्या स्वयंभू ब्रह्मसे सीखी । विद्वान् पुरुष जानते हैं कि ऐसे प्रकरणोंमें ब्रह्म और ब्रह्मा शब्द समानार्थक हैं ।

ब्रह्मविद्या भगवान् ब्रह्मासे चली, यह बात मुण्डक उपनिषद्के प्रमाणसे भी सिद्ध है—

ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव, विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता ।
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्या प्रतिष्ठां, अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥

अर्थात्—ब्रह्माने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वाको ब्रह्मविद्याका उपदेश दिया । इस प्रसङ्गमें छान्दोग्य उपनिषद्के अन्तमें कही बात भी द्रष्टव्य है—

तद्धै तद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच प्रजापतिर्मनवे मनुः प्रजाभ्यः ।

अर्थात्—ब्रह्माने प्रजापतिको, प्रजापतिने मनुको और मनुके द्वारा यह विद्या प्रजाओंमें फैली

३. आयुर्वेद प्रवक्ता—

(क) चरकसंहिता चिकित्सा स्थान १।४ में आयुर्वेदकी परंपरा इस प्रकार दी है । ब्रह्मा—प्रजापति अश्विद्वय—इन्द्र इत्यादि ।

(ख) चरक सूत्रस्थान १।४।५ में यही परम्परा इस प्रकार है—ब्रह्मा—प्रजापति (दक्ष)—अश्विनौ—शक्र—भरद्वाज ।

(ग) स्वयंभूर्ब्रह्मा प्रजाः सिसृक्षुः;………आयुर्वेदवाग्रेऽसृजत् सर्ववित् । अर्थात्—सर्ववेत्ता ब्रह्माने प्रजाओं को उत्पन्न करनेकी इच्छा होने पर आयुर्वेदको पहले रचा ।

(घ) सुश्रुतसंहितामें लिखा है—अनुत्पाद्यैव प्रजाः श्लोक शतसहस्रमध्याय सहस्रं च कृतवान् स्वयम्भूः ।

अर्थात्—प्रजाओंको उत्पन्न करनेसे पहले एक लाख श्लोक और एक सहस्र अध्यायमें ब्रह्माने आयुर्वेद शास्त्र रचा ।

(ङ) इस बातको अष्टाङ्गसंग्रहके कर्त्ता वाग्भट ने दोहराया है । आयुर्वेदं श्लोकलक्षेण पूर्वं ब्रह्मा ग्नासीत् । ३ । ५० ॥

(च) अपने दूसरे ग्रन्थ अष्टाङ्गहृदयके सूत्रस्थान में वाग्भट पुनः लिखता है—

ब्रह्मा स्मृत्वायुषो वेदं प्रजापतिमजिग्रहत् ।
सो ऽश्विनौ तौ सहस्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकान् मुनीन् ॥
तेऽग्निवेशादिकांस्ते तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे । १,३,४।

अर्थात्—ब्रह्माने प्रजापतिको, उसने अश्वियोंको, उन्होंने इन्द्रको, इन्द्रने आत्रेय भरद्वाज आदिको, उन्होंने अग्निवेश आदिको आयुर्वेद शास्त्र पढ़ाया । अग्निवेश आदिने अपने पृथक् पृथक् तन्त्र रचे ।

इन वंशावलियोंसे विदित होता है कि ब्रह्मा जी इस विद्याके आदि प्रवक्ता थे । उन्होंने एक लाख श्लोकमें इस विद्याका उपदेश किया था । यह उपदेश उन्होंने वेदज्ञानके बल पर किया ।

आर्य इतिहासमें ब्रह्मा कोई कल्पित व्यक्ति नहीं। इसलिए ब्रह्माजीने और जो अनेक शास्त्र बनाए, उनका वर्णन आगे किया जाता है। बहुविध शास्त्रोंके रचयिता, सत्यवक्ता ऋषियोंका लेख परम प्रमाण है।

४. धनुर्वेदका आदि विद्वान् — अस्त्र-विद्या का सर्वप्रथम आचार्य ब्रह्मा था।

(क) महाभारतमें लिखा है—

अर्जुनस्तु महाराज! ब्राह्ममस्त्रमुदैरयत्।
सर्वास्त्रप्रतिघातार्थं विहितं पद्मयोनिना॥

अर्थात्— अर्जुनने ब्राह्मास्त्र प्रकट किया। यह अस्त्र सब अस्त्रोंके नाशार्थ ब्रह्माजीने बनाया था।

(ख) बाल्मीकीय रामायण युद्धकाण्डमें लिखा है--
ब्राह्मेणास्त्रेण संयोज्य ब्रह्मदण्डनिभं शरम् ॥२२।५॥
अर्थात्— ब्राह्मास्त्र संयुक्त किया गया।

५. पदार्थविज्ञानका प्रथमदाता — सृष्टिके आरम्भमें सब पदार्थोंके नाम ब्रह्माने वेदों द्वारा दिए। मनुने स्पष्ट लिखा है —

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ॥१।२१॥

अर्थात् — सृष्टिके आदिमें ब्रह्माने वेद-शब्दोंके द्वारा सब पदार्थोंके नाम रखे।

ये नाम संस्कृत-भाषामें हैं। इन्हींसे सृष्टिकी सब बोलियोंके शब्द बिगड़ कर बने हैं। यहूदी लोगोंमें ब्रह्माको ही 'आदम' कहा गया है। उन के अनुसार आदमने पशु, पक्षियों और पदार्थोंके नाम रखे।

६. धर्मशास्त्रका आदि प्रवक्ता — इस समय जो मानव-धर्मशास्त्र उपलब्ध होता है, उसका प्रथम उपदेष्टा ब्रह्मा था। महाभारत शान्तिपर्वमें धर्मका लक्षण बताते हुए भीष्मजी युधिष्ठरसे कहते हैं—

एष धर्मः कुरुश्रेष्ठ! कथितं परमेष्ठिना।
ब्रह्मणा देवदेवेन अयं चैव सनातनः॥ १०६।१२॥

अर्थात्— यह पुराना धर्म ब्रह्माने कहा था। इसी विषयमें महाभारत शान्तिपर्वमें अन्यत्र लिखा है —

ब्रह्माने एकलाख श्लोकमें धर्म, अर्थ और काम शास्त्रका उपदेश किया। ५८।२६॥ पहले ये तीनों शास्त्र एक साथ थे। पीछे से ये भिन्न २ शास्त्र बने।

राजनीति-शास्त्र अथवा त्रिवर्ग इस मूल शास्त्र का एक अङ्ग था। वह उत्तरकालमें पृथक् किया गया। महाभारत शान्तिपर्वमें लिखा है कि नीति-शास्त्रको सर्वप्रथम ब्रह्माने बनाया, और उसका पहला संक्षेप शिवने किया।

युगानमायुषो ह्रासं विज्ञाय भगवान् शिवः।
संचिक्षेप ततः शास्त्रं महास्त्रं ब्रह्मणा कृतम्॥

अर्थात्— शिवने ब्रह्माके बनाए अर्थशास्त्र अथवा राजनीतिशास्त्रका संक्षेप किया।

इसी प्रकार दण्ड-विधान भी इसी शास्त्रका अङ्ग था, जो ब्रह्माजीने आदि सृष्टिमें बनाया —

(क) त्रिषु वर्णेषु यो दण्डः प्रणीतो ब्रह्मणा पुरा।
—शान्तिपर्व ॥१४।११६॥

(ख) सत्यं बतेदं ब्रह्मणा पूर्वमुक्तं दण्डः प्रजा रक्षति साधुनीतः॥ —शान्तिपर्व– १५।३१॥

अर्थात्— ब्रह्माने पुराने कालमें दण्डका उपदेश किया था।

७. व्याकरण-शास्त्रका प्रवक्ता ब्रह्मा —

ऋक्तन्त्र नामक पुरातन व्याकरण ग्रन्थमें लिखा है — ब्रह्माने बृहस्पतिको व्याकरण पढ़ाया। बृहस्पतिने इन्द्रको, इन्द्रने भारद्वाजको, भाद्वाजने ऋषियोंको, ऋषियोंने ब्राह्मणोंको। वही यह अक्षर समाम्नाय है। प्रथम-प्रपाठक, खण्ड– ४।

जिस प्रकार इन्द्रने आयुर्वेदका उपदेश भारद्वाजको किया था, उसी प्रकार व्याकरणका उपदेश भी इन्द्रने भारद्वाजको किया।

८. लिपि-प्रदाता — विद्याका मूल लिपि है, वह लिपि आदिमें ब्रह्माने दी। इसीलिए भारतकी

श्रीब्रह्मा जी

[लेखक—श्री प्रो० भगवद्दत्तजी बी. ए. रिसर्च स्कालर]

आर्यग्रन्थोंमें इन्हें स्वयंभू ब्रह्माके नामसे स्मरण किया । ब्रह्मा जी सर्वज्ञानमय थे । सारा भारतीय वाङ्मय इस विषयमें एकमत है । दार्शनिक और वैज्ञानिक सब शास्त्र इस बातको प्रमाणित करते हैं कि ब्रह्माजीकी कृपासे वर्तमान सृष्टिमें ज्ञानका आविर्भाव हुआ । इसका वर्णन आगे किया जाता है—

१. वेदवेत्ता—इस सृष्टिको चारों वेदोंका ज्ञान देने वाले ये ब्रह्मा जी थे । श्वेताश्वतरोपनिषद्में लिखा है—

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।

अर्थात्—ईश्वरने ब्रह्माको आदिमें उत्पन्न किया और उनके लिए सारे वेदोंको दिया ।

२. ब्रह्मवेत्ता—अनेक ब्राह्मणग्रन्थोंके अन्तमें वंशक्रम पढ़े गए हैं । ऐसे ही वंशक्रम कई उपनिषदों के अन्तमें भी मिलते हैं । उन सबके अन्तमें कहा है—'स्वयंभू ब्रह्म ब्रह्मणे नमः । अर्थात्—सबसे पुरातन ऋषिने यह ब्रह्म विद्या स्वयंभू ब्रह्मसे सीखी । विद्वान् पुरुष जानते हैं कि ऐसे प्रकरणोंमें ब्रह्म और ब्रह्मा शब्द समानार्थक हैं ।

ब्रह्मविद्या भगवान् ब्रह्मासे चली, यह बात मुण्डक उपनिषद्के प्रमाणसे भी सिद्ध है—

ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव, विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता ।
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्या प्रतिष्ठां, अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥

अर्थात्—ब्रह्माने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वाको ब्रह्मविद्याका उपदेश दिया । इस प्रसङ्गमें छान्दोग्य उपनिषद्के अन्तमें कही बात भी द्रष्टव्य है—

तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच प्रजापतिर्मनवे मनुः प्रजाभ्यः ।

अर्थात्—ब्रह्माने प्रजापतिको, प्रजापतिने मनुको और मनुके द्वारा यह विद्या प्रजाओंमें फैली

३. आयुर्वेद प्रवक्ता—

(क) चरकसंहिता चिकित्सा स्थान १।४ में आयुर्वेदकी परंपरा इस प्रकार दी है । ब्रह्मा–प्रजापति अश्विद्वय–इन्द्र इत्यादि ।

(ख) चरक सूत्रस्थान १।४।५ में यही परम्परा इस प्रकार है—ब्रह्मा–प्रजापति (दक्ष)–अश्विनौ–शक्र–भरद्वाज ।

(ग) स्वयंभूर्ब्रह्मा प्रजाः सिसृक्षुः;..........आयुर्वेदवाग्रेऽसृजत् सर्ववित् । अर्थात्—सर्ववेत्ता ब्रह्माने प्रजाओं को उत्पन्न करनेकी इच्छा होने पर आयुर्वेदको पहले रचा ।

(घ) सुश्रुतसंहितामें लिखा है—अनुत्पाद्यैव प्रजाः श्लोक शतसहस्रमध्याय सहस्रं च कृतवान् स्वयम्भूः ।

अर्थात्—प्रजाओंको उत्पन्न करनेसे पहले एक लाख श्लोक और एक सहस्त्र अध्यायमें ब्रह्माने आयुर्वेद शास्त्र रचा ।

(ङ) इस बातको अष्टाङ्गसंग्रहके कर्त्ता वाग्भट ने दोहराया है । आयुर्वेदं श्लोकलक्षेण पूर्वं ब्रह्मा स्नासीत् । ३ । ५० ॥

(च) अपने दूसरे ग्रन्थ अष्टाङ्गहृदयके सूत्रस्थान में वाग्भट पुनः लिखता है—

ब्रह्मा स्मृत्वायुषो वेदं प्रजापतिमजिग्रहत् ।
सो ऽश्विनौ तौ सहस्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकान् मुनीन् ॥
तेऽग्निवेशादिकांस्ते तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे । १,३,४।

अर्थात्—ब्रह्माने प्रजापतिको, उसने अश्वियोंको, उन्होंने इन्द्रको, इन्द्रने आत्रेय भरद्वाज आदिको, उन्होंने अग्निवेश आदिको आयुर्वेद शास्त्र पढ़ाया । अग्निवेश आदिने अपने पृथक् पृथक् तन्त्र रचे ।

इन वंशावलियोंसे विदित होता है कि ब्रह्मा जी इस विद्याके आदि प्रवक्ता थे । उन्होंने एक लाख श्लोकमें इस विद्याका उपदेश किया था । यह उपदेश उन्होंने वेदज्ञानके बल पर किया ।

आर्य इतिहासमें ब्रह्मा कोई कल्पित व्यक्ति नहीं। इसलिए ब्रह्माजीने और जो अनेक शास्त्र बनाए, उनका वर्णन आगे किया जाता है। बहुविध शास्त्रोंके रचयिता, सत्यवक्ता ऋषियोंका लेख परम प्रमाण है।

४. धनुर्वेदका आदि विद्वान् — अस्त्र-विद्या का सर्वप्रथम आचार्य ब्रह्मा था।

(क) महाभारतमें लिखा है—

अर्जुनस्तु महाराज! ब्राह्ममस्त्रमुदैरयत्।
सर्वास्त्रप्रतिघातार्थं विहितं पद्मयोनिना॥

अर्थात्— अर्जुनने ब्रह्मास्त्र प्रकट किया। यह अस्त्र सब अस्त्रोंके नाशार्थ ब्रह्माजीने बनाया था।

(ख) वाल्मीकीय रामायण युद्धकाण्डमें लिखा है--
ब्राह्मेणास्त्रेण संयोज्य ब्रह्मदण्डनिभं शरम् ॥२२।५॥
अर्थात्— ब्राह्मास्त्र संयुक्त किया गया।

५. पदार्थविज्ञानका प्रथमदाता — सृष्टिके आरम्भमें सब पदार्थोंके नाम ब्रह्माने वेदों द्वारा दिए। मनुने स्पष्ट लिखा है —

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ॥१।२१॥

अर्थात् — सृष्टिके आदिमें ब्रह्माने वेद-शब्दोंके द्वारा सब पदार्थोंके नाम रखे।

ये नाम संस्कृत-भाषामें हैं। इन्हींसे सृष्टिकी सब बोलियोंके शब्द बिगड़ कर बने हैं। यहूदी लोगोंमें ब्रह्माको ही 'आदम' कहा गया है। उन के अनुसार आदमने पशु, पक्षियों और पदार्थोंके नाम रखे।

६. धर्मशास्त्रका आदि प्रवक्ता — इस समय जो मानव-धर्मशास्त्र उपलब्ध होता है, उसका प्रथम उपदेष्टा ब्रह्मा था। महाभारत शान्तिपर्वमें धर्मका लक्षण बताते हुए भीष्मजी युधिष्ठिरसे कहते हैं—

एष धर्मः कुरुश्रेष्ठ! कथितं परमेष्ठिना।
ब्रह्मणा देवदेवेन अयं चैव सनातनः॥ १०६।१२॥

अर्थात्— यह पुराना धर्म ब्रह्माने कहा था। इसी विषयमें महाभारत शान्तिपर्वमें अन्यत्र लिखा है —

ब्रह्माने एकलाख श्लोकमें धर्म, अर्थ और काम शास्त्रका उपदेश किया। ५८।२६॥ पहले ये तीनों शास्त्र एक साथ थे। पीछे से ये भिन्न २ शास्त्र बने।

राजनीति-शास्त्र अथवा त्रिवर्ग इस मूल शास्त्र का एक अङ्ग था। वह उत्तरकालमें पृथक् किया गया। महाभारत शान्तिपर्वमें लिखा है कि नीति-शास्त्रको सर्वप्रथम ब्रह्माने बनाया, और उसका पहला सङ्क्षेप शिवने किया।

युगानमायुषो ह्रासं विज्ञाय भगवान् शिवः।
संचिक्षेप ततः शास्त्रं महार्थं ब्रह्मणा कृतम्॥

अर्थात्— शिवने ब्रह्माके बनाए अर्थशास्त्र अथवा राजनीतिशास्त्रका सङ्क्षेप किया।

इसी प्रकार दण्ड-विधान भी इसी शास्त्रका अङ्ग था, जो ब्रह्माजीने आदि सृष्टिमें बनाया —

(क) त्रिषु वर्णेषु यो दण्डः प्रणीतो ब्रह्मणा पुरा।
—शान्तिपर्व ॥१४।११६॥

(ख) सत्यं चतेदं ब्रह्मणा पूर्वमुक्तं दण्डः प्रजा रक्षति साधुनीतः॥ —शान्तिपर्व— १५।३१॥

अर्थात्— ब्रह्माने पुराने कालमें दण्डका उपदेश किया था।

७. व्याकरण-शास्त्रका प्रवक्ता ब्रह्मा —

ऋक्तन्त्र नामक पुरातन व्याकरण ग्रन्थमें लिखा है — ब्रह्माने बृहस्पतिको व्याकरण पढ़ाया। बृहस्पतिने इन्द्रको, इन्द्रने भारद्वाजको, भारद्वाजने ऋषियोंको, ऋषियोंने ब्राह्मणोंको। वही यह अक्षर समाम्नाय है। प्रथम-प्रपाठक, खण्ड- ४।

जिस प्रकार इन्द्रने आयुर्वेदका उपदेश भारद्वाजको किया था, उसी प्रकार व्याकरणका उपदेश भी इन्द्रने भारद्वाजको किया।

८. लिपि-प्रदाता — विद्याका मूल लिपि है, वह लिपि आदिमें ब्रह्माने दी। इसीलिए भारतकी

मूल लिपिका नाम ब्राह्मी-लिपि है। चीनी यात्री ह्यूनसांग अपने यात्रा विवरणमें लिखता है- "भारत की लिपि ब्रह्माजीके कालसे चली आई है, यद्यपि इसका रूप थोड़ा-थोड़ा बदला है।"

९. ज्योतिष-शास्त्रका प्रवक्ता — नारद अपनी ज्योतिष-संहितामें लिखता है—

तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा ॥१७॥

अर्थात्—जगत्के हितार्थ ब्रह्माने ज्योतिष–शास्त्र पुरा कालमें रचा।

यह ज्योतिष शास्त्र 'पैतामह-सिद्धान्तके' नामसे प्रसिद्ध था। कालान्तरमें उसी लुप्त सिद्धान्तके एक अंशका ब्रह्मगुप्तने जीर्णोद्धार किया। इस विषयमें अभी गंभीर अन्वेषणकी आवश्यकता है।

१०. शिल्प-शास्त्रोंका निर्माता—भोज प्रणीत 'समराङ्गण–सूत्रधार' नामक ग्रन्थके पृ० ४६ पर लिखा है—

पुरा ब्रह्मासृजत् पञ्चविमानान्यसुरद्विषाम् ॥२॥
ये तत्र विहिता भेदाः पूर्वं कमलयोनिना।
सर्वांस्तानभिधास्याम नामसंस्थानम नतः ॥६॥

अर्थात्—शिल्पोंका उपदेश पहले ब्रह्माने देवोंके लिए किया।

देव वायु-विमानोंका प्रयोग अधिक करते थे। उन्होंने इनकी रीतियां ब्रह्माजीसे सीखी थीं।

११. हस्त्यायुर्वेद —पालकाप्यमुनि रचित हस्त्यायुर्वेद अध्याय १ में लिखा है—ब्रह्माके बनाए हस्त्यायुर्वेदके आधार पर महामुनि पालकाप्यने हाथियों की चिकित्साका शास्त्र रचा।

१२. इतिहास, पुराणका प्रवक्ता—इतिहास और पुराण आदिकी विद्याका ज्ञान देने वाला ब्रह्मा था। वर्तमान साम्प्रदायिक पुराणोंमें भी जो ऐतिहासिक भाग है, वह उसी मूल शास्त्रके अनुकूल है। वायुपुराणके अनुसार ब्रह्माने यह ज्ञान वायुको दिया, वायुने उशना अथवा शुक्राचार्यको, शुक्रने बृहस्पति को, बृहस्पतिने सविता या विवस्वान् को, विवस्वान्ने अपने पौत्र यमको, और यमने अपने दादा अर्थात् विवस्वान्के लघु भ्राता इन्द्र को यह ज्ञान दिया। (देखो, हमारा भारतवर्ष का इतिहास, पृ० १६)

१३. वास्तु शास्त्र ---- वास्तु शास्त्रके आदि-निर्माता भी ब्रह्माजी थे।

१४. नाट्यवेद --- भरत आदि मुनियोंने लिखा है कि नाट्यशास्त्र ब्रह्माजीके उपदेशसे संसार में प्रवृत्त हुआ। नाट्य विषयक ब्रह्माजीके मत अनेक नाट्य ग्रन्थोंमें अब भी मिलते हैं।

इनके अतिरिक्त और कई शास्त्रोंके प्रवर्तक भी ब्रह्माजी थे। यह सत्य इतिहासका साक्ष्य है। जो वर्तमान लोग विकास-सिद्धान्तका सर्वत्र आश्रय लेते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि इतिहास उनके विरुद्ध जाता है। उनका कल्पित पक्ष इतिहासके सम्मुख खड़ा नहीं रह सकता। और अब तो योरुप और अमेरिकामें भी अनेक अग्रगण्य विद्वानोंने विकास सिद्धान्तकी निराधारता सिद्ध की है।

ऐसी स्थितिमें इस सत्य इतिहासके आधार पर हमने जो ब्रह्माजीका वर्णन किया है, वह भूमिका-मात्र है। हमारी यह लेख-माला आयुर्वेद-परक होगी। अतः अगले लेखमें यह लिखा जायगा कि ब्रह्माजी ने आयुर्वेदका ज्ञान आगे किसको दिया, और उन्होंने संसारमें क्या चमत्कार किए।

ब्रह्माजीका काल ---- यहां इतना लिखना आवश्यक है कि ब्रह्माजीका काल महाभारत युद्धसे न्यूनसे न्यून ११००० वर्ष पूर्वका है। इससे अधिक भले ही हो, न्यून नहीं है।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

पंचग्रह योगका परिणाम

धूमकेतु दर्शनका संसार पर प्रभाव

[लेखकः—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर 'श्रीस्वाध्याय' के इस स्तम्भमें हमने देश विदेशकी समस्याओं पर जो भी भविष्य सूचित किया वह भगवत्कृपासे ठीक उतरता रहा है। इससे हमारा नहीं अपितु भारतीय ज्योतिर्विज्ञानका महत्व स्थापित हुआ है। स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर सभी लोग प्रसन्न थे कि अब हमारे सभी संकट दूर होंगे और अन्न वस्त्रादि पदार्थ सुलभतासे पर्याप्त मात्रामें मिल सकेंगे। किन्तु उनकी यह आशा निराशामें परिणत होती जा रही है। युद्धकालमें जितनी महर्घता एवं आवश्यक वस्तुओंकी दुर्लभता नहीं थी उतनी अब होती जा रही है। ग्रहयोगोंके आधार पर हम १५ अगस्त १९४७के पत्रों और गतवर्ष 'श्रीस्वाध्याय' के 'हेमन्ताङ्क' में—'अन्न समस्या नहीं सुलझेगी' शीर्षकमें इस बातका उल्लेख स्पष्ट रूपसे कर चुके थे। काश्मीरकी समस्या अधिक गम्भीर बनने और कमीशनसे कोई भी न्यायसंगत निर्णय न होनेकी स्पष्ट सूचना भी गताङ्कोंमें दी जा चुकी थी। ग्रहस्थितिको देखते हुए हमें अभी संसार और भारतमें सुख शान्तिका साम्राज्य स्थापित होता दिखाई नहीं देता। अभी सिंहस्थ शनिके अनिष्ट प्रभावको गुरुने रोक रक्खा है, परन्तु फाल्गुन कृष्ण ३० ता० २७ फरवरीको देवगुरु बृहस्पति शनिके क्षेत्र (अपनी नीच राशि) मकरमें जारहे हैं, ये ३ मास तक दुर्भिक्ष अशान्ति और युद्धको भड़कानेवाले हैं। यथा—

मकरे च गुरुश्चैव दुर्भिक्षं घोरदारुणम्।
राज्ञां परस्परं युद्धं त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥

यहां शनि वक्री है और आगे फाल्गुन कृष्णामावास्या ता० २९ मार्चको मीनराशिमें पांच ग्रह एकत्र हो रहे हैं। अतः फाल्गुनसे ज्येष्ठ तकका समय संसारके लिए संकटका द्योतक है। भारतीय शासनसूत्र-संचालकों को इस अवधिमें विशेष सतर्क रहकर सबका सहयोग प्राप्त करते हुए राष्ट्र शक्तिको बढ़ाना चाहिए।

पंचग्रह योग फल

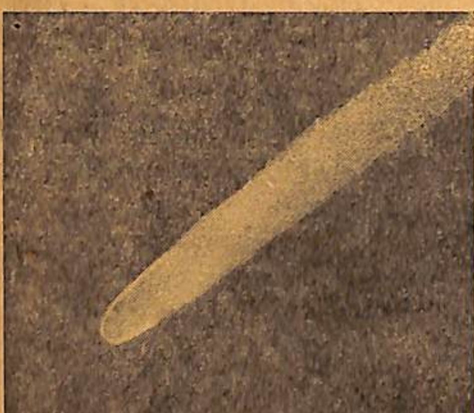
पंचग्रहयुतिको संहिताग्रन्थोंमें पंचग्रह कूट नाम भी दिया है। इसका संसारपर विशेष प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। ग्रहोंमेंसे जब पांच एक स्थान पर होंगे तो उनका बहुमत होगा ही, वे अपने स्वभाव स्थिति और बलाबलके अनुसार संसारकी सामाजिक, राजनैतिक स्थितिमें महत्वपूर्ण परिवर्तन करनेके परिचायक हैं। १५ अगस्त १९४७ की श्रावण कृष्णामावास्याको कर्कराशिमें पंचग्रह योग था, वही योग राशिभेदसे अब पुनः हो रहा है। सं० २००६की वर्षलग्न कुण्डलीसे यह योग छठे भावमें पड़ रहा है, अतः आगे संसारमें रोग दुर्भिक्ष युद्धोत्पातादि द्वारा प्राणिमात्र पीड़ित रहेगा। लिखा भी है—

अमावास्यादि तिथिषु ग्रहयोगो भवेद्यदि।
शशिसूर्यसमायोगे पञ्चग्रहसमन्विते॥
अनिष्टञ्च भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा।
महारोग भयं राष्ट्रं राजयुद्धं भविष्यति॥
नृपवैरीगर्भनाशो हन्ति पञ्चजगत्त्रयम्।
जायते जननाशं च मंत्रिणो मरणं भवेत्॥
वर्णद्वेषश्च कलहं सर्वत्रमुपजायते।
अतिवृष्टिरनावृष्टि परचक्र भयं तथा॥
उत्पातादि भयं सर्व संकरादि जनक्षयः।
भूकम्पादि महोत्पातो नानादुःख समाकुलम्॥
पश्वाश्वादि भयं सर्वं वसिष्ठ वचनं तथा।

इस पंचग्रह योगका अनिष्ट फल इंगलैण्ड, डेन्मार्क, जर्मनी, पोलैण्ड, जापान, चीन, सीरिया, पेलेस्टाइन और

भारतमें काश्मीर, सिन्धुका पूर्वीय भाग, मथुरासे पश्चिमी देश उत्तरदेश, सीमाप्रान्त, राजस्थान, मत्स्य प्रदेश, पंजाब, और दिल्ली प्रदेश पर अधिक होगा। विप्रवर्ग, आर्यजन धार्मिक विचारधाराके लोग सम्पत्तिशाली राजा रईस जमीदार और सब प्रकारके धान्य पदार्थों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। व्यापारमें भारी उथल-पुथल होगी। स्टेशनरी और विदेशी वस्तुओंके भावमें पर्याप्त मन्दी आवेगी। कई वस्तुके भाव ऊंचे जावेंगे, कई नीचे गिर जावेंगे। अतः इस अवधिमें व्यापार बहुत सावधानीसे विशेषज्ञ विद्वानके परामर्शसे करना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्रके प्रधान पुरुषों और संसारके वाणिज्य-व्यवसाय पर इस योगका विस्तृत विचार हमारे सं० २००६ के श्रीविश्वविजयपचाङ्ग, में देखिये।

धूमकेतुका संसार पर प्रभाव



गताङ्कमें हम 'उल्का-दर्शन' का विवेचन कर चुके हैं। इसके थोड़े दिन पश्चात् ही नवम्बरमासमें संसारके अनेक भागोंमें एक धूमकेतु दिखाई दिया। ता० १४ नवम्बरको बम्बई और पूनामें इस धूमकेतुके दर्शन हुए। तदनन्तर नवम्बरके अन्त तक यह धूमकेतु राजस्थान युक्तप्रान्त पञ्जाब और काश्मीरमें सर्वत्र दिखाई देता रहा है। यह धूमकेतु हस्त नक्षत्र पुञ्जके वीटा नामक ताराके आग्नेय कोणकी ओर ४ अंश दूरी पर था। नरतुङ्ग तारककी ओर इसकी पुच्छ थी। इसका चलन दक्षिणकी ओर था। इसकी स्थिति क्रान्तिवृत्तमें (कदम्बवृत्तीय) चित्रा नक्षत्रमें थी और यह हस्त नक्षत्रमें भ्रमण कर लुप्तप्राय हो गया। ध्रुवप्रोतीयवृत्त में हस्त नक्षत्रके अन्तिम विभागमें वक्रगतिसे जाते हुए उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें लुप्त हुआ था। इसका फल आचार्य वराहमिहिरने बृहत्संहितामें बहुत उत्तम रीतिसे लिखा है। यहां हम सक्षेपमें दे रहे हैं—

कूर्मचक्रके दक्षिण देशों और वेध पूर्वकी ओर होने, तथा कदम्बप्रोतीय तुला राशिका कुछ विभाग इस धूमकेतु के भ्रमणमें आ जानेसे चीन जापान बङ्गाल ब्रह्मदेश काश्मीर कुरुक्षेत्र कण्वदेश कोङ्कण बम्बई राजस्थान सिंहल किष्किन्धा मगध और नर्मदा तट पर बुर प्रभाव पड़ेगा। इन प्रदेशोंमें आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात, दुर्भिक्ष रोग, अशान्ति, अग्निकाण्ड, वायुप्रकोप, प्रकृतिवैपरीत्य और धार्मिक सामाजिक राजनैतिक समस्याओंसे प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। अन्नादि पदार्थोंकी महर्घता और शासन सम्बन्धी अव्यवस्थाके कारण प्रत्येक वर्ग दुखित रहेगा। यथा—

यानि यान्युपहिसन्ति नक्षत्राणि महाग्रहः
तेषां तेषां जनपदान् केतवो घ्नन्ति दर्शने॥
चित्रासु कुरुक्षेत्राधिपस्य मरणं समादिशेत्तज्ज्ञः।
काश्मीरक काम्बोजौ नृपती प्राभञ्जने नस्तः॥

इत्यादि॥

देश-विदेशके सभी पत्र-पत्रिकाओंमें इस धूमकेतुकी चर्चा हो चुकी है। कुछ एक पाश्चात्य-शिक्षा-विभूषित पण्डितम्मन्य लोगोंने धूमकेतुके शुभाशुभ परिणामको न मानते हुए प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विज्ञान और ज्योतिर्विदों की हँसी उड़ानेकी अनधिकार चेष्टा की है। इन लोगोंने हमारे शास्त्रको तो छुआ तक नहीं है, अंग्रेज जो कुछ कहें या अंग्रेजीमें जो लिखा हो उसे ये वेद वाक्य प्रमाण मानते हैं, अतः ऐसे लोगोंको सन्तोषजनक उत्तर देनेके लिए अंग्रेजीके सहयोगी 'एस्ट्रालाजीकल-मेग्जीन' में अभी एक लेख प्रकाशित हुआ, उसे पाठकोंके लाभार्थ हम यहां अनूदित कर रहे हैं—

"मानव अपने जन्मकालसे धूमकेतुके उदयको असाधारण महत्व देता रहा है और मानता रहा है कि यह

किसी महत्वपूर्ण घटना घटित होनेकी सूचना देने वाला है। आजका तथाकथित शिक्षित वर्ग इस बातको सुन कर हँसता है कि यह भावी घटनाओंका सूचक है। अनुभवोंकी उपेक्षा करना बुद्धिमानीका सूचक नहीं है। आजका शिक्षित वर्ग अंग्रेजीकी अञ्जलिसे पानी पीता है और उसमें जो कुछ लिखा होता है उसको वेदवाक्य मान कर गाँठ बाँध लेता है। पर अपने पूर्वजों और ऋषियोंकी बातों पर अश्रद्धा रखता है और उसका उपहास करता है। परन्तु जब ज्योतिर्विद् डॉ० हेरल्ड स्पेन्सर जोन्सने कुछ समय पहले यह भविष्यवाणीकी थी कि—"कुछ समय पहले जून १९२१ में पृथ्वी 'पान विननेक धूमकेतु' से कुछ दिनोंके अन्तरसे टकराते टकराते बच गई।" तब हमारे शिक्षित समाजने इस मूर्खतापूर्ण और वाहियात बातको आंख मून्द कर मान लिया। स्व० प्रो० बा० सूर्यनारायणरावने इसका खण्डन करते हुए बताया कि—धूमकेतुके विषयमें ज्योतिषियोंका ज्ञान अल्प है और भयकी कोई बात नहीं है।

प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विज्ञानाचार्य वराहमिहिर, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट, वशिष्ठ, पराशर, और अन्य विद्वानों ने ज्योतिर्विज्ञानके अन्दर अद्भुत और चमत्कारिक सिद्धि प्राप्त की है। उनके लिए ग्रहोंकी स्थिति, पृथ्वीसे उनकी दूरी धूमकेतुका उदय, उल्कापात आदिका महत्व है, क्योंकि वे 'मानव-अस्तित्व' की कल्पना करते हैं और मानवकी भौतिक और आध्यात्मिक प्रगतिको प्रकट करते हैं। यह बात मूर्खता पूर्ण क्यों मानी जाय कि तारे (ग्रह) मानवके मङ्गल और लाभके सूचक हैं। यदि विश्वकी योजना मनुष्य के लिए है तब यह मानना अकल्पनीय या अयुक्तियुक्त नहीं है कि आकाशीय ग्रह नक्षत्रोंकी स्थितिके आधार पर भावीमें घटित होने वाली घटनाओंको भविष्यवाणी की जा सकती है।

ज्योतिषके अनुसार धूमकेतुका निर्माण इस प्रकार होता है—बीचका भाग ठोस अग्निपिण्ड होता है जो भास्वर, दीप्त, चमकता हुआ और प्रवाहमय होता है। (२) वह नप्त दीप्त गैसोंका एक विशाल पिण्ड होता है जिसका शिर देदीप्यमान होता है। (३) पूँछमें इसके ठोस चीजें होती हैं, जो सूर्य रश्मियोंको प्रतिक्षिप्त करती है और मध्यभागके प्रभावसे ले जाई जाती है। (४) पूंछ भी बहुत लम्बी होती है पर विस्तारके साथ गैसका परिमाण घटता जाता है। जब धूमकेतु—एक विशाल रसायनिक पदार्थ—उदय होता है और पूंछसे कुछ दिनों या महीनों चमकता रहता है, तब यह कल्पना करना अयुक्तियुक्त नहीं है कि कुछ समयके अन्दर वहाँ यह कुछ परिवर्तन लायगा। यह साधारण गणना-जोड़ और घटाने-के प्रश्न हैं। यह सत्य है कि पानीमें जिस प्रकार मछली बिखरी रहती हैं उसी प्रकार आकाशमें धूमकेतु बिखरे पड़े हैं। यह भी सत्य है कि लम्बी दूरबीनसे धूमकेतुको प्रकट होने से महीनों पहले देखा जा सकता है, पर उसका प्रभाव उसी समय अनुभवमें आता है जब वह इन चर्म-चक्षुओंसे दृष्टिगोचर होता है।

'जनरल आफ दी प्लेग ईयर' में डेनियल डेफोने लिखा है कि सन् १६६५ के प्लेगके सालके अन्दर पहलेके कुछ मासोंमें कितना भय और आतङ्क छा गया था, क्योंकि उससे कुछ सप्ताह पहले चमकता धूमकेतु दिखाई दिया था। वह दोहरे मध्यम रंगका था, उसकी चाल बहुत भारी गम्भीर और धीमी थी। उसके बारे में कहा गया—भारी परिणाम धीमा पर कठोर भयानक और भयजनक पहले से ही प्रारम्भ हो गये हैं। सन् १६६६ में भयंकर अग्नि काण्ड होने से कुछ समय पहले एक दूसरा धूमकेतु प्रकट हुआ जो चमकीला और ज्वालामय था। जैसा कि अन्योंने कहा है। ज्वालापूर्ण और उसकी गति तेज और भयंकर थी। और उसका परिणाम आकास्मिक, शीघ्र, तेज, और आग्नेय होनेवाला है। १८६१ में धूमकेतु दिखाई देने पर लन्दनमें भयङ्कर आग लगी और सितम्बरमें संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामें गृहयुद्धकी आग भड़क उठी। सन् १४५६ में हलिधूमकेतुके उदयने समस्त यूरोपमें भय उत्पन्न कर दिया था और उसके बाद अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। मेकलेनवर्गसे डेन्मार्क तक बाल्टिक समुद्र जम गया, डेन्यूब नदी दो मासके लिए जम गई, नेपल्समें भूकम्प आया और इसके बाद भारी वर्षा होनेसे बाढ़ आई जिससे चालीस हजार जनोंकी जान चली गई। हलिधूमकेतु फिर १५३१ में दिखाई दिया तब दागवाला ज्वर सारे यूरोपमें हुआ और उसके बाद प्लेग फैली, एटना

ज्वाला मुखी फट पड़ा। भारतमें उस समय मुगल अपने अस्तित्वके लिए लड़ रहे थे। इसके बाद १६०६ में हलि-धूमकेतु प्रकट हुआ। इङ्गलैण्डमें उस वर्ष 'जनपाऊडर' षड्यन्त्र रचा गया। अमेरिकाके तट पर भयंकर तूफान आए। १६८२ और १७५८ में पुनः हलिधूमकेतुके दर्शन हुए। और जब कि समस्त यूरोपमें बिमारियां फैलीं और महामारी आई। १९१० में वही धूमकेतु तारेके समान प्रकट हुआ। इसके बारह दिनके अन्दर एडवर्ड सप्तम मर गया। पुर्तगालमें विद्रोह मच गया। वही धूमकेतु १९८५ में पुनः दिखाई देगा और तब फिर इसी प्रकारका परिणाम होगा।

ऐतिहासिक सुकरातका कहना है कि जब गेनोंने कान्स्टेण्टीनोपलको घेरा तब नगर पर इतना महान् भय मण्डरा रहा था कि इसका पूर्वाभास एक विशाल चमकते धूमकेतुने,—जो आकाशसे पृथ्वी तक पहुंचा था, जिसके समान मनुष्यने उससे पहले कभी देखा नहीं था—बता दिया। सेक्सपीयरने जनताके अन्दर पाए जानेवाले इस विश्वासको निम्न पंक्तियोंमें प्रकट किया है—'इसके प्रकट होनेपर किसी महान् व्यक्तिकी मृत्यु होती है।'

When beggars die there are no comets seen, The heavens themselves blaze forth the death of princes.

टेनिसन्ने अपने नाटक हेरल्डमें भी इस विश्वासको प्रकट किया है कि धूमकेतुके उदय होनेपर युद्ध छिड़ता है।

एल्डविद्—'इसका तुम क्या अर्थ समझते हो?'

गैमल—'मेरी प्यारी! युद्ध।'

बृहत्संहितामें इन आकास्मिक आगन्तुकोंको केतु नामसे कहा गया है। इसके अन्दर धूमकेतु, उल्कापात और तारोंके टूटने तथा इसके समान दीप्त भास्वरपिण्डोंका समावेश किया गया है। उसके अनुसार केतु तीन प्रकारके हैं—दिव्य, वायवीय (इथीरियल) और पार्थिव। इसका प्रभाव इसके उदय होनेके तीन सप्ताहके बाद प्रकट होने लगता है। साधारणतः यदि धूमकेतु छोटा, स्पष्ट, चमकीला या सीधा और प्रकट होनेके बाद ही दृश्यमान हो और कभी-कभी बादमें दिखाई पड़े तो पृथिवी पर स्वास्थ्य और प्रसन्नता विराजेगी। यदि इससे भिन्न रूप हो, अन्यथा हों तो मानव-समाज सुखी न होगा।

नवम्बर ४८ में प्रकट धूमकेतुका परिणाम कन्या (तुर्की, ग्रीस, स्विटजरलैण्ड और भारत) और तुला (बर्मा, चीन, उत्तरीयमिश्र और जापान) राशिसे अधिकृत देशों पर बुरा होगा। 'ज़ाडकिल' के अनुसार—व्यापारी नुकसान उठावेंगे, कष्ट होगा, दुःख-शोक होगा, शस्त्रोंका शोर होगा, राजपथों पर डाके पड़ेंगे, कठोर शीत पड़ेगा, किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या शासकका देहान्त होगा, षड्यन्त्र, विश्वासघात होगा, भयङ्कर आंधियां और भूकम्प आवेंगे।

राजा षष्ठ जार्जकी लग्नराशि क्योंकि तुला है और धूमकेतुका तुलासे सम्पर्क है, अतः उनको अपने स्वास्थ्यकी सुरक्षाकी और विशेषरूपसे ध्यान देना चाहिए। धूमकेतुके उदय होनेपर इतिहास बताता है कि महामारी और सांक्रमिक बीमारियाँ फैली हैं, युद्ध छिड़े हैं, राज्योंका पतन हुआ है, भूकम्प आये हैं। इसलिये हम कह सकते हैं कि यह दैवीय नियम है कि जब धूमकेतु प्रकट होता है, कोई असाधारण घटना होती है। इसीसे इस विश्वासका सम्बन्ध है कि धूमकेतु घटनाओंका जनक है। काय कारणके ठीक-ठीक नियमोंको हम भले ही न जानें, पर हम अपने अनुभवके सहारे इसका परिणाम बता सकते हैं।"

—०—

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः॥

यह लघुसे लघु और महान् से महान् आत्मा जीवकी हृदय रूप गुफामें स्थित है। निष्काम मनुष्य अपनी इन्द्रियोंके प्रसादसे आत्माकी उस महानताको देखता है और शोक रहित हो जाता है।

उपनयन-रहस्य

[ले० श्री पं० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्यानिधि, विद्याभूषण]

संस्कार सोलह प्रसिद्ध हैं; उनमें भी उपनयन और विवाह ये दो संस्कार अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। आज उपनयन पर शास्त्रीय विचार उपस्थित किया जाता है। यद्यपि संस्कार सभी हैं, पर 'संस्कार' यह नाम मुख्यतया उपनयनका ही प्रसिद्ध है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य पुरुषोंकी वास्तविक संस्कृति (पवित्रता) इस संस्कार से ही होती है। 'उप-समीपे नयनम्' यह इसका व्युत्पत्त्यर्थक मानने पर यत्र-तत्र अतिव्याप्ति हो सकती है। अतः यह (उपनयन) शब्द 'विवाह' 'श्राद्ध' आदि शब्दों की भांति पारिभाषिक ही है, केवल यौगिक नहीं।

परिभाषाके अनुसार 'आचार्यके समीप वैध नयन' उपनयन हुआ करता है। आचार्यके साथ ही साथ उपनेय वटुको अग्नि तथा गायत्रीके भी समीप लाया जाता है। आचार्यके समीप लाने पर ब्रह्मचारीको आचार्यकी सेवा करनी पड़ती है। उससे उसे मानसिक शक्ति मिलती है। फिर उसे अग्निकी सेवा करनी पड़ती है। इससे उसे शारीरिक शक्ति मिलती है, फिर उसे गायत्रीकी उपासना करनी पड़ती है, जिसके द्वारा वह बुद्धिपवित्रतारूप आत्मिक बल प्राप्त करता है।

उपनयनसे पूर्व ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य 'एकज' होते हैं, उपनयनसे वे 'द्विज' हो जाते हैं, अर्थात् उनका एक जन्म माताके गर्भसे होता है, दूसरा आचार्यके गर्भसे। यही दूसरा जन्म महत्त्वपूर्ण होता है। तभी श्रीमनुजीने कहा है—

'आचार्यस्त्वस्य यां जातिं विधिवद् वेदपारगः।
उत्पादयति सावित्र्या सा सत्या, साऽजराऽमरा ॥'
(२ । १४८)

अर्थात्–आचार्य उपनयनके समय गायत्रीमन्त्रके उपदेशसे जिस जन्मका सम्पादन करता है, वह दृढ़ होता है।

गायत्री प्रदानसे पूर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एकज थे। फिर 'द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति' इस न्यायसे आचार्य उन्हीं तीन एकजोंको तीन दिन अपने गर्भमें रखता है। तीन दिनके अनन्तर फिर उन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यका द्वितीयवार जन्म होता है। पहले वे एकज ब्राह्मणादि थे, अब द्विज ब्राह्मणादि हो गये। 'द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति' इस न्यायसे दृढ़ हो गये। इसीलिए वेदमें भी कहा है—

'आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति, तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः' ॥ (अथर्व० शौ० सं० ११ । ५ । ३)

तब आचार्य उपनयनसूत्र-यज्ञसूत्र वा ब्रह्मसूत्रको विधिपूर्वक ब्रह्मचारीके गलेमें पहिनाता है। यज्ञोपवीतका लक्षण यह है—

'सूत्रं नवतन्त्वात्मकं त्रिवृतं ब्रह्मग्रन्थियुक्तं सर्वदा धार्यम्। तत्र विशेषः-शुचौ देशे प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा स्वाध्यायदिवसे पूर्वाह्णे सूत्रं निर्माय सहितदाक्षिणहस्तांगुलिचतुष्टयमध्यपर्वदेशे षण्णवतिसंख्यया आवेष्ट्य पुनस्त्रिगुणीकृत्य 'आपो हि ष्ठा'इत्यादिभिरब्लिङ्गैर्मन्त्रैः प्रक्षाल्य, त्रिगुणीकृत तत्सूत्रं वामकरतले संस्थाप्य दक्षिणकरतलेन ऊर्ध्वं नयेद्। एतद् ऊर्ध्ववृत्तं भवति। पुनस्तत् त्रिगुणीकृत्य दक्षिणकरतलेन अधो नयेद्–इति अधोवृत्तं भवति। ततः प्रवरानुसारेण ग्रन्थित्रययुतं पञ्चग्रन्थियुतं वा कुर्यात्'—

('गोभिलीयगृह्यकर्मप्रकाशिका' पृ० ४१)।

इस प्रकार 'पारस्करगृह्यसूत्र' के हरिहरभाष्यमें तथा 'कात्यायनस्मृति' के आरम्भमें भी यज्ञोपवीत-सूत्रकी निर्माणविधि लिखी गई है। इसकी स्पष्टता आगे इसी लेखमें मिलेगी।

यज्ञोपवीतके विषयमें पहले यह जानना चाहिए कि—यज्ञोपवीतका सम्बन्ध यज्ञसे है, यज्ञका सम्बन्ध वेदसे है। जैसे कि 'न्यायदर्शन' में कहा है—'यज्ञो मन्त्रब्राह्मणस्य विषयः' (४ । १ । ६२)। वेदका सम्बन्ध वेदाधि-

कारियोंसे है, जिन्हें ब्रह्मसूत्र पहिनना पड़ता है। बिना यज्ञोपवीत पहने द्विजातिवंशोत्पन्न भी वेदाध्ययनाधिकारी नहीं हो सकता; फिर यज्ञोपवीताधिकारसे विरहित पुरुष भला वेदाध्ययनमें कैसे अधिकृत हो सकते हैं?

यज्ञोपवीत किस प्रकार पुरुष पर वेदका भार रखता है, यज्ञोपवीतियोंको कितना वेद आवश्यक है, यज्ञोपवीत त्रैवर्णिक पुरुषोंका क्यों होता है, इत्यादि बातोंका उत्तर यज्ञोपवीतसूत्र स्वयं ही देता है। उसकी निर्माणविधि कही जा चुकी है-अब उसका रहस्य जानना चाहिए। यह यज्ञोपवीत हाथकी चार अंगुलियों (चव्वा) पर छियानवे वार लपेटा जाता है। इसमें कई लोग कारण बताते हैं कि-चारों वेदोंमें गायत्री २४ अक्षरकी है, इसलिए ब्रह्मसूत्र भी २४×४=९६ वार लपेटा जाता है। अथवा तिथि (१५), वार (७), नक्षत्र (२७), तत्त्व (२५), वेद (४), गुण (३), काल (३), मास (१२), इनकी संयुक्त संख्या ९६ यज्ञोपवीत में भी रखी जाती है।

वस्तुतः बात यह है कि—११३१ शाखात्मक वेदमें कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड, ज्ञानकाण्ड तीन भाग होते हैं। इनके सब मन्त्र एक लाख हैं। जैसे कि 'वायु-पुराण' में कहा है—

आद्यो वेदश्चतुष्पादः शतसाहस्रसंमितः। (६०।७)

विष्णु पुराणमें भी इसी प्रकार मिलता है। 'चरण व्यूह' में भी कहा है—लक्षं तु वेदाश्चत्वारो लक्षं भारत-मेव च, (५।१)। इनमें कर्मकाण्डके मन्त्र ८० सहस्र हैं। उपासनाकाण्डके १६ हजार मन्त्र हैं। शेष ४ हजार मन्त्र ज्ञानकाण्डके हैं। यही बात 'निरुक्त' कार भी सूचित करते हैं—तास्त्रिविधा ऋचः, परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृताः आध्यात्मिक्यश्च। परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृताश्च मन्त्रा भूयिष्ठाः, अल्पश आध्यात्मिक्यः। (७।३।१) 'परोक्ष' शब्दसे 'कर्मकाण्ड' इष्ट है क्योंकि कर्मकाण्ड परोक्ष कर्मफलका प्रतिपादक होता है। प्रत्यक्ष शब्दसे उपासनाकाण्ड इष्ट है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष फल का निदर्शक है। आध्यात्मिक शब्दसे ज्ञानकाण्ड इष्ट है, क्योंकि आत्मसाक्षात्कार ही ज्ञान होता है। ज्ञानकाण्ड के मन्त्रोंकी अल्पतासे ज्ञानकाण्डको कर्मकाण्डसे अवर (हीन) न समझ लेना चाहिए। क्योंकि वरता वा अवरता संख्या पर निर्भर नहीं होती। एक ही सूर्य लाखों तारोंसे 'वर' ही तो होता है। ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्डकी अपेक्षा होना भी अल्प ही चाहिए। युद्धमें सेनापति 'ज्ञान' होता है, सेना 'कर्मकाण्ड' होती है। जितनी संख्या सैनिकोंकी होती है, उतनी सेनापतियोंकी नहीं। यदि सभी सैनिक सेनापति बन जायं, तो विजय कभी होगी ही नहीं। लोकमें भी ज्ञानी बहुत हो जायं, तो सबकी भिन्न-भिन्न बुद्धि हो जानेसे वे जनताको कर्ममें प्रवृत्त कर ही न सकें। इसी लिए लोकमें जैसे ज्ञानी वा नेता थोड़े होते हैं, परन्तु उनकी आज्ञामें चलने वाले कर्मिष्ठ बहुत अपेक्षित होते हैं; जो उनकी आज्ञा बिना विचारे ही मान लें। वैसे ही वेदमें भी ज्ञानकाण्ड थोड़ा होता है। कर्मकाण्ड की संख्या उसकी अपेक्षा बहुत अधिक होती है!

इधर कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्डकी अपेक्षा अवर होता हुआ भी सर्वथा अवर नहीं हो जाता। यदि कर्मकाण्ड न हो, तो ज्ञान निराधार हो जाय। नेता व्यर्थ हो जाता है यदि कर्मिष्ठ जनता न हो, यद्यपि जनता नेताकी अपेक्षा अवर होती है। फलतः तीनों काण्डोंके मन्त्र एक लाख हैं।

यह यज्ञोपवीत चव्वे पर ९६ वार लपेटा जाता है इसीलिए ११३१ शाखात्मक चार वेदोंमें स्थित कर्मकाण्ड एवम् उपासनाकाण्डके ८०+१६=९६ हजार मन्त्रोंका अधिकारपट्ट 'चपरास' की भांति द्विजको अर्पण किया जाता है। शास्त्रने केवल कर्मकाण्ड उपासनाकाण्डके अधिकार तक ही यज्ञोपवीत नियत किया है। वे ९६ हजार मन्त्र चारों वेदोंके हैं, इसीलिए ही चार अंगुलियों (चव्वे) पर उतनी संख्यासे सूत्र लपेटा जाता है। फिर जो इसे तिगुना करके ऊपर बाईं ओर लपेटा जाता है; इससे इसमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीन वर्णों का अधिकार बताया जा रहा है। फिर इस तीन डोरी वाले सूत्रको फिर तिगुना करके जो दाहिनेसे नीचे लपेटा जाता है, यह ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, इन तीन आश्रमोंको इसमें अधिकृत बताया जा रहा है। पूर्व तथा यहां पर यह भी अभिप्राय व्यक्त हो रहा है कि-श्रौतयज्ञों

में ब्रह्मा, विष्णु, महेशरूप गार्हपत्य, दाक्षिणात्य, एवम् आहवनीय अग्निका उपयोग होता है, तथा धर्म, अर्थ, काम--यह त्रिवर्ग उसका विषय है।

फिर इस नवसूत्र डोरेको इस प्रकार तिगुना किया जाता है कि—जिससे तीन सूत्रोंकी योजना सिरमें एक हो जावे। इस समयकी त्रिगुणता ऋषिऋण, देवऋण, पितृऋणको सूचित करती हैं। इसी लिए देवतर्पण, पितृतर्पण, एवम् ऋषितर्पण, में यज्ञोपवीतको क्रमसे सव्य, अपसव्य तथा निवीती करना पड़ता है। मैं इस कर्मको अवश्य करूंगा, अवश्य करूंगा, करूंगा, इस प्रकार तीन वार प्रतिज्ञाको भी सूचित करता है।

यदि इस यज्ञोपवीत-सूत्रको सनातनधर्मका संक्षिप्त चित्र कहदें; तो अत्युक्ति न होगी। यह बताया ही जा चुका है। इससे सनातनधर्मका परमार्थवाद अद्वैतवाद भी सिद्ध हो रहा है। सनातनधर्मका सिद्धान्त है कि-ब्रह्मसे सम्पूर्ण जगत् प्रकट होता है, उसीके आश्रयसे अवस्थित रहता है, अन्तमें भी फिर उसीमें लीन हो जाता है। एक ही ब्रह्मसे त्रिगुणात्मक जगत्का प्रपञ्च होता है। अन्तमें एक ब्रह्म ही होजाता है। इस सिद्धान्तके अनुसार एक ब्रह्मका सूत्र ही सारे संसारमें प्रसृत है। अन्तमें सारे संसारका ब्रह्ममें लय होजाता है। अब ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) की रचना पर भी ध्यान दीजिए। एक ही सूत्रसे उसकी रचना प्रारम्भ होती है। एक ही सूत्र से तीन सूत्र बन जाते हैं। अन्तमें एक ही ब्रह्मग्रन्थिमें उसकी समाप्ति होजाती है। सनातनधर्मके सिद्धान्तमें एक ही ब्रह्मसे सत्त्व, रज, तम, यह त्रिगुणात्मक सृष्टि होती है। अन्तमें एक ब्रह्म ही अवशिष्ट रह जाता है। इस प्रकार यज्ञोपवीत भी एक सूत्रसे त्रिगुण होकर अन्तमें ब्रह्मग्रन्थि में ही समाप्त होजाता है। जगत्की उत्पत्तिसे पूर्व भी एक ही अद्वितीय ब्रह्म होता है, प्रलयमें भी वही। संसार दशामें अथवा व्यवहार दशामें त्रिगुणात्मक प्रकृतिका चक्र है। यही दशा ब्रह्मसूत्र (उपवीत) की भी है। आरम्भमें भी एक सूत्र अन्तमें भी सब मिल कर एक ब्रह्मग्रन्थिमें समाप्त होता है। मध्यमें ही केवल त्रिगुणचक्र होता है।

ऊपरकी तीन वा पांच ग्रन्थियें प्रवरसंख्याको सूचित करती हैं। शूद्रोंका वेदमें अधिकार न होने से तथा गोत्र प्रवरादि न होने से तन्मूलक उपनयनभी उनका नहीं होता। स्त्रियोंके भी स्वतन्त्र गोत्र-प्रवर नहीं होते, इस कारण उन का भी पृथक् यज्ञोपवीत नहीं होता। इस यज्ञोपवीतके कर्म उपासना-काण्डार्थ होनेसे ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, आश्रम तक उसका अधिकार होता है। फिर—

'ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्'
(मनु० ६। ३५)

'अधीत्य विधिवद् वेदान् पुत्राँश्चोत्पाद्य धर्मतः
इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैर्मनो मोक्षे निवेशयेत्।
(मनु० ६। ३६)

'ब्राह्मणः प्रव्रजेद् गृहात्' (मनु० ६। ३८)

मोक्ष प्राप्त्यर्थ संन्यासाश्रममें केवल ज्ञानकाण्डका उपयोग करना पड़ता है। इस कारण यह यज्ञोपवीत छोड़ना पड़ता है, क्योंकि —यह ९६ सहस्र कर्म-उपासना-काण्ड के मन्त्रोंका ही अधिकार देता है। इस पूर्तिके होजाने पर मोक्षके लिए अवशिष्ट ज्ञानकाण्डके चार सहस्र मन्त्रों के मननका क्रम प्राप्त होजाने से इस (यज्ञोपवीत सूत्र) को छोड़ना पड़ता है, अभीष्ट स्थानकी प्राप्ति होजाने पर यात्री अपना 'टिकट' देकर 'स्टेशन' पार होजाता है। इस प्रकार संन्यासाश्रम से पूर्व द्विजको इसे छोड़ना न चाहिए—यह बात भी सिद्ध हो ही जाती है।

इस संस्कारसे हम द्विज होते हैं, यह कहा ही जा चुका है। यही इसका महत्त्व होता है। जैसे कि स्मृतियों में कहा है—

'मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयं मौञ्जि-बन्धने'
(मनु० २। १६६)

'जन्मना जायते विप्रः संस्काराद् द्विज उच्यते'
(अत्रि० १३८)

'द्वे जन्मनी द्विजातीनां मातुः स्यात् प्रथमं तयोः।
द्वितीयं छन्दसां मातुर्ग्रहणाद् विधिवद् गुरोः।
एवं द्विजातिमापन्नो विमुक्तो वाऽन्यदोषतः।
श्रुति-स्मृति-पुराणानां भवेद् अध्ययन-क्षमः।
(व्यास स्मृति १। २२-२३)

इसी प्रकार 'वसिष्ठस्मृति' (२ । २-३) तथा 'शङ्ख-स्मृति' (१ । ६) में भी कहा है। इस संस्कारसे पहले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एकजत्व धर्मसे शूद्रसदृश होते हैं। इसी कारण मनुजीने कहा है—

'नाभिव्याहारयेद् ब्रह्म स्वधानिनयनाद् ऋते।
शूद्रेण हि समस्तावद् यावद् वेदे न जायते।
(२ । १७२)

इसी प्रकार आर्यसमाजी भी एक वचन कहा करते हैं—
'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।'

यद्यपि यह वचन किसी स्मृतिके मूलमें नहीं है; तथापि यहां के 'शूद्र' शब्दका 'शूद्रसदृश' अर्थमें पर्यवसान होता है, यहां पर उपमावाचक शब्द लुप्त है। नहीं तो यदि सभी जन्मसे शूद्र हो जाएं; तब उपनयनसे सभी केवल ब्राह्मण होते; क्योंकि—वहाँ कर्मभेद नहीं होता। परन्तु ऐसा नहीं है; किन्तु जन्मसे ही वह-वह वर्ण माना जाता है। यदि यह बात स्वीकृत न हो; तो—

'अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेत गर्भाष्टमं वा,
एकादशवर्षं राजन्यं, द्वादश-वर्षं वैश्यम्।

(पारस्कर गृ० २ । २ । १-२-३, आपस्तम्ब गृ० ४ । १० १-२-३, द्राह्यायण गृ० ३ । ४ । १-३-५, जैमिनि गृ० १।१२ गोभिलगृ० २ । १० । १-२-३, वसिष्ठ-ध० ११ । ४४, मनु० २ । ३६-३७, व्यास स्मृ० १। १६, शङ्खस्मृ० २ अध्याय, याज्ञवल्क्य स्मृ० आचाराध्याय० १४) इत्यादि वचनों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शब्द असम्भव होते। इस कारण 'जन्मना जायते शूद्रः' यहां पर 'ताद्धर्म्यात् ताच्छ-ब्द्यम्' इस न्यायसे शूद्रसधर्मता ही अर्थ है, वास्तविक शूद्र हो जाना नहीं। अन्यथा जन्म-शूद्रको भी उपनयनाधि-कार तथा द्विजत्वकी प्राप्ति होती। परन्तु उसको जीवन तक एकज माना गया है, द्विज नहीं। इससे उसको यज्ञोपवीत का भी अधिकार नहीं। यज्ञोपवीतकी रचना भी यही सूचित करती है। उसके लिए कहा है—

'स्तनाद् ऊर्ध्वमधो नाभेन कर्तव्यं कथञ्चन।
स्तनाद् ऊर्ध्वं श्रियं हन्ति नाभ्यस्तात् तपःक्षयः
(गोभिलगृह्यसंग्रह २ । ५४)
'पृष्ठवंशे च नाभ्यां च धृतं यद् विन्दते कटिम्।
तद् धार्यमुपवीतं स्याद् नाऽतो लम्बं नचोच्छ्रितम्'

इस प्रकार यज्ञोपवीतको अधिक से अधिक कमर तक धारण करना कहा है। कमर तक का भाग वैश्य की सीमा है जैसा कि—'मध्यं तदस्य यद् वैश्यः' (अथर्व० शौ० सं० १६ । ६ । ६)। शरीरमें मुखकी सीमा ब्राह्मणकी, बाहुकी सीमा क्षत्रियकी, कमरकी सीमा वैश्यकी है, उससे निचली सीमा शूद्रकी है। वहाँ जब यज्ञोपवीत धारणका निषेध है, तब शूद्रका यज्ञोपवीत भी शास्त्रीय नहीं। इधर यज्ञोपवीतकी तीन तन्तुएँ भी तीन वर्णमें सीमित हैं। जो लोग सब वर्णों को यज्ञोपवीत पहिनानेमें उत्सुक हैं, उन्हें उचित है कि—वे चार तन्तुओं वाला यज्ञोपवीत बनावें; तथा पैरों तक लम्बा बनावें। तथा आर्यसमाजियोंसे उद्धृत उस पद्यमें 'शूद्र' शब्दका अर्थ 'शूद्रसदृश' ही है, इसमें मनु आदिकी साक्षी दिखलाई जा चुकी है।

शूद्रके एकजत्वमें प्रमाण यह है—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः।
चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रः' (मनु० १० । ४)।

द्विजत्वके अधिकार न होने से ही उसका उपनयनमें अधिकार नहीं, उपनयनमें अधिकार न होने से उसका वेद में भी अधिकार नहीं। 'वसिष्ठस्मृति' के चतुर्थाध्यायमें कहा है—

'गायत्र्या छन्दसा ब्राह्मणमसृजत्, त्रिष्टुभा राजन्यम्, जगत्या वैश्यम्, न केनचित् छन्दसा शूद्रम् — इति असंस्कार्यो विज्ञायते'
(४ । ३)

यहाँ पर वर्णोंकी उत्पत्ति छन्दोंसे कही है। गायत्रीसे ब्राह्मणकी उत्पत्ति कही है गायत्री छन्द आठ अक्षरोंका होता है। अतः उत्पत्तिरूप यज्ञोपवीत और गायत्री-ग्रहण ब्राह्मणका आठवें वर्षमें कहा है। इसी कारण सन्ध्यामें गायत्री विसर्जनके अवसर पर—

'उत्तमे शिखरे देवि! .... ब्राह्मणेभ्योऽभ्य-नुज्ञाता' (तैत्तिरीयारण्यक १० । ३०)

गायत्रीकी ब्राह्मणोंके लिए ही अभ्यनुज्ञा स्वीकृत की गई है। इसी प्रकार—

'स्तुता मया वरदा वेदमाता'
—(अथर्व० १६।७१।१)

इस मन्त्रमें भी वेदमाता–गायत्रीको द्विजों (ब्राह्मणों) को पवित्र करने वाला कहा है—

त्रिष्टुप्से क्षत्रियकी उत्पत्ति कही है। त्रिष्टुप् छन्दके के ११ अक्षर होते हैं। इस लिए उत्पत्त्यात्मक यज्ञोपवीत तथा त्रिष्टुप्-मन्त्रग्रहण भी क्षत्रियका ११वें वर्षमें कहा है। जगती छन्दसे वैश्यकी उत्पत्ति कही है। जगतीके १२ अक्षर होते हैं। तब वैश्यका उत्पत्ति रूप जगती छन्द-ग्रहण भी १२वें वर्षमें नियत है। इसी लिए ही 'पारस्करगृह्य सूत्र' में

'सद्यस्त्वेव गायत्रीं ब्राह्मणायानुब्रूयात्,
त्रिष्टुभं राजन्यस्य, जगतीं वैश्यस्य'
—(२।३।७–८–६)

इस प्रकार तीन वर्णोंको गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती इन भिन्न-भिन्न छन्दोंके मन्त्रोंका अधिकार कहा है। यही बात 'मानवगृह्यसूत्र' (१।२।३) में, ऐतरेय ब्राह्मण (१।५।२८) तथा अन्य गृह्यसूत्रोंमें कही गई है। परन्तु शूद्रकी उत्पत्ति किसी छन्दसे नहीं कही गई, न ही कोई छन्दोमन्त्र उसके लिए कहा गया है, इस कारण उसका यज्ञोपवीत भी किसी वर्षमें नहीं होता। जब शूद्रको ही उपनयनमें अधिकार नहीं; तब अवर्ण तथा अन्त्यजादि सङ्कर जातियोंका तो भला क्या कहना।

स्वा० दयानन्द जी ने भी अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखा है—'जो कुलीन, शुभलक्षणयुक्त शूद्र हो; तो उसको मन्त्रसंहिता छोड़ के सब शास्त्र पढ़ावें। शूद्र पढ़े, परन्तु उसका उपनयन न करे, यह मत अनेक आचार्योंका है, (३ समु० २५ पृष्ठ) '६वें वर्षके आरम्भमें द्विज अपनी सन्तानोंका उपनयन करके आचार्यकुल....में भेज दें, और शूद्रादि वर्ण उपनयन किए बिना, विद्याभ्यासके लिए गुरुकुलमें भेज दें, (स० प्र० २ समु० पृ० १८) यहां पर स्वामी जी ने शूद्रका उपनयन नहीं माना। तब उन्हें वेद का अधिकार भी नहीं हो सकता, क्योंकि—उपनयनके बाद ही वेदारम्भ संस्कार होता है। वह स्वामीजीने आद्य वर्णत्रयीका ही माना है।

८-११-१२ वर्ष ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यके उपनयन का मुख्यकाल है। मनु० (२।३७) के अनुसार ५-६-८ वर्ष तीनों वर्णोंका काम्यकाल है, वह तीनोंका क्रमसे ब्रह्मवर्चस—बल एवं धनकी कामनार्थ होता है। मनु० (२।३८) के अनुसार १६-२२-२४ वर्ष तीनों वर्णोंका गौणकाल है; अतः आपत्काल है। इसी लिए 'बृहत्पाराशर स्मृति' में कहा है

'अष्टैकद्वादशाब्दानि सगर्भाणि द्विजन्मनाम्।
मुख्यः कालो व्रतस्यैष ह्यन्य उक्तो विपर्यये॥'
(४।१६२)

इसके बाद पुरुष व्रात्य तथा प्रायश्चित्तीय होता है।

'कार्पासमुपवीतं स्याद् विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृत्।
शणसूत्रमयं राज्ञो वैश्यस्याविकसौत्रिकम्॥'
(मनु० २।४४)

यहां पर ब्राह्मणोंके लिए कपासका क्षत्रियोंके लिए सन तथा वैश्यके लिए ऊनका यज्ञोपवीत कहा है, जिससे पुरुषका वर्ण अनायास प्रतीत हो जावे। परन्तु आजकल जैसे तीन वर्णोंका छन्दभेद नहीं दिखाई पड़ता; वैसे ही यज्ञोपवीतभेद भी दिखलाई नहीं पड़ता। यह समयका स्वातन्त्र्य है। क्षत्रिय-वैश्यका सन तथा ऊनका यज्ञोपवीत उसकी दृढ़ताके लिए अनुमित होता है। युद्ध एवं व्यापार के काम में लगे क्षत्रिय वैश्योंके लिए उपयुक्त भी यही प्रतीत होता है। यह बाह्योद्देश्य है। भीतरी उद्देश्य अदृष्टमूलक हो सकता है।

'गृहस्थाश्रमी द्वे यज्ञोपवीते .... धारयेत्'
(वैखानसधर्मसूत्रे ३।१।१)

'उपवीतं वटोरेकं, द्वे तथा इतरयोः (गृहस्थवानप्रस्थयोः) स्मृते' (पारिजाते देवलः)

'एकैकमुपवीतं तु यतीनां ब्रह्मचारिणाम्।
गृहिणां च वनस्थानामुपवीतद्वयं स्मृतम्॥'
(वृद्धहारीतस्मृति ८।४४)

'यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि।
तृतीयमुत्तरीयार्थे, वस्त्राभावे तदिष्यते।'(हेमाद्रि)

इत्यादि वचनोंसे गृहस्थियोंको श्रौतस्मार्त कर्मके कारण दो यज्ञोपवीत पहनना कहा है। जो लोग दूसरा यज्ञोपवीत स्त्रीके प्रातिनिध्यसे पहनना कहते हैं, उनका कथन उक्त प्रयोजनसे कट गया। नहीं तो तीसरा यज्ञोपवीत पैदा हुए बालकके प्रतिनिधित्वसे हो जाय। वस्तुतः स्त्रियों

भारतीय ज्योतिश्शास्त्रानुशीलन

ज्योतिष क्या है ? उसका फल क्यों नहीं मिलता ? न मिलनेके कारण और उपायोंका विवेचनात्मक अध्ययन

[लेखक—श्री पं० रमानन्द सारस्वत ज्योतिश्शास्त्री साहित्यरत्न]

[गताङ्क से आगे]

ग्रहों का प्रभाव

आकाशमें अनवरत अनेकों तारागण घूमते रहते हैं। इनमें कोई बड़ा है कोई छोटा है। इनकी गणना न तो आज तक कोई कर सका—न कर सकता है—इसलिए इन्हें असंख्य कहा है। इनमें से प्रत्येक में थोड़ी बहुत शक्ति है। विशेष शक्तिवाला ज्योतिःपिण्ड (तारा) कम शक्तिवालेको खींचता है। बहुत से छोटे-छोटे तारे मिल-खिच कर एक बड़ा रूप भी बन जाते हैं। प्राचीन महर्षियों ने इनको देखा। जो छोटे-छोटे तारे कुछ बड़े दीखे उन्हें नक्षत्र, उनसे भी बड़े ज्योतिःपिण्ड राशि और उनसे भी बड़े जो दिखलाई दिये उन्हें 'ग्रह' की संज्ञा दी। इसके बाद उन्होंने यह देखा कि कौन ग्रह इस पृथ्वीसे कितनी दूर है। किस ग्रहकी किरणें किस प्रकार पृथ्वी पर पड़ती हैं और किस ग्रहमें कितना तेज है। इसके अनुसार ही उन्होंने ग्रहों की शुभ या पाप संज्ञा की। इसके बाद ही जिस ग्रहमें पंच तत्त्वोंमें जिस तत्त्वकी विशेषता देखी उस ग्रहका उस पृथ्वीके उसी भागसे या तत्सम्बन्धी पदार्थसे विशेषता या न्यूनता होनेका सिद्धांत स्थिर किया। यह सिद्धांतका प्रसङ्ग है। इन बातोंकी सूक्ष्मता सिद्धांत ग्रहोंके अध्ययनके बिना प्राप्त नहीं होती—तथापि लेखमें आगे यथावकाश इसका भी दिग्दर्शन कराया जायगा। इस समय यही समझना चाहिये कि पंच तत्त्वमयी सृष्टि है उसीसे पृथ्वी और ग्रहोंका निर्माण हुआ है। अब जिस तत्त्वकी जिस ग्रहमें अधिकता है वह यदि पृथ्वीके समीप होगा तो उस तत्त्वको बढ़ायेगा—दूर होगा तो उसमें न्यूनता करेगा या स्वभावतः न्यूनता हो जायगी जैसे चन्द्रमा जल राशिका स्वामी है। इसमें जल भाग की अधिकता हैं जब यह अपने पूर्ण रूपसे अर्थात् पूर्णिमाको पूरे प्रकाश से भरी किरणें पृथ्वी पर फैंकेगा तब शुष्क और कड़ा पृथ्वीका भाग भी शीतल मालूम देगा। जल और वनस्पतिका स्वामी होनेसे उनमें वृद्धि करेगा। उदाहरणके लिए आप किसी अमावस्याके दिन किसी बाग में या नदी पर या तालाब में जाए, जितना पानी अरुचिकर आपको प्रतीत होगा पूर्णिमा को उससे कहीं अधिक शीतल और स्निग्ध होगा। वस्तु वही है पर प्रभाव की न्यूनाधिकता से फर्क हो ही जाता है। इससे भी स्पष्ट

को यज्ञोपवीतका अधिकार नहीं। विवाह ही उनका यज्ञोपवीत संस्कार है। श्री मनु ने कहा है—

'वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः स्मृतः।
पतिसेवा गुरौ वासो गृहार्थोऽग्निपरिक्रिया॥'
(२।६७)

यहां पर स्त्रियोंका विवाह ही उपनयनस्थानीय कहा है पतिसेवा ही उनका गुरुकुलवास माना गया है। घरका काम आदि उनका यज्ञ कहा है। इस विषयमें जो शास्त्रार्थ देखना चाहें, वे 'सिद्धान्त' (साप्ताहिक) काशीके ७-८ वर्षकी प्रायः सभी संख्याओंमें मेरे लेखमें देखें। तब दूसरा यज्ञोपवीत 'स्त्रीके प्रातिनिध्यसे है, यह बात कट गई। 'आह्निक सूत्रावली'में कहा है—

'ब्रह्मचारिण एकं स्यात्, स्नातस्य द्वे बहूनि वा'

ब्रह्मचारियोंको केवल वैदिककर्म करना पड़ता हैं; इस लिए उनका 'ब्रह्मचारी' यह नाम होता है। 'ब्रह्म-चरति' यह उनकी व्युत्पत्ति होती है। इस लिए वे एक ही सूत्र धारण करते हैं। स्नातक हो जाने पर वैदिक एवं स्मार्त दोनों कार्य करने पड़ते हैं; इस कारण उन्हें दो सूत्र पहिनने पड़ते हैं। [क्रमशः]

दूसरा उदाहरण लें—किसी अमावास्याके दिन आप किसी वृक्षका रात्रिमें फल लेकर तोड़कर उसका रस निकाल बातलमें रख दीजिये। इसी प्रकार उसी वृक्ष का दूसरा फल पूर्णिमाको तोड़कर उसका रस निकालिये, आपको आश्चर्य होगा कि पूर्णिमाके दिन तोड़े हुए रससे अमावस्याके दिन वाला रस कहीं कम होगा। अथवा कुछ ताजा किसी फलका रस एक चौड़े मुंहवाले शीशे के पात्रमें भर कर पूर्णिमामें रात्रिको रखिये और उस पर चांदकी किरणें पड़ती रहें। साथ ही आप एक टक दृष्टि लगाये देखते रहिये, आपको ऐसा प्रतीत होगा कि रस उछल रहा है और बढ़ रहा है—और सचमुच कभी कभी बढ़ भी जाता है–यह निश्चित और अनुभूत है यही है ग्रहका प्रभाव है। समुद्रमें जो ज्वारभाटा होता है वह भी इसी प्रकार होता है और उसका कारण यही चन्द्रमा है। इसके अतिरिक्त आप जानते हैं कि दो प्रकारके मुख्य रूपसे कमल होते हैं तामरस (रक्त-अर्थात् लाल कमल) और कुमुद (श्वेत कमल) इनमें से लाल कमल सदा रात्रि में बन्द रहता है और सूर्य के साथ ही खिलता है तथा मुंद जाता है। इसके ठीक विपरीत सफेद कमल दिन होते ही मुंद जाता है और रात्रिमें चन्द्रमाके साथ ही खिलता है तथा मुंदता है। आश्चर्य तो यह है कि अमावास्याकी रात्रिको सफेद कमल खिलता ही नहीं। चाहे कुछ भी हो पर यह कहना पड़ेगा कि इनके कारण सूर्य और चन्द्रमा ही हैं। क्या यह प्रभाव नहीं है ?। इसी प्रकार एक पुष्पविशेष होता है जिसे सूर्यमुखी कहते हैं। उसकी यह दशा होती है कि वह सूर्यके साथ-साथ ही खिलता है। प्रभातसे लेकर खिलने लगता है और सूर्यके मध्याह्नमें पूर्णरूपेण खिल जाता है और बादमें कुम्हलाने लगता है और सूर्यास्तके समय मुर्झा जाता है। साथ ही उसमें यह भी विशेषता है कि सूर्यको ओर ही उसका मुंह रहता है यह कुछ प्राकृतिक बात है। इसके अतिरिक्त बहुत से पुष्प ऐसे हैं जो नियमित समय पर ही खिलते और मुंदते हैं। 'बुक आफ नालिज' (Book of Knowledge) नाम की पुस्तकके ४०१४ वें पृष्ठ पर लिखा है कि स्वीडन देश के मि० लिनास (Mr. Linnacus) ने जो उद्भिज विद्याके प्रकाण्ड पण्डित थे उन्होंने अपनी पुष्प वाटिकामें बहुत से ऐसे फलोंके पौधोंकी पंक्ति बैठा रखी थी जो उन्हें घड़ी का काम देती थी। जैसे पहले पौधेमें पुष्प ठीक ६ बजे खिलेगा तो दूसरेमें ठीक सात बजे, तीसरेमें ठीक आठ बजे। इससे क्या यह नहीं प्रमाणित होता कि ग्रहोंका प्रभाव इन पर किस रूप में पड़ता है। इसके अतिरिक्त अर्कको लीजिये। अर्क जब उच्च राशिमें होता है तो यह भी प्रचुर मात्रा में फैलता है और जब सूर्य नीच राशि में जाता है तब अर्क (आकड़ा) के दर्शन भी दुर्लभ हो जाते हैं। इन्हीं बातों का पर्याप्त परीक्षण और निरीक्षण तथा अनुसन्धान कर जर्मनीके (बर्लिन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर मिस्टर कारलल्यूकने एक स्थान पर कहा है कि—मैं समझता हूं यदि संसारके पशु पक्षी उद्भिज आदिका इसी दृष्टि-कोणसे अध्ययन किया जाय तो यह सिद्धान्त अटल हो जाय कि संसारके भिन्न-भिन्न पदार्थोंपर ग्रह नक्षत्रोंका प्रभाव अवश्य पड़ता है। यह तो वनस्पति सम्बन्धी बातें हैं। जड़ वस्तुओंमें कहींका जलवायु ठण्डा है तो कहीं का गर्म कहीं का सम्मिलित। इसके अतिरिक्त पशुओं में जब जब जैसी राशियां बनी होती हैं वैसे पशुओंकी वृद्धि या ह्रास होता है। उदाहरणके लिए बिल्लीको ही लें। इसकी आंखकी पुतली चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के साथ घटती वा बढ़ती रहती है। अतः ऐसी स्थितिमें जब ग्रहोंका प्रभाव जड़-चेतन पशु-पक्षी आदि सभी पर यहां तक कि देवताओं पर भी पड़ता है, तब मनुष्य किस खेतकी मूली है जो उस पर ग्रहोंका प्रभाव न पड़े। इस विषय में—

प्राचीन प्रमाण—

"देव दानव गंधर्वाः यक्ष राक्षस किन्नराः।
पीड्यन्ते ग्रहपीडाभिः किं पुनर्भुवि मानवाः॥
शनैश्चरेण सौदासो नरमांसे नियोजितः।
राहुणा पीडितो राजा नलो भ्रान्तो महीतले॥
अङ्गारक - विरोधेन रामो राष्ट्राद्विवासितः।
अष्टमेन शशाङ्केन हिरण्यकशिपुर्हतः॥

रविणा सप्तमस्थेन रावणो विनिपातितः ।
गुरुणा जन्मसंस्थेन हतो राजा सुयोधनः ॥
पाण्डवाः बुध-पीड़ायां विकर्मणि नियोजिताः ।
षष्ठेनोशनसा युद्धे हिरण्याक्षो निपातितः ॥"

अर्थात् देव, दानव, यक्ष, किन्नर और राक्षस सभीको ग्रह सताते हैं। बेचारे मनुष्य तो हैं भी क्या? शनैश्चरके खराब होनेसे सौदास को नरमांस तक खाना पड़ा, राहुके कारण नलका राज्य छिना, मंगलके कारण रामको बनवास हुआ, अष्टम चन्द्रमाके द्वारा दैत्य हिरण्यकशिपु मारा गया, सातवें सूर्यसे रावणका नाश हुआ, जन्मके गुरुने दुर्योधनको मारा, बुधके द्वारा पाण्डवोंको दुःख मिला, और छठे शुक्रके कारण दैत्य हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपुका भाई मारा गया।" यह कोई झूठ नहीं है। महर्षियोंके अनुभवकी बातें हैं। तभी तो अब सारे डाक्टरोंको स्वीकार करना पड़ा है कि फायलेरिया (Filera) नामक रोग रक्तके परिवर्तन से ही होता है और एकादशी वा अमावस्याको इसका विशेष प्रकोप होता है। अति आधुनिक-वैज्ञानिक-डाक्टरोंने तो इस तथ्यको स्वीकार कर ही लिया है कि अमावस्या और शनिवारसे दवा प्रारम्भ किये हुए रोगियोंमें से अधिकांश या तो मृत्यु पाते हैं या शीघ्र तन्दुरुस्त नहीं होते। बहुतसे वैद्य डाक्टर एकादशीको भी दवा नहीं देते हैं। इन सब बातोंसे यह स्पष्ट और निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि ग्रहोंका मनुष्यकी प्रत्येक हलचलसे सम्बन्ध है और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रतिदिनका हमारा जो कार्य-व्यवहार है वह भी ग्रहों द्वारा सञ्चालित रहता है। जिस व्यक्तिका जो अधिपति ग्रह है या जिस व्यक्ति पर जिस ग्रहका विशेष प्रभाव पड़ता है उस ग्रह के अस्त और पापक्रान्त होने से तथा अन्य किसी शुभग्रहके प्रभाव न पड़नेसे जिस दिन यह स्थिति बन जाय--उसी दिन उस व्यक्ति की मृत्यु अवश्य हो जायगी। इसीलिए हम 'जन्म-पत्र' के प्रयोजनके रूपमें लिखते हैं कि—

ललाटपट्टे लिखिता विधात्रा,
षष्ठी-दिने याऽक्षरमालिका च ।
तां जन्म-पत्री प्रकटी करोति,
दीपो यथा वस्तु घनान्धकारे ॥"

अर्थात् षष्ठी (कहावत है छठीका दूध कितना पिया है) के दिन विधाताने जो लेख लिख दिया है उसे ही यहजन्मपत्री प्रकट करती है जैसे दीपक अंधेरेमें रखी हुई वस्तु को—"

तात्पर्य यही है कि हमारे प्रत्येक कार्यमें ग्रहोंकी हलचल है, हम ग्रहोंके द्वारा ही सञ्चालित होते हैं। वस्तुतः हम कुछ भी नहीं हैं। अतः लोगोंका यह कहना है कि ग्रहोंसे क्या प्रभाव कैसे और क्या पड़ता है केवल अज्ञानता पूर्ण है। हमें आशा है कि कम से कम 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक तो अपनी, यदि किन्हींको यह भ्रान्ति हो तो दूर कर देंगे। अब रह जाता है 'सत्यार्थप्रकाश' वाला तर्क। इसके उत्तर में यह कहना है कि 'सूर्य' का खराब होना या अच्छा होना सूर्यकी स्वाभाविक शक्तिको नष्ट नहीं कर सकता। ग्रहोंका पड़ता हुआ प्रभाव क्या आप आँखोंसे देख सकते हैं? जिस प्रकार किसी सुगन्धित कुंजमें से निकलते हुए सुगन्धका अनुभव करेंगे और किसी गन्दे स्थान पर जाते ही गन्दगीका अनुभव करने लगेंगे, पर क्या आप उस सुगन्ध और दुर्गन्धको आँखोंसे देख सकेंगे! अथवा आप किसी हवनकी अग्निको लें जिसमें विधिपूर्वक हवन वेदमन्त्रोंसे किया गया हो और साथ ही किसी चिताकी अग्नि भी लें जिसमें शवका अग्नि संस्कार हो रहा हो अथवा हो चुका हो- देखने में दोनों ही अग्नि एक हैं, पर परमार्थतः दोन में भेद है क्योंकि एक शुद्ध (हवन वाली) है देवत्व, दीर्घायुष्य कराने वाली संस्कृत है और दूसरी मानव-कलेवरको भस्म करने वाली अशुद्ध (चिता वाली) है। अब दोनोंको आप दोनों हाथोंमें रखिये। तो आप दोनोंका प्रभाव एक ही पायेंगे— अर्थात् दोनों अग्नियाँ हाथ जला देंगी। अब यहां यह प्रश्न सहज हो सकता है कि इस अग्निसे तो हमने वेदमन्त्रोंसे दीर्घायु-प्रदानकी प्रार्थना और मन्त्रोंका संस्कार किया था तब भी इसने हाथ जलाया और दूसरी असंस्कृत अग्निने भी हाथ जला दिया तो हवन के मन्त्रों का प्रभाव कुछ नहीं और यह हवन द्वारा दीर्घायु-प्राप्ति

कामना की बात झूठ और पाखण्ड है ??? तब इसका क्या उत्तर होगा ? कुछ नहीं। बस यही भेद इसमें समझना चाहिये। जिस प्रकार हम दुर्गन्ध और सुगन्धका ग्रहण करते हुए भी इन्हें आंखोंसे नहीं देख सकते या—जिस प्रकार हम अग्निके हवनका प्रभाव इन आंखोंसे नहीं देख सकते या ईश्वरकी पार्थिवसत्ताको जानते हुए भी उसे आंखोंसे प्रत्यक्ष—रूपसें खड़े या बैठे हुए नहीं देख सकते। उसी प्रकार इन ग्रहों के इस पार्थिव रूप को देखते हुए भी उनके फल मिलने के प्रभाव को आंखों से नहीं देख सकते हैं। हाँ, अनुभव कर सकते हैं, जान सकते हैं, उसका आभास पा सकते हैं पर प्रत्यक्ष रूप नहीं देख सकते। क्योंकि प्रत्यक्षरूप साधारण वस्तुका देखा जा सकता है, इन ग्रहों का प्रभाव हमारे कर्मों, हमारे भाग्यसे इतना घनिष्ठ है कि ग्रहोंके प्रभावकी एकाकारिता इस सम्मिलित रूप में दृग्गोचर नहीं हो सकती है। हाँ, हम इतना जान सकते हैं कि सूर्य यदि अच्छा है तो हमारी प्रवृत्तियां बुरे कार्योंकी ओर न होंगी, हम न किसीका बुरा करेंगे न किसी प्रकार बुराई ही हमें मिलेगी। सूर्यके अच्छे-बुरे होने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि जिसे सूर्य अच्छा है उसे तो दिखलाई दे और जिसे बुरा है उसे दिखलाई ही न दे। तत्त्वतः बात यह है कि ग्रहों का प्रभाव अदृश्य रूपसे होता है, गणित द्वारा यह जाना जा सकता है कि वह प्रभाव कैसे और कब होगा - हाँ, विशेषवेत्ता इसे भी जान सकते हैं - पर यह साधारण लोगोंसे परे अत्यन्त परे - बहुत दूरकी बात है। इतना अवश्य हो सकता है कि जिसे सूर्य अच्छा हो उसे उस व्यक्तिकी अपेक्षा जिसे सूर्य खराब है दुःख या सूर्य सबन्धी पीड़ा कम प्रतीत हो - पर यह नितान्त असम्भव है कि एक व्यक्तिको धूपसे पीड़ा हो और दूसरेको जरा भी न हो। अतः यह समझना चाहिये कि ग्रहोंके भले बुरे होने से अग्निके संस्कृत असंस्कृत होने से उनकी स्वाभाविकता नष्ट नहीं होती है अस्तु!

इस प्रकार यह प्रतिपादन करने पर कि ज्योतिष क्या है और ग्रह क्या हैं ? तथा फल कैसे मिलता है लिख कर वर्तमान समय में फल क्यों नही मिलता इस पर प्रकाश डालते हुए इस 'ज्योतिःशास्त्रानुशीलन' का यह भूमिकाभाग समाप्त किया जायगा। तथा आगामी 'श्रीस्वाध्याय' के अङ्कोंमें इसी शीर्षकसे ज्यौतिष शास्त्रके मौलिक रहस्योंका उद्घाटन किया जायगा।

'वर्तमान समयमें फल क्यों नहीं मिलता ?

आज प्रायः इतना सब कुछ होते हुए; इतने शास्त्रका महत्व होते हुये जब लोगोंकी इस ओर इतनी अरुचि देखते हैं तो हार्दिक दुःख होता है। इसका एक ही कारण है और वह है इसके फलका न मिलना। आज यह बात केवल कथनकी वस्तु न होते हुए एक कटु-सत्य है कि सौमें से पचीस ज्योतिषियोंकी भविष्यधारियां स्यात् ही सोलहों आना सही निकलती हों। इसका क्या कारण है ? क्यों बड़े-बड़े शास्त्री और आचार्य परीक्षोत्तीर्ण ज्योतिषी बन्धु परिहासके पात्र बने हुए हैं ? अरे! जिनके पूर्वजोंने इस वसुन्धराको अपने विज्ञानसे शस्य—श्यामला बनाया और समस्त आयु पर्यंत वल्कल पहिन जीवन बिता दिया जिनके चरणों पर चक्रवर्त्ती सम्राटोंने अपने सिर रगड़ दिये-आज उन्हीं महर्षि गर्ग, भृगु, अङ्गिरा वशिष्ठकी इन सन्तानोंके इस ज्योतिर्विज्ञान पर लोगोंकी यह धारणा !!! कितना बड़ा अन्धेर है। इसका मुख्य कारण है ब्राह्मणोंकी शिथिलता। यदि ब्राह्मण शिथिल न होते-तो संस्कृत भाषाका राज्य न मिटता, यदि संस्कृत भाषाका साम्राज्य न मिटता तो यह विज्ञान इस प्रकार कलंकित न होता। अतः इसका मुख्य कारण है संस्कृत भाषाका ह्रास। ज्योतिषके जो कुछ प्राप्य ग्रन्थ हैं, वे प्रायः संस्कृतमें हैं। संस्कृत भाषाका विशेष ज्ञान न होनेसे आधुनिक ज्योतिषी उनका मर्म नहीं समझ पाते हैं-केवल दो-चार इधर उधरकी पुस्तकें पढ़कर ही वे पण्डिताभिमानी फल कहने बैठ जाते हैं, पर फल मिलता नहीं। लोग कह देते हैं कि यह शास्त्र ही झूठा है, इसी प्रकार इस शास्त्रकी यह दुर्दशा और दुर्गति हुई है। दूसरा इसका कारण यह भी है कि सिद्धान्तमें प्रायः कहीं न कहीं आचार्य एक ही रास्तेमें आ डटे हैं; और फलितमें आचार्योंकी भिन्नता ही स्थान--स्थान पर दीख पड़ती है। ऐसा प्रतीत होता है कि मध्यकालमें जब ज्योतिषके अधिकांश

ग्रन्थ लुप्त हो गये तब आचार्यों ने अपनी मतिसे और अनुमानसे ग्रन्थोंका दूसरे ढंगसे ही निर्माण किया है। साथ ही संहिता विभागके अधिकांश ग्रन्थ अप्राप्य हैं। केवल होराशास्त्रके ही कुछ ग्रन्थ प्राप्य हैं (होरा शब्द विदेशी नहीं है; क्योंकि वराह मिहिरने 'अहोरात्र' शब्दके ही आदि अन्तके 'होरा' अ, और त्र, निकल जाने पर बना है ऐसा माना है। यद्यपि इस कल्पनासे लेखक पूर्णतः सहमत तो नहीं है पर 'अभावे शालि चूर्णम्' न्यायसे मानता है। क्या कोई और विद्वान् इसके अतिरिक्त सप्रमाण व्युत्पत्ति प्रकट करनेका कष्ट करेंगे?) जिनके द्वारा मनुष्यके जीवन सम्बन्धी अधिकांश बातें मिल जाती हैं, अतः ग्रन्थाभाव भी फल न मिलनेका कारण है, साथ ही ज्यौतिषी सभी पर विचार करनेका कष्ट नहीं उठाते-अतः यह भी एक कारण है। इसके अतिरिक्त ग्रहोंमें संस्कार और परिष्कार न होनेसे भी ठीक समय पर फल नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त कुछ तो पंचांगोंकी गपड़चौथ मची हुई है, कुछ ज्यौतिषी देशान्तरका संस्कार न कर अशुद्ध लग्न ही रख देते हैं अतः कितना भी विद्वान् क्यों न हो उसकी वाणी इष्ट और लग्नके कारण कभी ठीक नहीं मिल सकती। कुछ तो ज्यौतिषी नामधारी विना पढ़े लिखे धूर्तता ही करते हैं और कुछ पढ़े लिखे होने पर भी देश काल और समाजसे अनभिज्ञ होनेसे ज्योतिषी जो कह बैठते हैं वह कभी नहीं मिलता। कुछ धूर्त प्रश्नकर्त्ता कुण्डलीमें परिवर्तन ही कर लाते हैं और फल न मिलने पर वैसे ही ज्योतिषको कलङ्कित करते फिरते हैं। इसके अतिरिक्त राज्यसे इस विज्ञानको कुछ प्रोत्साहन नहीं मिलता। यदि बातें मिल जायँ तब भले ही कोई कुछ पण्डितजीको पूछे वैसे कोई पूछता नहीं। पढ़ने पढ़ानेके कोई अनुसन्धान पूर्ण विद्यालय नहीं। ऐसी स्थितिमें क्यों न इस विद्याका लोप और ह्रास हो। इनके अतिरिक्त और भी बहुतसे कारण हैं पर उन्हें कहने, सुनाने, सुनने और गिनाने से सिवा दुखकी मात्रा बढ़नेके कोई लाभ प्रतीत नहीं होता। अन्तमें मैं अपने पाठक बन्धुओंसे जिनकी तीन श्रेणियाँ हैं-विद्वान्, धनिक, और साधारण लोगोंसे केवल दो शब्द कह कर लेखनीको विराम देता हूँ।

१. विद्वानोंसे—

मेरा कहना है कि हे महापुरुषों! यह आपके पूर्वजोंका विज्ञान है, आप इसकी रक्षा करें। आपके पूर्वजोंने समस्त संसारको अपने इसी विज्ञानके बल पर जीता था, आप अपनी इस वस्तुको यों ही न नष्ट होने दें। '*ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते*' वाले महत्वपूर्ण सिद्धान्तको सीखें। आप कदापि इस बातकी आशा न करें कि ज्यौतिषसे आप कमा खायेंगे। आपको अपने भोजनादिके लिए कोई और कला सीख कर केवल ज्ञान और अनुसन्धानके लिए इस शास्त्रका अभ्यास करना चाहिए। आपकी यजमानी वृत्तिकेलिये ज्यौतिषकी ओर प्रवृत्ति न हो कर ज्ञानवर्धनकी कामनासे होनी चाहिए। जब आप प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि यह समय उद्योग और कलाका है तब आप क्यों परावलम्बीपनेकी भावनासे पूर्ण 'जै लालाजीकी' वाली परिस्थितिको अपनानेका प्रयत्न कर रहे हैं? क्या आपका इसके बिना उद्धार नहीं हो सकता? जब आप देखते हैं कि 'वर्ष और जन्म-पत्र' केलिये ये धनी लोग आपको उचित दक्षिणा नहीं देते तो फिर आप ऐसे लोगोंके जन्म-पत्रादि बनाते ही क्यों हैं? यदि आप प्रयत्न कर अपनी विद्या और विज्ञानका विकास कर देंगे तो जिसे आवश्यकता होगी वह आपको अवश्य ही उचित आपकी स्थिर की हुई दक्षिणा देगा ही। 'हीरा मुँहसे ना कहे लाख हमारो मोल' वाला आदर्श आपको अपनाना चाहिये। बिना उचित दक्षिणा लिये किसीका वर्ष जन्म-पत्रादि निर्माण करनेसे न करना ही अच्छा है। अब वह समय 'असंतुष्टा द्विजा नष्टाः' वाली बात छोड़नी होगी। क्योंकि आप भी तो परिश्रम करते हैं। यदि मदोन्मत्त लापरवाह व्यक्ति आपकी इस परिश्रम करनेकी शक्तिका उचित मूल्यांकन नहीं करते तो आपको अपने शरीरको दूसरेके श्रमके लिये दुःखमें डालनेकी क्या आवश्यकता है? क्या आप यह समझते हैं कि इससे आप भूखों मर जायेंगे? कभी नहीं! जितना परिश्रम आप इस गर्हणीय वृत्ति या 'जी हुजूरीमें' लगाते हैं उससे चौथाई समय अपने विज्ञानको विकसित करनेमें लगायें और शेष समयमें

कोई और ऐसा कार्य करें जिससे आजीविका और गृहस्थी निर्वाह हो। इससे अनेकों लाभ होंगे, आपकी विद्या बढ़ेगी, जाति और देशका नाम ऊँचा होगा, शास्त्रको पूर्वकी-सी महत्ता मिलेगी। और यदि आपका विज्ञान सफल होता गया तो आज आप जिन लोगोंके दानका संकल्प लेनेको घर-घर घूमते हैं, वे ही लोग और जो आपकी निन्दा और परिहास करते हैं वे ही नास्तिक लोग आपकी चाटुकारी करेंगे। विशेष क्या ? इस श्लोकसे ही सब समझ लें —

" यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते ॥"

२. धनिकों से —

मेरा कहना है कि हे लक्ष्मीपुत्रों! आज आपके ऊपर लक्ष्मीकी कृपा है, पर यह याद रखना कि सदा ऐसा ही वैभव और ऐश्वर्य न तो किसीका रहा है और न रह सकता है। करोड़ों सम्राट् जब इस वसुन्धराकी गोदमें सो गये जिनके कि ऐश्वर्यको आज सुननेसे आश्चर्य होता है तो फिर आपकी यह माया, यह ऐश्वर्य भी स्थायी नहीं रह सकेगा। बली कालके कराल गालमें जानेसे पहले और इस धनको यों ही चोरोंके चुराये जानेसे पहले या इन बड़ी २ अट्टालिकाओंके धूलिमें मिलनेसे पहले जरा आप अपने इस नाशवान् धनका कुछ सदुपयोग तो कर लो! आज भारत यद्यपि स्वतन्त्र हो गया है पर उसका वह वैभव और विज्ञान अभी बहुत दूर है। समय रहते आप सोचो और इस ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नतिमें बन्द थैलियों और नोटोंकी गड्डियोंका कुछ सदुपयोग तो कर जाओ! आज जब आप केवल एक श्रीफलका प्राचीन उपहार लेकर पंडितजी से भविष्यके सैकड़ों प्रश्नोंकी झड़ी लगा देते हो और जब उनमें से कुछ फल न मिलते हुए पाते हो तब इस शास्त्रका कितना कलंक देते हो! आप क्या सिर्फ एक नारियलमें ही यह आशा करते हैं कि आपको सारी बातें यथार्थमें मिल जायें! यह माना कि "दान वित्त समान" होता है और प्रायः आप इसे सुनाते भी हैं पर जहां आप अन्य कार्योंमें हजारों का व्यय करते हैं, क्या यह सोचा करते हैं कि वित्तानुसार ही सब कार्य करेंगे! माना कि ब्राह्मण पंडितों को सन्तोषी होना चाहिये और जंगल में भी रहना चाहिये पर कब? जब देश के धनिक राजा लोग उनके अन्न वस्त्र का प्रबन्ध कर प्राचीन मर्यादानुसार प्रति पंडित पर उतना ही व्यय करते हों! मेरा आपसे कहना है कि आप पुरानी परिपाटी छोड़ें, यह न आशा करें कि ब्राह्मण आपसे दानकी याचना करे। आपकी यह वृत्ति होनी चाहिये कि जन्मपत्र दिखाने के पूर्व ही यथोचित दक्षिणा अग्रिम दें ताकि मनोयोग पूर्वक पंडितजी आपको फल देखकर प्रसन्नता से बतायें! जरा देखिये, इस प्रकार करने से कितना आपको फल मिलता है जब आपकी यह दशा है तो क्यों न ज्योतिषकी दुर्दशा हो। अतः अब आपका कर्तव्य है कि यदि आपमें भारतीय, भारत, और भारतीयता तथा ज्यौतिष और धर्ममें लेश मात्र भी अनुराग हो तो कमसे कम अपने धनका दसवां हिस्सा तो इसके उद्धारके लिये संकल्प कर ही दें और सूचना 'श्रीस्वाध्याय सदन' सोलन (शिमला) के पते पर दें। तथा सदा इस श्लोकका भाव याद रखें—

"दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

अर्थात् धनकी दान, भोग और नाश ये तीन गति हैं। जो न दान देता है, न भोगता है उसका नाश ही होता है।

३. साधारण लोगों से

मेरा कहना है कि महानुभावों! आज आपका देश स्वतन्त्र हो गया है, पर यह कहने भरको स्वतन्त्रता समझनी चाहिये। आज भी हमें पश्चिमके विज्ञानकी ओर देखना पड़ता है यह अनुचित बात है। जो देश कभी इतना उन्नत था, आज उसकी यह दशा देख कर कौन सहृदय दुःखी न होगा? इससे बढ़कर और परितापका कारण हो ही क्या सकता है? क्या आप अब भी इस कलंकको सिर पर यों ही धारण करते रहेंगे? इस जागरणके युगमें, नवजीवन और नवयुगके इस नूतन प्रहरमें और इस स्वर्णमयी मधु वेलामें आज यदि आप और कुछ न कर सकते हों तो इतना तो कर ही सकते हैं कि इस

उच्च मीमांसा

[ले०—राजगुरु ज्यौतिषालंकार श्री० पं० तारादत्त जी राजज्यौतिषी]

सूर्यसिद्धान्तमें पृथ्वीसे ऊपर चन्द्रमा की, उससे ऊपर बुध की, उससे ऊपर शुक्रकी, उससे ऊपर सूर्य की, उससे ऊपर मङ्गल की, उससे ऊपर बृहस्पति की, और उससे ऊपर शनि की कक्षा लिखी है।

ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्"

इस सिद्धांतके अनुसार पृथिवीके वायु-मण्डलमें भी ग्रह-शक्तियोंका व्याप्त होना अनिवार्य है। कक्षाक्रमसे उनका व्याप्त होना प्रतीत होता है। इस प्रकार पृथिवीके वायु-मण्डलमें सबसे नीचे चन्द्रमाकी शक्ति, उससे ऊपर बुधकी शक्ति, उससे ऊपर शुक्रकी शक्ति, उससे ऊपर सूर्यकी शक्ति, उससे ऊपर मङ्गलकी शक्ति, उससे ऊपर बृहस्पतिकी शक्ति, उससे ऊपर शनिकी शक्ति, उससे ऊपर द्वितीय आवृत्तिमें चन्द्रमाकी शक्ति, उससे ऊपर द्वितीय आवृत्तिमें बुधकी शक्ति, और उससे ऊपर द्वितीय आवृत्तिमें शुक्रकी शक्तिका व्याप्त होना प्रतीत होता है। स्पष्टरूपसे सूचित करने के लिए इन शक्तियों का नाम 'भौम ग्रह' उचित है। सामान्य रूपसे इन्हें ग्रह भी कह सकते हैं। ये अदृश्य भौम-ग्रह महाग्रहोंकी शक्तियों से प्रदीप्त हो कर अपना विशेष प्रभाव करते हैं। महा नक्षत्रों की शक्तियां भी भूमि वायु मण्डल में नैसर्गिक नक्षत्र शक्तियों को प्रदीप्त करती हैं।

इस निर्णयके अनुसार द्वितीयावृत्तिमें चन्द्रमा बृहस्पतिसे उच्च स्थानमें और शुक्र शनिसे उच्च स्थान में होता है। इस प्रकार उच्च शब्द पूर्ण रूप से चरितार्थ होता है।

वैज्ञानिक मतमें सूर्यसे आगे बुधकी, उससे आगे शुक्रकी, उससे आगे पृथ्वीकी, उससे आगे मंगलकी, उससे आगे बृहस्पतिकी, और उससे आगे शनिकी कक्षा है—

विच्छुक्र क्षिति भौम जीव शनयो दीर्घेषु वृत्तेषुत—
न्नाभिस्थित सूर्य कर्षण वशान्नित्यं भ्रमन्तीति सत्।
(केतकी ग्रहगणित)

सूर्य बहुत बड़ा माना गया है। यदि मान लिया जाय कि सूर्य बड़े मटके के बराबर है तो पृथिवी मटर के बराबर सिद्ध होगी। पृथिवी-सहित सब ग्रह इन कक्षा मार्गों में सूर्यकी परिक्रमा करते हैं। चन्द्रमा पृथिवीका उपग्रह होनेसे उसकी परिक्रमा करता है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि अनेक अति सूक्ष्मांश एक सूक्ष्मांशकी परिक्रमा करते हैं।

"महान्तमनुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ ! सर्वशः"

इस भगवद्वाक्यका तात्विक अभिप्राय यह है कि छोटी शक्तियां बड़ी शक्तियोंका अनुकरण करती हैं। मनुष्य शब्द उपलक्षण प्रतीत होता है। जिस प्रकार पृथिवी सहित यह सूर्यकी परिक्रमा करते हैं उसी प्रकार अदृश्य

ज्योतिर्विज्ञानके उद्धारके लिये जहां कहीं जाएँ लोगोंको प्रोत्साहित करें। जो व्यक्ति इस कार्यके लिये अपनी जो भी सेवायें दे सकें दें। विद्वान् विद्वत्तासे, धनी धनसे, और आप जैसे महाशय अपने प्रचारसे जनताको इस ओर प्रबुद्ध तो कर सकते हैं कि सब व्यक्ति मिल कर अपनी सरकारसे प्रार्थना करें कि वह इस विज्ञानके लिये विशेष रूपसे एक अनुसन्धान शालाका निर्माण करा दें जहां पर ज्यौतिषका वैज्ञानिक अध्ययन कराया जाय। पहले इस कार्यमें कुछ कठिनता होगी बादमें जगदम्बाकी कृपासे सब कार्य सफल हो जायेंगे। केवल आप लोगोंको जिस रूपमें भी आप कर सकते हों साहाय्य करना आवश्यक है। उक्त विषयमें श्री सम्पादक जी 'श्रीस्वाध्याय' तथा विशेष आवश्यकता पड़े तो मुझसे पूछ सकते हैं—साथ ही इस वाक्यका सर्वदा स्मरण रखें—

'धिक्कार है उसके लिये जो जी रहा अपने लिये।
वह धन्य है जो मर रहा निज देश सेवाके लिये॥'

ग्रह शक्तियां पृथिवीकी परिक्रमा करती हैं। जिस क्रमसे सूर्यसे आगे बुधादि ग्रह हैं ठीक उसी क्रमसे पृथिवीसे आगे बुधादि ग्रहोंकी अदृश्य शक्तियां हैं। भौम-ग्रह मण्डल में सूर्यका स्थान पृथिवीने ले लिया है। इसलिए उसमें पृथिवीके स्थान में सूर्यकी शक्ति है। सूर्यके अति प्रधान होनेसे पृथिवी उसका अनुकरण करती है। चन्द्रमाके पृथिवी के उपग्रह होनेसे पृथिवी बुधके बीचमें उसकी शक्तियोंका व्याप्त होना निश्चित है। इस प्रकार उच्चोपपत्ति आदिमें सौर कक्षाक्रम और वैज्ञानिक कक्षाक्रमके परिणाममें विरोध नहीं है।

तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः (यजु० अ० २५ मं०१७)

इस श्रुतिमें पृथिवीको माता और द्युलोकको पिता माना है। इसका सर्व साधारणोपयोगी अभिप्राय इस प्रकार है—

द्युलोकमें सूर्य ऊपरसे वृष्टि देकर पिताके समान उपकार करता है। पृथिवी उस वृष्टिसे अनेक पदार्थ उत्पन्न कर माताके समान उपकार करती है। इसलिए द्युलोक पिता कहा गया और पृथिवी माता कही गई।

ज्योतिष-प्रकरणमें इस श्रुतिका आशय इस प्रकार प्रतीत होता है—

द्युलोक ग्रह-नक्षत्र अन्य ताराओंसे भी व्याप्त हैं। इसलिए ऊपरसे बीज रूप ग्रह-नक्षत्र अन्य ताराओंकी भी शक्तियां पृथिवीमें व्याप्त होती हैं। उनके संयोगसे पृथिवी सब पदार्थोंको उत्पन्न करती है। इसलिए द्युलोकको पिता और पृथिवीको माता माना गया है। इस प्रकार इस श्रुति से फलितकी उत्पत्ति सूचित होती है। उच्चोपपत्तिमें भी इस श्रुतिका उपयोग हो सकता है। वह इस प्रकार है:—

भौम-चन्द्र सब ग्रहोंसे नीचे होनेके कारण उनकी पृथिवी है क्योंकि उन सबकी अपेक्षा पृथिवीकी शक्तियां उसमें विशेष रूपसे व्याप्त हैं। बुधादि भौम-ग्रह भौम-चन्द्र से ऊपर होनेके कारण उसके द्युलोक रूप हैं। भौम-चन्द्रसे ऊपर भौम-बुध है। वह मिश्र-ग्रह होनेसे भौम-चन्द्रमाका विशेष साहाय्य करनेवाला नहीं है। उससे ऊपर शुभ-ग्रह भौम-शुक्र है। इसलिए ऊपरसे भौम-शुक्रके अंश नीचे भौम चन्द्रमामें आकर उसको शक्तिशाली बनाते हैं। भौम-शुक्रकी अपेक्षा पृथिवीका अधिक सामीप्य होनेसे भौम-चन्द्रमा पृथिवीकी शक्तिके साहाय्यसे भौम-शुक्रका अधिक आकर्षण करता है। इसलिए भौम-चन्द्रमें भौम-शुक्रके अंशोंका जैसा प्रवेश होता है भौम-शुक्रमें भौम-चन्द्रके अंशोंका वैसा प्रवेश नहीं। जब आकाशस्थ बड़ा चन्द्रमा शुक्रकी शुभ राशिमें (वृषमें) होता है, उस समय भौम-चन्द्र भी भौम-वृषमें होता है। भौम शुक्रके शुभ अंशोंकी गति स्वभावतः भौम वृष राशिकी ओर है। इसलिए जिस समय भौम-चन्द्रमाका भौम-वृषके साथ मेल होता है उस समय पृथिवी भौम-चन्द्र भौम वृष इन तीनोंके सम्मिलित आकर्षणसे भौम-शुक्रके शुभ अंश अत्यन्त अधिकतासे भौम-चन्द्रमें व्याप्त होकर उसको शक्तिशाली बनाते हैं और शुभ फलोत्पादन-सामर्थ्य देते हैं। इस प्रकार उच्चस्थ चन्द्र बलशाली होता है। इसी प्रकार भौम-बृहस्पति मीन राशि-स्थ भौम शुक्रको और द्वितीयावृत्तिमें भौम-चन्द्रमा कर्क राशिस्थ भौम-बृहस्पतिको बलशाली बनाता है। द्वितीया-वृत्तिमें भौम-शुक्र भी इसी प्रकार भौम-शनिको बलशाली बनाता है।

क्रूर और सौम्यों पर अधिकार वाले उच्चाधिकारी को अधिक क्रूरता छोड़कर कुछ सौम्य स्वभावका भी अवलम्बन शासन कार्यके लिए आवश्यक होता है। इसलिए क्रूर और सौम्य राशियोंके स्वामी क्रूर ग्रह मङ्गलने अति क्रूर शनि-की शुभ राशि मकरको स्वीकार किया है। क्रूर ग्रहकी शुभ राशिसे शुभ ग्रहकी क्रूर राशि अधिक शुभ होती है इसलिये अति क्रूर शनिने शुभ ग्रह शुक्रकी क्रूरराशि तुला उच्चाधिकारके लिए स्वीकार की है। शनि नीच होनेसे आसुरीवृत्ति वाला है। इस प्रकार भी असुर गुरु शुक्रकी राशि उसका महत्व बढ़ाने वाली है।

"उपकार प्रधानः स्यादपकार परेऽप्यरौ।" इस नियमके अनुसार सौम्य स्वभावके सर्वोपकारी होनेसे क्रूर-सौम्य राशियोंके स्वामी शुभ ग्रहोंने क्रूर राशि और क्रूर ग्रहकी राशिको भी उच्चाधिकारके लिए स्वीकार नहीं किया।

चन्द्रमा जल तत्व वाला ग्रह है, शुक्र भी जलतत्व वाला ग्रह है, इसलिए उसकी राशिमें चन्द्रमा शक्तिशाली होता है। सूर्य आग्नेय ग्रह है, मङ्गल भी आग्नेय ग्रह है,

प्लेग और उससे बचनेके उपाय

[लेखक—आयुर्विज्ञानाचार्य श्री पं० गयाप्रसादजी शास्त्री राजवैद्य]

यह रोग प्लेगके नामसे प्रसिद्ध है। प्लेग से अधिक भयङ्कर और जन-संहारक और कोई दूसरा रोग नहीं है। जिस घर ग्राम और नगरमें इस रोगका प्रवेश होता है, वह जनशून्य श्मशान-सा बन जाता है। वैज्ञानिक इतिहासकार संसारमें इस रोगकी उत्पत्ति ईसाकी ५ वीं शती और भारतमें सबसे पहले इसके आगमनका समय १६ वीं शती मानते हैं। इतिहासकारों तथा अन्वेषकोंकी धारणाके अतिरिक्त भारतकी सर्वसाधारण जनता तो केवल ६० वर्षोंसे ही इस रोगकी भयङ्करतासे परिचित है। सबसे प्रथम १८८६ ई०में बम्बईमें इस रोगका प्रकोप हुआ। उसके बाद भारतके कितने ही नगरों और ग्रामों पर इस भीषण रोगका संक्रमण हुआ। अब तो सभी लोग इस रोगकी भीषणता तथा संहार-शक्ति से परिचित हो गये हैं।

भारत के आस्तिक लोग 'प्लेग' तथा 'विशूचिका' (हैजा) जैसे जनपद-विध्वंसी रोगोंका मूल कारण प्रज्ञापराध तथा आत्मापराधके साथ-साथ दैवीप्रकोप भी मानते हैं। उनका ऐसा मानना चाहे विज्ञान-सम्मत न हो किन्तु सर्वथा असंगत नहीं है। फिर भी इस विज्ञानके युगमें केवल प्रज्ञापराध या दैवीप्रकोपको ही मान लेनेसे काम नहीं चल सकता। रोगके भौतिक कारणों पर भी थोड़ा विचार करना है। रोगके आक्रमण तथा विस्तारके रोक-थामका कुछ सोचना और समझना है।

प्लेग रोगका निदान

मिथ्याहार-विहार और मिथ्याचारके द्वारा प्राकृतिक जगत्में विक्षोभ होने पर देश, काल, जल एवं वायु सभी एक साथ (युगपत) दूषित हो जाते हैं। इनके सदोष होने पर दोषोंके बला-बलानुसार भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्लेग तथा महामारी जैसे जनपदविध्वंसी रोगोंका प्रादुर्भाव होता है। यह एक संक्रामक रोग है। प्लेग रोगीके अतिशय समीप तथा दूषित वायुमण्डलमें रहने वाले स्वस्थ व्यक्तियों पर भी प्लेग का आक्रमण होते देखा गया है। प्लेग रोगका साधारण तथा विशेष आक्रमण भी होता है। साधारण आक्रमण होने पर यदि उपयुक्त चिकित्साकी व्यवस्था हो जाती है तो रोगीकी जीवन-रक्षा हो सकती है। दूषित जल-वायुका प्रभाव सबसे पहले अल्प प्राण, दुर्बल जीव-जन्तुओं पर पड़ता है। चूहे, छिपकली, सांप, छछूंदर, कीड़े-मकोड़े तथा अन्य सभी तरहके घरेलू जीव-जन्तुओंकी मृत्यु दूषित जलवायु तथा प्लेग रोगके आगमन एवं प्रसारकी प्रथम सूचना है। चूहों पर प्लेग रोगका आक्रमण बहुत ही शीघ्र होता है और चूहोंके द्वारा ही इस रोगके कीटाणुओंका प्रसार भी होता है। साधारण जनता चूहोंको ही प्लेग रोगका कारण मानती है। यह विचार ठीक नहीं है। प्लेगके भीषण आक्रमण होने पर चूहोंके अतिरिक्त सांप, छछूंदर, छिपकली तथा बन्दर आदि जीव-जन्तु भी मरते देखे हैं। अतः प्लेगका मूलकारण तो दूषित देश, काल, जल और वायु आदिकी समष्टि ही है।

प्लेग के लक्षण—

प्लेग रोगके कीटाणु जब किसी व्यक्तिके शरीरमें प्रविष्ट

इसलिए उसकी राशिमें सूर्य शक्तिशाली होता है। शनि वायु तत्वात्मक ग्रह है, मङ्गल अग्नि तत्वात्मक ग्रह है, वायुतत्व अग्नितत्व का मित्र है, इसलिए शनिकी राशि में मङ्गल शक्तिशाली होता है।

वास्तवमें अग्नितत्वके क्रूर होनेसे आग्नेय ग्रह (सू० मं०) क्रूर हैं। अग्नितत्व और वायुतत्वमें परस्पर मित्रता होनेके कारण वायुतत्वात्मक ग्रह (शनि) भी क्रूर है। इसलिए सूत्रमें क्रूर शब्दसे ही आग्नेयत्व और वायव्यत्व का ग्रहण है। इसी प्रकार अक्रूर शब्दसे आप्यत्वका ग्रहण है। आकाशतत्व भी सौम्य है, इसलिए इसी शब्दसे आकाश तत्वात्मकत्वका भी ग्रहण है।

—★—

हो जाते हैं तो सबसे पहले उसे चक्कर आता है, शिर भारी हो जाता है, हाथ और पैरोंमें खिंचाव होता है, जोड़ोंमें दर्द होता है एवं समस्त शरीर शिथिल हो जाता है। इन लक्षणोंके मालूम होनेके कुछ घण्टोंके अनन्तर ही ज्वरका वेग होता है। ज्वरके आक्रमणके साथ ही जांघों, दोनों बगलों और संधियोंमें पीड़ा अधिक बढ़ जाती है यह ज्वर कभी १०० डिग्रीसे लेकर १०५ डिग्री तक जाता है इसी बीच दोनों जांघोंके मूलमें या बगलके नीचे प्लेगकी ग्रन्थियों का उदय होता है। इन्हें प्लेगकी गांठ या ग्रन्थि कहते हैं। ये गांठें छोटी बड़ी सभी तरह की होती हैं। इन गांठोंमें भी तीव्र वेदना और खिंचाव होता है। बहुधा ज्वर आनेके दूसरे दिन ये प्लेग की ग्रन्थियां निकल आती हैं। कई बार प्लेगकी गांठोंके निकलनेके पूर्व ही प्लेग रोगीका ज्वर १०५ डिग्री तक बढ़कर सन्निपातिक दशाको उत्पन्न कर देता है और रोगी शीघ्र ही इस संसारसे बिदा हो जाता है, प्लेगकी तीव्रावस्थामें कई बार २४ घण्टेसे लेकर ७२ घण्टेके मध्य में ही रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

प्लेग रोगकी चिकित्सा--

यदि लगातार घर-बाहर अड़ोस-पड़ोस तथा नगरके एक भाग या अनेक भागोंमें चूहोंका मरना आरम्भ हो जाय तो समझ लेना चाहिये कि इस स्थान का जल-वायु अत्यन्त दूषित हो गया है। उस दशामें दूषित स्थानको छोड़ देना ही सबसे अधिक श्रेयस्कर है। यदि नगरके किसी दूरस्थ भागमें रोगका प्रादुर्भाव हुआ है तो अपने स्थानके जल वायुको शुद्ध बनानेका पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये। जलकी शुद्धिके लिए जलको भली-भांति औटा कर (गरम कर) एवं छानकर पीना चाहिये। स्थान एवं वायुकी शुद्धिके लिये अगर, तगर, धूप लकड़ीका चूर्ण सफेद चन्दनका चूर्ण, गुग्गुल, बच, लोबान, ऊद, जटामांसी, नागरमोथा, बाल-छड़, एवं नीमकी पत्ती आदि वायुशोधक तथा कृमिनाशक औषधियोंके द्वारा घरमें हवन करना चाहिये, अथवा अग्नि पर रखकर जलाना चाहिये। यह क्रम तो प्रातः सायं तब तक चलना चाहिये जब तक उस नगरसे प्लेगकी सत्ता सर्वथा दूर न हो जाय। गृहशुद्धिके लिए कच्चे घरोंको गोबरसे प्रतिदिन लीपना और पक्के मकानों को फिनाइल आदि कृमिनाशक घोलोंसे धोना चाहिए। आर्द्र (गीले और सीलनसे भरे) स्थानोंमें ही प्लेगके कीटाणु पनपते तथा परिवर्द्धित होते हैं। अतः मकानोंकी खिड़कियों और द्वारों को खोलकर सूर्यकी किरणोंके प्रवेश को अधिकाधिक अवसर देना चाहिये। तीव्र सूर्य तापमें प्लेगके कीटाणु स्वयं नष्ट हो जाते हैं। इन सब उपायोंसे प्लेग रोगका प्रतिरोध तथा शमन होता है। यहां कुछ-एक ऐसे प्रयोग लिखे जाते हैं जो इस रोगमें लाभकारी सिद्ध हुए हैं। जिन स्थानों पर एलोपैथी चिकित्सकों या वैद्योंकी सहायता सुलभ नहीं है उन स्थानों पर इन योगोंसे तात्कालिक लाभ उठाया जा सकता है।

कर्पूरादि वटी--

कपूर, सोनागेरू, निम्बफल की गिरी, चिरायता, पित्त-पापड़ा तथा शुद्ध हिंगुल इन सब द्रव्योंको १-१ तोला या समान भाग लेकर एवं पृथक-पृथक् कूट पीस, छानकर चूर्ण बनाना। अनन्तर धतूरेके पत्तोंके स्वरस से भली-भांति घोटकर १-१ रत्तीकी गोलियां बना लेना। प्लेगके आक्रमणके समय आवश्यकतानुसार दो-दो घंटेके बाद जलके अनुपानके द्वारा इन गोलियोंके सेवनसे प्लेग रोगमें लाभ होता है।

कर्पूरादि वटीके अतिरिक्त संजीवनी वटी, बृहत्कस्तूरी भैरव तथा लक्ष्मीविलास रस आदि शास्त्रीय औषधें भी लाभकारी सिद्ध हुई हैं। सन्निपात रोगोक्त चिकित्सा तथा पथ्यापथ्य प्लेग रोगमें भी हितकारी सिद्ध हुआ है।

प्लेगरोगमें कुछ एक बाह्य प्रयोग--

बगुलाके पंख दो भाग और सज्जीखार १ भाग दोनों चीजोंको पानीसे पीसकर तथा गर्म करके दिनमें २-३ बार प्लेगकी गांठ पर लेप करनेसे प्लेग की गिल्टी बैठ जाती है या पक कर फूट जाती है। रोगी स्वस्थ हो जाता है।

—जलधनिया, लटकारी बूटीकी २ तोला पत्तियोंको बिना पानी डाले भांगके समान पीसकर रुपयेके बराबर दो टिकियां बनाना चाहिये। इन टिकियोंको रोगीकी कलाईके ऊपर और नीचे दोनों भागमें रखकर कपड़ेकी पट्टी से बांध दें। ३ घण्टे बाद पट्टी खोलने पर

प्रतिश्याय

[लेखक—एक अनुभवी सज्जन]

(वर्ष ७ 'वसन्ताङ्क' से आगे)

भूत्वा भूत्वा प्रतिश्यायो यस्याकस्मान्निवर्तते ॥
स पक्वो वाप्यपक्वो वा स तु सर्वभवः स्मृतः ॥

१ जुकामका बार-बार होना।
२ " स्वयं ही मिट जाना।
३ " परिपक्व हो कर मिट जाना।
४ " बिना पके मिट जाना।

इस प्रकारके जुकामको त्रिदोषज अर्थात् सन्निपात प्रतिश्याय कहते हैं और यह आगे असाध्य हो जाता है। तथा बहुत सुयोग्य चिकित्सक द्वारा ही इसका निवारण हो सकता है।

प्रक्लिद्यते पुनर्नासा पुनश्च परिशुष्यति ।
पुनरानह्यते चापि पुनर्विव्रीयते तथा ॥
निश्वासोवातिदुर्गंधो नरो गंधं न वेत्ति च ।
एवं दुष्टप्रतिश्यायं जानीयात्कृच्छ्रसाधनम् ॥

१ जिस प्रतिश्यायमें अधिक नाक बहे अर्थात् नासिकासे बहुत पानी निकले।
२ " " " बार बार नासिकाका सूखे रहना।
३ " " " नासिकाका रुक जाना और श्वास लेनेमें पीड़ा प्रतीत होना।
४ " " " नासिकासे श्लेष्मा स्वयं बहने लगे।
५ " " " श्वास द्वारा दुर्गंध आवे।
६ " " " किसी प्रकारकी सुगन्धि अथवा दुर्गंधिका ज्ञात न होना॥

इस प्रकारके प्रतिश्यायको कष्ट साध्य कहते हैं, अर्थात् बहुत योग्यतासे और बहुत समयमें चिकित्सा द्वारा लाभ होता है।

रक्तजे तु प्रतिश्याये रक्तस्रावः प्रवर्त्तते ।
ताम्राक्षश्च भवेज्जन्तुरुरोघात प्रपीड़ितः ॥
दुर्गन्धाच्छ्वास वदनो गंधानपि न वेत्ति सः ॥

१ रक्तज प्रतिश्यायमें नासिकासे रक्त बहता है।
२ ,, ,, नेत्र रक्तवर्ण हो जाते हैं।
३ ,, ,, छातीमें दर्द हो जाता है।
४ ,, ,, मुखसे दुर्गन्ध आती है।
५ ,, ,, नासिकासे भी श्वासमें दुर्गन्धका आना।

सर्व एव प्रतिश्यायानरस्याप्रतिकारिणः ।
दुष्टतां यान्ति कालेन तदाऽसाध्या भवन्ति च ॥
मूर्च्छन्ति कृमयश्चात्र श्वेताः स्निग्धास्तथाऽणवः ।
कृमिजो यः शिरोरोगस्तुल्यं तेनास्य लक्षणम् ॥

१ प्रतिश्यायकी चिकित्सा न करने से।
२ ,, पुराना हो जाने से।
३ सब प्रकारका प्रतिश्याय दूषित हो जाता है।
४ जब प्रतिश्याय असाध्य हो जाता है तब सफेद चिकने कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं, इसका निदान आगे कृमिरोगमें

टिकियोंके स्थान पर दो फफोलें पड़ जायेंगे। टिकियों को हटाकर और कलाई को गर्म पानी से साफ कर फफोलों पर घृत लगा देना चाहिए। १-२ दिनमें फफोले स्वयं फूट जायेंगे और प्लेग रोगका दूषित विष निकल जानेसे रोगीको आरोग्य लाभ होगा। ज्वर आदि उपद्रव स्वयं शांत हो जायेंगे।

—प्लेगकी गांठ पर रुईकी फुरहरीसे "भिलावाका तेल" लगानेसे गांठ बैठ जाती है, या फफोले पड़कर फूट जाती है।

विशेष--

सर्व साधारण जनताको प्लेग जैसे जन-संहारक भयङ्कर रोगसे आत्म-रक्षाके लिए संक्षेपमें कुछ उपचार बतलाए गए हैं और इन उपचारोंसे तात्कालिक लाभ भी होता है, फिर भी प्लेग रोगकी चिकित्सा किसी विद्वान् चिकित्सकसे ही कराना चाहिये।

जब यह कड़े हो जाते हैं तो छाती पर पहुँच कर राजयक्ष्मा अर्थात् तपेदिक श्वास आदि महा भयंकर इन्फ्लूएंजा रोग हो जाता है और इसके अतिरिक्त अन्य प्रकारके बहुतसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

बाधिर्य मान्ध्यमघ्रत्वं घोरांश्च नयनामयान् ।
शोथाग्निसादकासादीन्वृद्धाः कुर्वन्ति पीनसाः ॥

१ सूजन का आना।
२ अग्नि मन्द हो जाना।
३ स्वासका होना।
४ खांसी ,, ,,
५ बहरापन हो जाना।
६ अन्धापन ,,
७ पूर्णायु बिना बुढ़ापा आ जाना।
८ किसी प्रकार की सुगन्ध अथवा दुर्गन्धका न आना।
९ आंखों के अन्य रोग, जैसे आंखों का दुखना आदि।

अर्बुदं सप्तधा शोथाश्चत्वारोऽर्शं चतुर्विधम् ।
चतुर्विधं रक्तपित्तमुक्तं घ्राणेऽपि तद्विदुः ॥

१ सात प्रकारके फोड़े हो जाते हैं।
२ चार ,, की सूजन हो जाती है।
३ ,, ,, ,, बवासीर ,, ,, ।
४ ,, ,, ,, रक्त पित्त हो जाना।
५ अनेक प्रकार के नासिका रोगों का हो जाना। (क्रमशः)

दूध-घीकी शुद्धता

'आग' मार्का घी-सम्मेलनके छठे अधिवेशनका उद्घाटन करते हुए भारत सरकारके खाद्य-मन्त्री श्री जयरामदास दौलतरामने सभी खाद्यसामग्री विशेषकर घी-दूधकी शुद्धतापर बड़ा जोर दिया। उन्होंने ठीक ही कहा कि "जब तक शुद्ध घी-दूधके उद्योगको प्रगति नहीं मिलती तब तक जन-स्वास्थ्यमें शीघ्रता के साथ उत्तरोत्तर ह्रास होता जायगा।" घीकी शुद्धता बनाये रखनेके लिये उन्होंने कई उपयोगी सुझाव रखे, जिनमें मुख्य यह हैं कि 'आग' मार्का घी-व्यवस्था बढ़ाई जाय, घीके उत्पादन तथा बिक्रीके लिए सहकारी आधार पर संस्थाएँ बनाई जायें और खाद्य-मिलावट विरोधी कानूनका कड़ाईसे पालन किया जाय।" ये सब सुझाव अच्छे हैं और इनसे कुछ लाभ भी होगा, पर हमारी रायमें जब तक नकली घीका बनना बन्द न होगा उसकी शुद्धता न रह सकेगी। कहा जा सकता है कि 'जब पर्याप्त घी नहीं मिलता, तो काम चलानेके लिए 'वनस्पति' का प्रयोग क्यों नहीं किया जाय?' पर दिखाई तो यह देता है कि 'वनस्पति'के चल जानेसे शुद्ध घी खानेकी आदत ही लोगोंमें से चली गई। यदि घी न मिले तो उसके उत्पादनके लिए लोग स्वयं प्रयत्नशील हों, पर जब नकली वस्तुसे काम चल जाता है, तब असलीकी ओर ध्यान ही नहीं जाता। पहले जिन्हें घी नहीं मिलता था, वे शुद्ध तेलसे काम चलाते थे, जो नकली घीसे कहीं अधिक पौष्टिक है परन्तु आजकल तो प्रायः लोग 'वनस्पति' लेने ही दौड़ते हैं। इसलिए उसका बनना बन्द होना ही चाहिये।

ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः ।
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते ।
तस्मिँल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदुनात्येति कश्चन एतद्वै तत् ।

जिसकी जड़ ऊपर की ओर और शाखाएँ नीचे की ओर हैं वही विशुद्ध ज्योतिः-स्वरूप है, वही ब्रह्म है और वही अमृत कहा जाता है। सम्पूर्ण लोक उसी में आश्रित हैं, कोई भी उसका अतिक्रमण नहीं कर सकता। यही निश्चय वह ब्रह्म है।

श्री महात्मा सुन्दरदास जी

[लेखक—श्री विद्याधर विद्यालङ्कार]

यह लेख श्री स्वामी रामानन्दजी रामकुटिया, सप्तसरोवर हरिद्वारकी अपने अनुभवकी घटनाओं पर लिखा गया है। वास्तवमें इन महात्माका चरित्र जीवन्मुक्त महात्माका चरित्र है। इसे 'श्रीस्वाध्याय'में क्रमशः देकर सम्पादक जी पाठकोंको लाभ पहुंचाने का साधन बनेंगे इसी विचारसे यह पवित्र चरित्र नीचे लिखते हैं।

महात्मा सुन्दरदासजी की जन्मभूमि पटियाला थी। जातिके ये वेदी खत्री थे। बाल्यकालमें इनके पिता मर गये थे। इनके चाचा गुरुद्वारेमें ग्रन्थी थे। पटियालेसे किसी कारणवश ये जम्मूस्टेटमें अपने चचाके साथ ही आ गये थे। यहाँ झेलम नगरसे १२, १३ मील दूर, झेलम नदीके किनारे अलीबेगके गुरुद्वारेमें इनके चचाने डेरा लगाया। यह जिला मीरपुरमें है। यहां इनके चचा गुरु ग्रन्थसाहबका पाठ करते थे। सुन्दरदासजी बालक थे। कुछ काल पीछे इनके चचाका देहान्त हो गया। अब सुन्दरदासजी उसी गुरुद्वारेमें ही रहने लगे। कुछ काल पीछे इन्हें विद्याभ्यास का शौक हुआ। वे वहां आर्यसमाजके स्कूलमें विद्या पढ़ने लगे। उन्होंने हिन्दी, संस्कृत तथा कुछ अंग्रेजीका भी अभ्यास किया। इन्हें गुरु ग्रन्थसाहबका पाठ सुनने से, अपने धर्मात्मा चचाकी सङ्गतिसे तथा वहां पर साधु सन्तोंके आने और उनके साथ वार्त्तालाप वा सत्संग करने से बाल्यकाल में ही वैराग्य हो गया था, जो विद्याभ्यास करने से फिर और भी अधिक बढ़ गया। विद्याभ्यास त्याग कर ये गुरुद्वारे में ग्रन्थसाहब का पाठ करने लगे। इनका दिन में ग्रन्थ साहब का पाठ करना, रात में रामनाम का स्मरण करना, बस यही धारणा बन गयी थी। प्रतिदिन इनमें दया तथा सन्तोंके चरणोंमें श्रद्धा बढने लगी। लङ्गरमें जो सामान आता था उसे गरीबोंमें बांट देते थे अथवा सन्तों की सेवामें लगा देते थे। इस प्रकार दिन बीत रहे थे।

कुछ वर्ष इसी तरह बीत गये। एक दिनकी घटना है कि कृष्णपक्ष अमावस्याकी रात्रि थी। चारों ओर घोर अन्धकार छाया हुआ था। मूसलाधार वर्षा हो रही थी। ऐसे समय रातके एक बजे दो साधु गुरुद्वारेके समीप आ कर खड़े हो गए। वे परस्पर बातें करने लगे—"इस समय रात में हमें भिक्षा कौन देगा। हम भूखे हैं। चलो कमण्डलमें जल तो है ही, इसे पीकर बरामदेमें ही सो जाते हैं। प्रातःकाल चार बजे चल पड़ेंगे। जहां प्रभुको स्वीकार होगा भिक्षा मिल ही जायगी।" जब ये दोनों सन्त बातें कर रहे थे, उस समय सुन्दरदास जी गुरुद्वारेके अन्दर "राम-राम" के जपमें लवलीन हो रहे थे। बाहर भी रामभक्त बैठे थे, भीतर भी रामनामका जप हो रहा था। कैसा आश्चर्य था, नाम और भक्त दोनोंका समागम हो रहा था। उनकी सूक्ष्म ध्वनिमें की हुई बातें सुन्दरदासजी के कानोंमें पहुंचीं, सुन्दरदासजी तुरन्त उठे और अन्दरसे फाटक खोल दिया। देखा तो दो मूर्त्तियां बरामदेमें बैठी हैं। ऐसे अतिथि भगवान घर पर आए देख वे उनके पास पहुँचे और उनके चरणोंमें गिर पड़े। महात्माके चरण और सुन्दरदासजी का शीस दोनोंका सम्बन्ध हुआ। और क्या शेष रह गया था। हृदयके कपाट खुल गए, प्रेमके आंसू बहने लगे। कण्ठ गद्‌गद हो गया। बोलने की शक्ति न रही। प्रेमके समुद्रमें गोते खा रहे थे। कुछ देर पीछे धैर्य हुआ तो नेत्र खोले। बड़े विनय पूर्वक दोनों महात्माओंके चरणोंमें प्रार्थना करने लगे कि आप गुरुद्वारेके अन्दर चलिए। दोनों ही महात्मा सुन्दरदासजीके प्रेमभक्तिकी पराकाष्ठा देख कर प्रसन्न हुए और गुरुद्वारेके अन्दर चले गये। चटाई बिछी हुई थी वहीं बैठ कर विश्राम किया। सुन्दरदासजी अतिथियोंके लिए सामान ढूंढने लगे कि कुछ हो तो भोजन बनाऊं। ढूंढने से एक हांडीमें पाव भर आटा पड़ा हुआ मिल गया। उसे गूंधा चूल्हेको जगा दो नमकीन टिकर बना दिए। महात्माओं की सेवामें भेंट किए। उन्होंने भी प्रेमसे भोग लगाया, फिर

विश्राम करने लगे। इधर सुन्दरदास जी भी सो गए। जब प्रातःकाल पांच बजे उठ कर देखा तो साधु चले गये थे। सुन्दरदासजी ने इधर उधर उनकी बहुत तलाश की, पर वे कहीं दिखाई न दिए।

अब तो सुन्दरदासजी को बड़ा दुःख हुआ। वे पश्चात्ताप करने लगे, विचारने लगे कि महात्मा आए थे पर सेवा न हो सकी। इसी प्रकार वियोगमें पश्चात्ताप करते हुए परमात्मासे प्रार्थना करने लगे। "हे देव! या तो इस शरीरका प्राण निकल कर आपके चरणोंमें रहे या रहना है तो आपके स्वरूप महात्माओंके चरणोंमें लगे। तभी इस जीवनका रहना सफल है। इसी प्रकार प्रार्थना करते जायें और रोते जायें। इसी प्रकार दिन भर बीत गया। पश्चात्तापकी उत्कण्ठा हृदयमें उमड़ पड़ी। विरहकी ज्वाला भड़क उठी। ग्रन्थसाहब कौन पढ़े, रोटी खाना भी बन्द हो गया। पश्चात्तापमें उदास हो रहे थे। सायङ्काल आ गई पर धैर्य न हुआ। रातमें सन्तोंकी मूर्तिका ध्यान करते २ सोने लगे। निद्रा भी आ गयी।

कुछ ही घड़ी बाद नींद एकदम खुली। देखें तो दोनों साधु पासमें बैठे हुए हैं। सुन्दरदासजी आश्चर्यमग्न हो गए। सोचने लगे कि फाटक तो अंदरसे बन्द है फिर किस रास्तेसे ये अन्दर आए। ये कौन हैं क्या स्वरूप हैं, इसी विचारमें मग्न हो कर सोचने लगे कि फिर कहीं इनसे मेरा वियोग न हो जाय। इस वियोगको सोच कर उनके चरणोंको पकड़ कर रोने लगे। तब दोनों महात्माओंने अपने हाथोंसे पकड़ कर उन्हें उठाया और अपनी छातीसे लगाया तथा आशीर्वाद देते हुए कहने लगे "बेटा! जिस परमपिताके चरणोंकी प्राप्तिकी तुम्हें अभिलाषा है, जिस परम धामकी तुम्हें इच्छा है उसी परमधामसे आने वाले हम साधु हैं। सच्चे प्रेमी और भक्तोंके उद्धार करने के लिए हम जगत्में विचरते हैं। अब उठो, धैर्य धरो। प्रातःकाल उठ कर एक कम्बल कन्धे पर डाल कर पूंछकी रियासतमें "बुआ" ग्रामके पास रह कर तपस्या करो। भिक्षा मांग कर भोजन करो। परन्तु हमारे यहां आने की बात किसीसे न कहना। ऐसा कह कर वे दोनों साधु लोप हो गये। तब तो सुन्दरदासजी की प्रसन्नताका अन्त न रहा। वे अपने को बड़ा भाग्यवान् समझने लगे कि भगवान्की बड़ी कृपा हुई जो भगवान्के परमदासने मुझे आ कर शिक्षा दी।

दूसरे दिन सुन्दरदासजी अपना कम्बल कन्धे पर डाल कर "बुआ" ग्राममें पहुंच गये। वहां गांवसे बाहर एक छोटी सी कुटिया बना कर रहने लगे। भिक्षा मांग कर भोजन करते थे। इन्द्रिय निग्रह करते हुए रामनामका स्मरण करते थे। इसी प्रकार जपतप करते हुए दो वर्ष बीत गये। दो वर्ष पूर्ण होनेके दिन रातको वे ही दोनों साधु वहां आ पहुंचे। उनका दिव्य दर्शन अलौकिक था। इधर सुन्दरदास जी का हृदय भी दिव्य बन चुका था। सुन्दरदासजीने उठकर दोनोंके चरणोंमें प्रणाम किया और सादर पूजा की। पासमें रखे हुए मक्कीके आटेमें गुड़ डालकर प्रसाद बनाया और प्रेमसे दोनोंको भोग लगाया। भोजनके उपरांत दोनों सन्तोंने सुन्दरदासजीके सिर पर हाथ धर कर आशीर्वाद दिया अर्थात् वरदान दिया। कहा, "जहांसे तुम आये हो वहीं जाओ। वहां रह कर जो कुछ तुम्हें विभूति प्राप्त होगी वह सब सन्त साधुओंकी सेवा तथा अनाथोंकी सेवामें खर्च करो। साधु महात्माओंको भगवान् रामका स्वरूप जानकर उनकी सेवामें लवलीन रहो। आपको जीवन्मुक्ति प्राप्त होगी। जब-जब आप इच्छा करोगे तब-तब भगवान् रामका भी दर्शन होता रहेगा।" यों कहकर वे दोनों साधु अदृश्य हो गये। सुन्दरदास जी भी कम्बल तथा कमण्डलु उठा उसी अलीबेगके गुरुद्वारेमें जा पहुंचे। वे वहीं रहने लगे।

अलीबेगमें कुछ अरोड़े खत्री भी रहते थे। सुन्दरदास जी के दिव्यदर्शनसे वे सब बड़े प्रसन्न हुए। एक सरदार खुशहालसिंह सिक्ख भी वहीं रहता था। वह बड़ा सरदार था। झेलम नगरसे उसकी साली उसके घर आई थी। वह बड़े अमीर घरसे थी पर सन्तान न होनेसे दुःखी रहती थी। अलीबेगमें वह बहनसे मिलने आयी थी। एक दिन बहनने उससे कहा "यहां सुन्दरदास जी महात्मा रहते हैं, चलो उनके दर्शन करें।" दोनों बहिनें दर्शनोंको चल पड़ीं। हाथमें बादाम लेती गईं। वहां जाकर बादाम चरणोंमें भेंट कर दिए। सुन्दरदासजीका हृदय इतना

शुद्ध, विशाल तथा पवित्र बन चुका था कि वे भूत भविष्यत् वर्तमानको जान लेते थे। उस देवीकी इच्छाको जानकर तीन बादाम उसे दिये। कहा —'ले इन्हें खाले!' फिर कहने लगे 'देवी! तू एककी इच्छासे आई है। लेले एक तेरा है, एक मेरा है और एक रामका है। तीन सन्तान तेरे घरमें होंगीं।' देवीने तीनों बादाम खा लिए।

कुछ दिन पाकर सन्तानका शुभागमन हुआ। बड़ा सुन्दर शोभायुक्त तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ। घरमें बड़ी खुशी हुई। उस देवीने तब उस सन्तानके साथ १० हजार रुपये नकद तथा कुछ फलपुष्पादि सामान तय्यार करके साथ ले जाकर सुन्दरदास महात्माजीके चरणोंमें रखा। लड़केको उनके चरणोंमें डाल दिया। रुपये आदि सब सामान भी चरणोंमें भेंट धर दिये। परन्तु सुन्दरदासजीको धनसे कुछ प्रयोजन नहीं था। तब देवीने प्रार्थना की कि गुरुद्वारा कच्चा है इस रुपयेसे इसे पक्का बना दिया जाए। गुरु द्वारा पक्का बना दिया गया। वहां पर गुरुग्रन्थसाहबका पाठ तथा रामनामका कीर्त्तन प्रतिदिन होने लगा। तपके प्रभावसे सब लोग वहां आने लगे। जो जिस कामनासे वहां जाता था उसकी वह कामना पूरी हो जाती थी। लंगर जारी होने लगा, साधु-सन्तोंकी सेवा भी श्रद्धासे होने लगी। ऐसी ब्रह्मदृष्टिसे सेवा होती थी कि कुत्ते, बिल्ली, चाण्डाल, ब्राह्मण, हिन्दु, मुसलमान सबको एक समान भोजन मिलने लगा। महात्माके मनमें नीच ऊँचका भेद-भाव नहीं था। वे सबको रामस्वरूप समझकर सबका ही स्वागत सत्कार करते थे।

एक दिन एक जन्मसे अन्धा चमारका बालक महात्मा सुन्दरदासजीकी कीर्ति सुनकर वहांके लिए चल पड़ा। धीरे २ पूछते २ अलीबेगमें आ पहुँचा। दोपहर ११ बजेका समय था, वहां गुरुद्वारेमें हरिकीर्त्तन हो रहा था। सुन्दरदासजी प्रेमसे रामधुनमें मस्त हो रहे थे। वह बालक द्वार पर पहुँच हरिकीर्त्तन सुनने लगा। १२ बजे कीर्त्तन समाप्त हुआ। सब भोजन पानेकी तय्यारी करने लगे। अन्धा चमार बालक वहीं बैठा है। अन्धा होनेसे रास्तेका पता नहीं कि कहां जाकर बैठे।

लोग पंक्ति बांधकर बैठने लगे पर बालक वहीं बैठा रहा। किसीने कहा 'रे बालक! उठ, पंक्तिमें बैठकर प्रसाद पा ले। पर बालक नहीं उठा। वह कीर्त्तनकी धुनिमें मग्न हो रहा था और अपनेको तुच्छ मानकर भगवानसे प्रार्थना कर रहा था कि 'हजारों आदमी महात्माके दर्शन करके कृतार्थ होते हैं, मेरे भी नेत्र होते तो मैं भी दर्शन करता।' इसी विचारमें था कि किसीने फिर उसे प्रसाद पानेको कहा। पर सुने कौन, वह तो विचार सागरमें डूबा हुआ था। सुनता कहांसे। पंक्तिमें प्रसाद बट रहा था। सुन्दरदासजी अभी तक सत्संग-भवनमें ही बैठे थे। जब पूर्णतरहसे प्रसाद सबको बंट गया तो महाराजसे प्रार्थना की गयी कि उठें और पंक्तिको देखें। महाराज सुन्दरदासजी उठे और अपने प्रेमभरे नेत्रोंसे सब सत्संगियों पर दृष्टि डाली। दृष्टि पड़ते ही देखते हैं कि पंक्तिके पास एक ओर एक अन्धा बालक बैठा है। न उसके पास पत्तल है न प्रसाद है। पूछा कि —'इसे प्रसाद क्यों नहीं दिया गया।' किसीने कहा- 'एक तो यह अन्धा है फिर चमार है। भोजनके बाद इसको प्रसाद दे दिया जायेगा।' ये शब्द उनके कानमें पड़े। वे महान् आत्मा थे। उनमें नीच-ऊँचका भेद-भाव ही न था। वे बोले "भाई! चमार तो दृष्टि वालोंके लिए है, सृष्टि वालोंके लिए नहीं। सृष्टिकर्त्ताका दरबार तो एक है जो चमड़ेमें दृष्टि रखते हैं उनको चमार कहते हैं। क्या भगवान्के दरबारमें आने वाले भी चमार ही रहे।" ऐसा कह कर वे उठे और बालकके दोनों हाथ पकड़ कर उसे अपनी छातीसे लगा लिया। अपने ओढ़े हुए दुपट्टेसे उस बालकके दोनों नेत्रोंसे आंसू पोंछने लगे। पोंछना तो क्या था उसके दोनों नेत्र खोलने लगे, दिव्यतेज अन्दरसे फूट पड़ा। उस बालककी भावना पूरी हो गयी। बालकके नेत्र खुल गये। वह देखने लगा इस बातको देख कर सारी पंक्तिमें हाहाकार मच गया। सब लोग आश्चर्यमग्न हो गये। महात्माजी ने बालकको लेकर ग्रन्थसाहबके पास वाले छोटे कमरेमें बिठा

वायदा व्यापार—

तोफान या खेला (COVERING)

सट्टा बाजारका एक मनोरंजक किन्तु भयंकर सिद्धान्त

[लेखक – श्री स० अ० रानडे बी० ए०, बी० टी० एडवोकेट]

वायदे बाजार में तेजी-मंदी होनेके अनेकों कारण हो सकते हैं; परन्तु उसमें भी कई बार 'खेला' होता है। 'खेला' अथवा 'तोफान' होने पर प्रायः बाजार एक ही रुख से चलता है और बाजारकी गति सदाकी भांति स्वाभाविक न होकर कृत्रिम हो जाती है। इसको अधिक स्पष्ट करनेके लिए उत्तर गुजरात में चलनेवाले 'इसबगोल, नामक बाजार का उदाहरण दिया जा रहा है।

गुजरात में इसबगोलका सट्टा कैसे प्रारम्भ हुआ?

लगभग चार वर्ष पूर्व पंद्रह जगह इसबगोलका सट्टा शुरु हुआ क्योंकि सरकार ने रुई, अलसी मूंगफली, अंडी आदि के सारे वायदे—बाजार कानूनन बंद कर दिये थे। 'इसबगोल' की उपज केवल उत्तर गुजरात में ऊंझा और सिद्धपुर प्रान्तोंमें ही होती है। इसकी वार्षिक उपज प्रायः दो लाख मन हैं। यह माल पंजाब और अमेरिका जाता है। लड़ाईके जमानेमें विदेशमें माल जाना बन्द हो गया था। पहले यह सट्टा केवल ऊंझामें ही चलता था; परन्तु बाजार बन्द हो जानेसे कलोल, विसनगर, पाटण आदि स्थानोंमें भी इसका सट्टा चालू हो गया। बड़े सट्टेबाजों के ध्यानमें यह बात शीघ्र हीं आगई कि माल थोड़ा है और सट्टेके गांवोंकी संख्या अधिक है इस कारण इसमें तेजी होना चाहिये। तुरन्त ही जगह जगहके धनवान् सट्टे वाले इकट्ठे हुए और उन्होंने जगह जगह ७॥ रु०के भावमें खरीद करना शुरू कर दिया। सटोड़ियोंकी इस गुट्टबन्दीको व्यापारिक भाषामें Syndicate कहते हैं। जब दस-बीस लोगोंने इस तरह मनमाना खरीद करना शुरू किया तब भाव बड़ी तेजसे बढ़ने लगे। आगे चलकर ६ रु० और १० रु०के भाव निश्चित किये गये। फिर भी वायदेके आखिरी दौर में १० रु० भाव हो ही गया।

इसबगोल के खेलेका एक प्रत्यक्ष उदाहरण

ऐसा तोफान या खेला करनेमें तेजी-मन्दी खाई जाती है और उससे खेला वालोंको मदद ही मिलती है। मान लीजिये ७॥ रु०के भावमें खेला शुरू हुआ और मासिक तेजी-मन्दी साढ़े तीन आने है। अभी वायदा समाप्त होनेके ६ माह बाकी हैं और प्रति माह डेढ़ लाख मनकी तेजी–मन्दी मिल रही है। मतलब यह कि सिंडिकेट को ६ माह में तेजी-मन्दीके लगभग दो लाख रुपये मिलेंगे। सिंडीकेट ७॥ रु० से ८॥ रु० तक के भावमें सिर्फ खरीद कर रही है उसे ६ माहमें प्रतिमन २१ आने (६×३॥) तेजी-मन्दी अवश्य ही मिलेगी। अर्थात् वायदेके आखिरी दिन उनकी १॥ लाख मनकी खरीद प्रति मन १ रुपया ५ आना सस्ती पड़ गई। मान लीजिये उन्होंने बाजार स्थिर रहनेके लिये ८ लाख मन और दूसरी खरीद कर ली है। इस हालतमें उन्हें कुल ६॥ लाख मन इसबगोल मिलना

दिया। उसे कहा "भाई, अब राम राम जपो। तू आजसे ही पवित्र और शुद्ध है।"

मैंने (स्वामी रामानन्दजीने) उन महात्माके दर्शन किये। कभी २ वे रात्रिमें मेरे पास आकर बैठा करते थे। कभी कभी अपनी तरंगमें आकर कहा करते थे, "मुझे उपनिषदोंके श्लोक सुनाया करो।" कुछ दिनके बाद एक दिन उन्होंने अपने मुखसे अपना सारा हाल सुनाया। इस विषयमें दो चार बातें जो मुझे प्रत्यक्ष हुई हैं सब लिखूंगा। १६३५,३६ ईसवीमें वहां जो कुछ हुआ वह सब भी लिखूंगा। वह सब मैंने स्वयं देखा है। दो कोढ़ियों को उन्होंने अच्छा कर दिया था, कइयोंको धन दिया था। वे बोलते कुछ नहीं थे। जो जिस भावनासे उनके पास जाता था, उसकी वह सब इच्छा पूर्ण हो जाती थी। (क्रमशः)

चाहिये; परन्तु ऐसा न होकर उन्हें नई फसल दो लाख और पुरानी एक लाख मिलाकर कुल तीन लाख मन माल मिलेगा। शेष ६॥ लाख मन माल १० रु० के भाव में बेचा जायगा। यद्यपि हाजरका भाव ६ रु० है (हाजरका भाव भी ऊंचा होता है) और ८ रु०के भावमें तीन लाख मन माल मिल गया तो तीन लाख मनके पीछे ६ लाख मनका घाटा उठाना पड़ेगा। पर उन्हें दूसरे ६ लाख मन में १२ लाख मिल जाएंगे। साथ ही दो लाख तेजी-मन्दी भी मिलेगी। इस तरह उन्हें इस सौदेमें आठ लाख रुपये अवश्य ही मिलेंगे। ये दूसरोंको माल न मिलने देनेके लिये हाजर माल भी खुद ही लेते रहते हैं।

माल थोड़ा और सट्टा बड़ा—उक्त व्यापारमें मुनाफा मिलनेका एकमात्र कारण यह है कि माल थोड़ा होता है और सट्टा अधिक होता है। इसके अतिरिक्त तेजीका सिण्डीकेट बनने पर बहुतसे अन्य लोग सिण्डीकेट की नीतिके मुताबिक व्यापार करने लगते हैं। व्यापार थोड़ा होते हुए भी उसे अनेक लोग करते हैं। इस कारण सिण्डीकेटका जोर बढ़ता जाता है; उसकी पकड़ मजबूत होती है; मन्दीवालोंको भागना तक मुश्किल हो जाता है और परिणामस्वरूप वे अपने बिक्रीके सौदे छोड़ देते हैं।

उक्त व्यवहारके बाद पुनः इसबगोलका वायदा निकला उसमें भी तेजी वालोंका तोफान शुरू है तथा डिलीवरीका समय दूर होते हुए भी ऊंचे भावोंकी अपेक्षा भाव सिर्फ १२ आने ही गिरा हुआ है।

सोने चांदीके बाजारोंमें खेला

पहले सोने-चांदीके बाजारोंमें एक माहका वायदा हुआ करता था। सरकारने चार वर्ष पूर्व इसकी भी मुद्दत एक हफ्ता कर दी और यह प्रतिबन्ध लगा दिया कि इस मुद्दत में सौदे बराबर कर डालना चाहिये। साथ ही बोर्डने यह भी निश्चित कर दिया कि एक हफ्तेके अन्तमें डिलिवरी लेने या देनेकी जिनकी तैयारी न हो उन्हें जुर्माना देना चाहिये। नतीजा यह हुआ कि सोने चांदीके बाजारोंमें भी खेला शुरू हो गया। रिजर्व बैंक टेंडर पद्धतिसे जितना माल देता है उतना सब माल खेले वाले खरीदते हैं तथा बाजारका हाजर माल भी खरीदते रहते हैं और इस प्रकार बाजारोंमें हाजर मालकी तंगी निर्माण करना तथा दूसरी ओर वायदेमें मनमाना खरीदना इस खेलेका मुख्य सिद्धांत है। इस कारण बिक्री वालोंको या मन्दी वालोंको माल देना (वायदेके मुताबिक) बिलकुल असम्भव होने लगा। दूसरी ओरसे उन्हें प्रति सप्ताह चांदीमें १ रुपया और सोनेमें जुर्माना या बदलेके रूपमें आठ आना देना जरूरी होने लगा। इस तरह चांदी-सोना खरीदने वालोंको प्रति माह १०० तोले चांदीमें ४ रुपया और १ तोला सोनामें २ रुपयाके हिसाबसे निश्चित फायदा होने लगा। कहनेका मतलब यह है कि एक वर्षमें प्रति तोला लगभग ४८ और २४ रुपया लाभ हुआ। फलतः तेजी वालोंकी शक्ति बढ़ गई और सोना चांदीमें मन्दीके व्यापारके लिये कोई गुंजाइश नहीं रही। क्योंकि उसका नतीजा निश्चित रूपसे हानिकारक ही हुआ करता था। जिनके पास बहुत अधिक माल संगृहीत है वे भी ऐसा तोफान कर सकते हैं। वे काफी तेज भावमें डिलिवरी की तैयारीसे बेचते हैं—इसीको 'हेज करना' कहते हैं। कहना नहीं होगा कि खरीदने वालोंको माल लेनेकी तैयारीसे ही खरीदना ही पड़ता है। बहुधा खरीदनेवालोंकी यह तैयारी नहीं होती और इसी कारण भाव गिरने लगते हैं। भावका गिरना शुरू होते ही मूल विक्रेता सौदा बराबर कर लेते हैं। ऐसा करनेसे उन्हें मुनाफा तो मिलता ही है; साथ ही माल भी उन्हींके पास रहता है। ऐसे प्रयोग २-३ बार सुफल होने पर बेहद लाभ हो जाता है। सामान्यतः तेजीके खेले (Covering) का प्रमाण अधिक हुआ करता है।

कुशल खेले वाले बाजारों को झुलाते रहते हैं

यह नहीं कहा जा सकता कि आज तेजी या मन्दी के तोफान किये और कल फौरन सफलता मिल गई। क्योंकि तेजी के बाजार में भी मन्दी का दौरा आता रहता है और मन्दी के बाजारों में तेजी भी हो सकती है। आप जो तोफान करना चाहते हैं; उनके विरुद्ध भी व्यवहार बीच बीचमें करने पड़ते हैं; क्योंकि अन्य व्यापारी जब आपके विरुद्ध बेहिसाबी धन्धा करेंगे तभी वे आपके जालमें फंस सकेंगे; अन्यथा नहीं। इसीलिये कुशल खेले वाले बाजारों को सतर्कतापूर्वक झुलाते रहते हैं और अपना

अभीष्ट (फायदा) साध लेते हैं।

खेलेवालों की नीति के तत्व

"To catch people while napping" असावधानीमें हमला करना खेलेका एक मुख्य तत्व है। उसका दूसरा नियम, जब लोग बेहद मन्दीमें रहते हैं तब एक दम तेजी कर देना या जब बेहद तेजीमें होते हैं तब एक दम मन्दी कर देना है। खेलावालोंमें तीसरा गुण यह होता है कि वे इस बातका ठीक ठीक अनुमान लगा लेते हैं कि वे जो धन्धा कर रहे हैं, चाहे वह तेजी का हो या मन्दी का, उसकी प्रतिक्रिया (Reaction) क्या होगी, कितनी खरीद या बिक्री करनी चाहिये आदि। खेलावालों का यह भी फर्ज होता है कि वे इस बातकी ओर हमेशा ध्यान देते रहें कि खेला करते समय उनकी अपेक्षा अधिक धनिक व्यापारी उनके विरुद्ध हमला तो नहीं कर बैठेंगे। इसी कारण उन्हें बीच बीचमें थोड़ा मुनाफा खाकर अपने व्यापार को नीति बदलनी पड़ती है। कहना नहीं होगा कि वे तेजी मन्दीके अन्य कारणों पर भी गौर करते रहते हैं।

तेजी मन्दी के कारण

यह बात तो सत्य है कि मांगकी अपेक्षा माल अधिक होने पर भाव गिरता है और माल की अपेक्षा माँग अधिक होने पर भाव तेज होता है; लेकिन मांग बढ़ेगी या कम होगी, बाजार में माल अधिक आयगा या कम आयगा आदि बातोंका ठीक ठीक अनुमान लगाना और वह सही उतरना ही वायदे बाजारमें सफलता पानेकी कुंजी है।

उदाहरणार्थ रुईका बाजार लीजिये। इसमें हिन्दुस्तान में कपास की फसल कहां कहां होती है? फसल कौन से माह में आती है? अमेरिका तथा इजिप्शियन रुईका भाव कितना है? चालू फसल कम होगी या अधिक? हाजर मालका संग्रह कितना है? लम्बे धागे वाली रुई की स्थिति कैसी है? आदि अनेक बातोंका सूक्ष्म विचार कर रुईके व्यवहारमें दूरका अनुमान लगाया जा सकता है।

अस्थिर जनमनोवृत्ति तथा तेजी-मन्दी खानेवालों की नीति

परन्तु हमेशा जो घट-बढ़ होती है वह इस दूर तक सोचे हुए अन्दाज पर से नहीं होती और न सिर्फ अर्थ-शास्त्र का ज्ञान ही वहां काम देता है। यदि ऐसा होता तो न मालूम कबके हमारे अर्थशास्त्रके ग्रेज्यूएट व प्रोफेसर लक्षाधीश बन बैठते। इन बाजारोंमें 'जनमनोवृत्ति' को जानना ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात होती है और इस जनमनोवृत्तिको पलट देनेके लिये एक मामूली अफवाह भी पर्याप्त होती है। तेजी-मन्दी खाने वालोंकी नीति भी बाजारों पर सदा अपना असर करती रहती है। इस तरह बदलते रहने वाले बाजारोंमें कभी कभी जनमनोवृत्तिसे मनुष्य ठगा भी जाता है। ऐसी परिस्थितिमें अपने निजी अनुमान और इस जनमनोवृत्तिके बीच रहकर अधिकसे अधिक लाभ उठानेका प्रयत्न करना पड़ता है; क्योंकि यह कहना कठिन होता है कि ये दोनों बातें हमेशा सत्य ही उतरेंगी। उदाहरणार्थ एरण्डीका भाव ५ रुपये है और आपने यह अनुमान लगाया है कि बाजारमें तेजी होगी; मान लीजिये ऐसी स्थितिमें आपने एरण्डी खरीद ली है और १५ दिनके बाद जनमनोवृत्तिने पलटा खाया अर्थात् भाव रु० ४-८-० हो गया तो ऐसे समय आपका बाजार में टिके रहना असम्भव है; फलतः आप माल बेच देंगे। माल बेचने के बाद भाव ६ रुपया हो जाने पर भी वह आपके किसी काम का नहीं रहेगा। इस उदाहरणसे यह स्पष्ट हो जाता है कि बाजारोंमें मनकी स्थिति किस तरह डांवाडोल हुआ करती है।

वर्षा तथा आबहवा

हिन्दुस्थान आबहवाका प्रदेश है। यहांकी खेती बरसातकी वर्षा पर ही अवलम्बित होती है। यहां कपास, एरण्डी, अलसी आदि सभी फसलें होती हैं। अर्थात् वर्षा तथा आबहवा पर भी इन फसलोंकी तेजी-मन्दी अवलम्बित होती है। उचित समय पर यदि वर्षा नहीं हुई या होनेके चिन्ह दिखाई न दिये तो भाव एक दम तेज होने लगते हैं। और यदि इसी समय एकाएक वर्षा हो जाय तो भाव गिरने भी लगते हैं। वर्षा ऋतुके प्रारम्भमें ऐसी घट बढ़का होना अधिक सम्भव होता है। अमेरिकाकी रुई के बारे में भी ऐसा ही होता रहता है। वहांकी फसलोंके अनुमानका जागतिक रुई पर भी असर होता है।

फसलों के बारे में सरकारी अनुमान

बाजार भावोंके सम्बन्धसे फसलोंका सरकारी अनुमान अधिक विश्वसनीय समझा जाता है; क्योंकि उसी पर खास तौरसे बाजारोंका भवितव्य निर्भर होता है। सरकारी अनुमानके साथ ही लोगोंका निजी अनुमान भी रहता है; परन्तु अधिकतर सरकारी अनुमान पर ही तेजी-मन्दी कर सकते हैं।

प्रत्यक्ष फसलोंका दबाव (Pressure)

जब प्रत्यक्ष नई फसलें बाजारमें आने लगती हैं तब बाजारों पर उनका प्रभाव दिखाई देने लगता है। उदाहरणार्थ दीपावलीके बाद कपासकी फसल आते ही साहूकार किसानोंसे अपने अपने कर्जका तगादा करने लगते हैं। किसानोंको मजदूरोंकी मजदूरी चुकानी पड़ती है और लगान भी देनी पड़ती है। भारतीय किसानोंकी स्थिति इतनी अच्छी नहीं है कि वे कपास बेचे बिना लगान और मजदूरी दे सकें। स्वभावतः उन्हें अपना माल, भाव आगे चलकर बढ़ेगा या घटेगा इसका विचार किये बिना ही आज जो भाव मिलता है उसी भाव में बेचना पड़ता है। देहातोंके किसानोंके पाससे छोटे २ शहरों के व्यापारी माल खरीदते हैं और अपने पैसे वसूल कर लेनेकी दृष्टिसे वे उस मालको प्रमुख व्यापारिक केन्द्रोंमें हाज़र या वायदेमें बेच डालते हैं। इसी कारण बिक्री पर दबाव (Pressure) बढ़ जाता है और स्वभावतः भाव गिरना शुरू हो जाता है।

किसानों की दयनीय अवस्था

कभी कभी फालतू कारणोंसे भी मालकी मांग बढ़ती या घटती है और इससे विशेषतः गरीबोंको ही अधिक हानि सहना पड़ती है। इस गरीब श्रेणीमें अधिकतर भारतीय किसान ही आते हैं; उन्हें कोई पूछता तक नहीं। यदि इसके विपरीत देखा जाय तो मालूम होगा कि अमेरिकामें किसानोंको नुकसान न होने देनेके लिये कभी-कभी सरकार स्वयं कपास खरीद लेती है और भाव टिकाकर रखती है। इस कपासका संग्रह सरकारी गोदामोंमें किया जाता है और भावके ठीक धरातल पर आते ही कर्जके रूपमें रखा हुआ यह कपास (Loan) बिक्रीके लिये निकाल दिया जाता है। हिन्दुस्तान में ऐसी कोई भी योजना नहीं है। परिणामस्वरूप भारतीय कृषक हमेशा सट्टे वालों की कृपा पर जीते हैं; याद रहे यदि सट्टा बाजार न हो तो उसे इससे भी अधिक मार खानी पड़ेगी।

कच्चे मालका निर्यात—हिन्दुस्थानमें पैदा होने वाला कच्चा माल (कपास, एरण्डी, अलसी, आदि) लगभग निर्यात ही होता है। अतः बाजार भावों पर गोर करते समय ऐसी वस्तुओंके निर्यातको दृष्टिके सामने रखना आवश्यक जान पड़ता है। यह तो सभी जानते हैं कि जापानी युद्ध शुरु होते ही इस डरसे रुई-बाजारमें मन्दी छा गई थी कि अब रुई विदेशों के लिये निर्यात न होगी।

पक्के माल का भाव—पक्के मालके भावों का कच्चे मालके भावों पर निश्चितरूपसे असर होता है। जैसे जैसे कपड़ा, सूत आदि महंगा होता जाता है वैसे वैसे कपास भी महंगा होता जाता है। खानेका तेल तेज होते ही उसका कच्चा माल भी (मूंगफली, तिल्ली, नारियल आदि) महंगा हो जाता है। इसके विपरीत तेलका भाव उतरते ही इन वस्तुओंका भाव भी उतर जाता है।

फसलों की रिपोर्ट—वायदा बाजार ऐसा स्थान है जहां नित्य ही भावों में घट-बढ़ होना जरूरी होता है; भाव का स्थिर न रहना ही उसकी विशेषता है; वहां घट-बढ़ तो नित्य ही होती रहती है। इसके लिए प्रतिदिनकी बदलती हुई आबहवा और व्यापारिक अफवाहोंकी सूक्ष्म जानकारी रखना आवश्यक होता है। कपास उपजाने वाले किसी प्रांतमें ठीक तरहसे वर्षा न होने या खड़ी फसल पर हिम गिरनेकी रिपोर्ट आतेही यह समझ लीजिये कि भाव तेज हो गये। इसके विपरीत रिपोर्ट आते ही भाव गिर जाते हैं। अमेरीकन जलवायुकी रिपोर्टका भी यही अर्थ लगाया जाता है। अमेरिकामें टिड्डियोंका हमला होने पर भी फसल कम होनेकी आशासे भाव तेज हो जाते हैं।

माल बेच कर पैसा खुला करने का कारण—पैसा खुला करनेसे भी भावों पर असर होता है। तेजीमें तेजी और मन्दीमें मन्दी होती है, लेकिन तेजीका वेग

हमेशा धीमा होता है और ऊंचे भावमें माल भरनेकी साधारणतः किसीकी भी तैयारी नहीं रहती। ऐसा कहा जाता है कि मन्दी हमेशा एक सीढ़ी छोड़कर उड़ती है। एकाएक आने वाली मन्दीमें नुकसानको टालनेके लिये मालवाले बेचते हैं और वायदे वाले तथा मन्दो वाले माल न होते हुए भी सिर्फ मुनाफा खाने के इरादे से बेचते हैं। ठीक इसी समय ऊँचे भावमें माल गिरवी रखकर यदि बैंकों ने कर्ज दिया हो तो वे भी पैसेका तगादा लगाते हैं अर्थात् ऐसे मालवालोंको अपना देना पूरा करनेके लिये माल बेचना ही पड़ता है। परिणामस्वरूप पहलेसे ही मन्दीमें होने वाले बाजारों पर यह नया बोझ आ पड़ता है तथा भाव तेजीसे नीचे गिरने लगते हैं। भावोंका नीचे गिरना हमेशा तेज गतिसे होता है; लेकिन तेजीकी प्रगति धीमी ही रहती है।

कुछ वस्तुओं की तेजी-मंदी—वायदे बाजार में एक वस्तुकी तेजी-मन्दी अन्य वस्तुओं पर भी असर करती है। वायदेका व्यपार करनेवाले लोग बहुधा "बन्दरगाहोंके व्यपारी" होते हैं। अर्थात् उनकी तिल्हन, रुई आदि वस्तुओंकी खरीद-बिक्री नित्य ही शुरु रहती है। ऐसी हालतमें यदि किसी अनपेक्षित कारणसे एकाध वस्तु के भावमें तेजी-मन्दी हो गई तो अन्य वस्तुओं पर भी उसका असर अवश्य ही होता है इसीको सह-परिणाम (Sympathetic effect) कहा जा सकता है।

सरकारी नियंत्रण, युद्धकाल और बाजार

युद्धकालमें उक्त बातोंके अतिरिक्त और कई बातोंका बाजारों पर असर होता है। लोगोंके मन हमेशा अस्थिर होते हैं, चालू सरकार को पीछे हटते हुए देखते ही लोगों का सिक्कों और नोटों पर से विश्वास उड़ने लगता हैं। डरपोक लोग तो सरकारके डूब जानेका स्वप्न तक देखने लगते हैं; परिणाम यह होता है कि वे बैंकमें पैसा जमा रखनेके बजाय कच्चे मालमें या सोने-चांदीमें लगाकर रखना अधिक पसन्द करते हैं। जिनके पास ऐसा माल होता है वे उसे बेचनेकी इच्छा नहीं करते; क्योंकि उनकी ऐसी मनोवृत्ति बन जाती है कि "इन नोटोंको लेकर क्या करेंगे?" फलतः भाव तेज रफ्तारसे बढ़ने लगते हैं। परिस्थिति इसके विपरीत होने पर भाव नीचे भी गिरने लगते हैं।।

सरकारी बजट---सरकारी बजटका भी बाजारों पर असर पड़ता है। मान लीजिये जापानसे युद्ध छिड़ गया है और सरकार यह चाहती है कि जापानको रुई न भेजी जाय। ऐसे समय सरकार जापानको जानेवाली रुई पर अधिक चुंगी लगा देगी इससे माल निर्यात होनेकी सम्भावना एकदम कम हो जायगी और भाव घट जाएँगे आगे चलकर यदि सरकारकी इस नीतिके विरुद्ध व्यापारियोंने चिल्लाना शुरु किया और चुंगी उठा ली गई तो भाव बढ़ जाएंगे। बहुधा ऐसा परिवर्तन मार्च-अप्रेलमें अधिक होता है।

सरकारके लिये आवश्यक कर्ज—युद्ध-कालमें सरकारको पैसेकी बहुत जरूरत होती है और ऐसी आवश्यक रकम कर द्वारा जमा करना लगभग असम्भव होता है। अतः ऐसे समय कर्ज और मुद्राप्रसार इन दो ही उपायों का अवलम्बन किया जाता है।। कर्ज मिलना न मिलना उस समय सरकारके प्रति होनेवाले जनमत (पक्षमें या विरुद्ध) पर निर्भर होता है। सरकार भी समयको देखकर ही कर्ज लेती है।

मुद्राप्रसार---तीसरा मार्ग मुद्रा-प्रसारका है। जब सरकार यह देखती है कि उसके पास चांदी और सोनेकी कमी है तब वह नोट छपवाकर काम निकाल लेती है। रिजर्व बैंकके साप्ताहिक हिसाब पत्रक परसे इस बातका अनुमान लगाया जा सकता है।

मुद्राप्रसार जैसे जैसे बढ़ता है वैसे-वैसे चालू मुद्रापर से लोगोंका विश्वास उड़ता जाता है और इसी कारण पैसा जमा करनेकी अपेक्षा माल संग्रह करनेकी ओर लोगों की प्रवृत्तिका झुकाव अधिक होने लगता है। फलतः भाव तेज होते हैं। सारांश यह कि युद्ध कालीन सरकारकी स्थिति और मुद्राप्रसार ये बातें बाजार भावोंकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण होती है।

'सरकारकी स्थिति' और 'मुद्राप्रसार' सम्बन्धी लोगोंका जो मत होगा वही प्रत्यक्ष बाजारोंका भी मत समझना

चाहिये। कारण यह है कि हजारों मन माल और लाखों गठानोंका सट्टा करनेवाले करोड़पति बाजारोंमें रहते हैं। उन्हींका मत महत्वपूर्ण और परिणाम कारक सिद्ध हो सकता है।

बड़े--बड़े तेजीवालोंकी नीति----वायदे बाजारों में ऐसे बड़े-बड़े व्यापारी होते हैं, जो अल्प समयके लिये ही क्यों न हो; बाजारोंको अपनी नीतिके अनुसार पलटा देते हैं और यदि अनपेक्षित कारणोंसे उनका कहना जनमतमके खिलाफ होते हुए भी ठीक उतरा तो फिर कुछ न पूछिये; बाजार उन्हींके मतसे चलने लगता है। जिस दिन जर्मनीसे सन्धि हुई उसके एक दिन पूर्व चांदी १२३ के आसपास थी। संधि होते ही वह ११५ पर आ गई; लेकिन उस समय भी एक बड़ा तेजीवाला तेजी में ही था और घटते भावमें रिजर्व बैंकने माल भी कम दिया। नतीजा यह हुआ कि लोगोंके पासका संग्रहीत माल बाहर न आ सका। भाव तुरन्त ही एक माहमें पुनः १२६ हो गया। सरांश यह है कि बड़े सट्टे वालेकी नीति पहिचानना बाजार भावोंके अध्यनका एक महत्वपूर्ण अङ्ग है।

बाजार भावों पर सरकारी प्रतिबन्ध

युद्धकालमें सरकारी प्रतिबन्ध लगना शुरु हुआ। फलतः आज प्रत्येक वस्तुका व्यापार अत्यन्त खतरेमें आ गया। जून १९४३में सरकारने महंगाई और जालिम सट्टेके विरुद्ध कड़ा रुख धारण करनेका निश्चय किया और सर्वप्रथम रुई-बाजार बन्द कर दिया। परिणाम यह हुआ कि चार दिन पूर्व ६८० पर पहुंची हुई रुई ५८० पर आ गई। तेजीवालोंका आगे होनेवाला मुनाफा हवामें उड़ गया और नुकसान पूरा करते-करते उनके नाकों दम आ गया। इस आर्डिनेन्सके जारी होते ही,कि मूंगफलीका संग्रह निश्चित मनसे अधिक नहीं किया जाना चाहिये, १२६ तक पहुँचा हुआ मूंग-फलीका भाव १०२ पर आ गया। सोने-चाँदीका एक माहका वायदा बन्द हो गया और १०० तक चढ़ा हुआ सोनेका भाव ८० पर आ गया। आगे चलकर कपड़ेकी बारी आई और यह हुक्म जारी हुआ कि एक निश्चित अवधिके पूर्व पुराना कपड़ा बेच डालना चाहिये। बस कपड़ेके भाव आधे पर आ गये। सरकारी चोटेका असर इतना जबर्दस्त होता है! आज तो एक भी ऐसा व्यापार नहीं है जिस पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें सरकारी प्रति-बंध न लगा हो।

सरकारकी खरीद—"ब्रिटिश फुड मिनिस्ट्री" भी बीच-बीचमें माल खरीदती रहती थी। वह भावोंकी मर्या-दाएं जाहिर करती थी। ये भाव जिस तरह तेजी-मन्दीके द्योतक होते थे उसी तरह सरकारी आवश्यकताके परिचायक भी होते थे। कारण यह है कि विशेष जरूरत होने पर ही सरकार थोड़ी अधिक कीमत देनेके लिए तैयार होती है।

वैगन्स (Waggons) की कमी—युद्धकाल में माल लाने-ले-जानेके लिये आवश्यकतानुसार समय पर मालके डब्बों (Waggons) का मिलना मुश्किल हो जाता है। जैसे-जैसे वायदा खतम होता आता है वैसे-वैसे इसका महत्व बढ़ता जाता है। मामूली दिनोंमें देशके अन्दर कम कीमत पर माल खरीदकर उसे बम्बई जैसे बड़े शहरोंकी मंडीमें अधिक कीमत पर बेचा जा सकता है और निश्चित तारीखको डिलीवरी दी जा सकती है; लेकिन युद्धके जमानेमें ऐसा होना असम्भव होता है।

माल संग्रह करनेके लिये गोदामोंकी कमी

इसी प्रकार युद्धकालमें बम्बई जैसे शहरमें मालको संग्रह करके रखनेके लिये गोदाम आदि नहीं मिलते। कारण यह है कि सरकारको खुद ही बहुतसे गोदामोंकी जरूरत होती है। माल दूसरे शहरोंमें ले जाना भी असम्भव होता है। ऐसे समय एक विचित्र ही दृश्य दिखाई देने लगता है; वह यह कि बम्बईमें माल सस्ता और अन्यत्र महँगा और हमेशा इसके विपरीत ही दिखाई देता है, क्योंकि माल बाहर गांवसे बम्बई आता है और उस पर लगे हुए खर्चके कारण खास बम्बईमें उसका मँहगा होना बिल्कुल स्वाभाविक होता है।

स्टाक सम्बन्धी सरकारी नीति—कभी-कभी सरकार स्टाक पर रोक लगा देती है और कभी-कभी ऐसे बन्धन उठा भी लेती है। बाजारों पर इसका भी असर होता है।

—✱—

❋ त्रैमासिक व्यापारिक तेजीमन्दी ❋

(लेखकः—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्)

माघ मास (जनवरी)

ता०	वार	बाजाररुख
१५	शनि	चांदीमें घट बढ़ बहुत हो, रुख तेजीका।
१८	मं०	चांदी गुड़ मंदे।
१९	बुध	चांदी कुछ तेजीके साथ मंदी।
२०	बृह	चान्दी मन्दी।
२१	शु०	गुड़ तेज, चान्दी तेजीके साथ मन्दी।
२२	शनि	चान्दी तेज।
२३	रवि	चान्दी, गुड़, सरसो तेज।
२४	सोम	चांदी २) ३) तेज।
२५	मं०	चान्दी, गुड़, शेयर तेज।
२६	बुध	चान्दी तेज होके मन्दी।
२७	बृह	मन्दीसे तेज।
२८	शु०	चान्दी १) १॥) तेज।
२९	शनि	अलसी, सरसों, गुड़, मंदे। चांदी मन्दी होके तेज।
३०	रवि	गुड़, सरसों, तेज, चान्दी मन्दी होके तेज।
३१	सोम	सायं चान्दी गुड़, शेअर तेज।

फरवरी

ता०	वार	बाजाररुख
१	मं०	घटा बढ़ी।
२	बुध	चान्दी तेज।
३	बृह	चान्दी मन्दी।
४	शु०	मन्दीके साथ तेज।
५	शनि	गुड़, तेज चान्दी मन्दी होके तेज।
८	मं०	चान्दी गुड़ मन्दे।
१०	बृह	चान्दी, सरसों, तेज।
११	शु०	चान्दी मन्दी।
१२	शनि	गुड़ चान्दी तेज।

सारांश—चान्दी ता० २०–२१से २८ जन० तक तेज फिर ता० ४ फरवरीसे १० फरवरी तक तेज रहेगी। गुड़ भी इस मास विशेष कर तेज रहेगा।

फाल्गुन मास (फरवरी)

ता०	वार	बाजार रुख
१४	सोम	चान्दी तेज।
१५	मं०	चान्दी मन्दी।
१६	बुध	चान्दी तेज, रातको १० बजेसे चान्दीमें तेजी और गुड़ सरसोंमें मन्दी आवे।
१७	बृह	चान्दी तेज।
१८	शु०	१० बजे रात चान्दी, गुड़, सरसों तेज।
१९	शनि	चान्दी गुड़ तेज होके मन्दे।
२१	सोम	बजार रुख देखें।
२२	मं०	गुड़, तेज।
२४	बृह०	चान्दी मन्दी शेयर तेज।
२६	शनि	चान्दी तेज।
२८	सोम	चान्दी मंदीके साथ तेज, गुड़ तेज।

मार्च

ता०	वार	बाजार रुख
१	मं०	शाम-चान्दी तेज होके रातको मन्दी
२	बुध	चान्दी मन्दी गुड़ तेज।
४	शु०	घट बढ़ बहुत हो, अन्त में तेजी।
५	शनि	चान्दी तेज।
७	सोम	चान्दी तेज।
८	मं०	चान्दी मन्दी होके तेज, गुड़ तेज।
११	शु०	चान्दी मन्दी।
१२	शनि	चान्दी तेज होके मन्दी गुड़ मंदा।
१४	सोम	चान्दी २) ३) तेज, गुड़ तेज।

सारांश—वदी पक्षमें बाजारका रुख देखें। विशेष घटबढ़ नहीं दीखती। और यदि विशेष घटबढ़ चली तो धीरे धीरे बाजार मन्दीकी तरफ ही रहेगा। सुदी पक्षमें चान्दी ता० ३से ११ तक विशेष कर तेजीकी ओर रहकर बादमें फिर मन्दी आवे।

चैत्र मास (मार्च)

ता०	वार	बाजार रुख
१६	बुध	चांदीमें २)की घटबढ़ हो।
१७	बृह	गुड़ ≡) चान्दी २) ४) तेज।
१८	शु०	तेजीके साथ मन्दी।
१६	शनि	चान्दी १) तेज।
२०	रवि	सायं, चान्दीमें जोरदार घटबढ़ चले। यदि मन्दी चले तो मन्दीकी लाइन समझो और तेजी चले तो तेजीकी लाइन समझो किधर भी चले लाइन २०)२५) की १५-२० दिनमें आवेगी। चान्स गारण्टीका पक्का है।
२१	सोम	गुड़ चान्दी मन्दे।
२२	मं०	चान्दीमें घटबढ़ बहुत होके तेज।
२३	बुध	चान्दी, गुड़, मन्दे।
२६	शनि	रातको चान्दी तेज।
२८	सोम	चान्दी गुड़ तेज।
२६	मं०	चान्दीमें घटाबढ़ी।
३०	बुध	चान्दीमें मन्दी रातको रुख तेजीका हो जावे।
३१	बृह	गुड़ मन्दा चान्दी घटबढ़से मन्दी।

अप्रैल

ता०	वार	बाजार रुख
१	शु०	चान्दी गुड़ मन्दे तेजीका भी उछाला।
२	शनि	चान्दी तेज।
४	सोम	चान्दी २) ४) तेज गुड़ तेज होकरके मन्दा।
६	बुध	चान्दी मन्दी।
७	बृह०	घटबढ़ तेजीसे मन्दी।
६	शनि	चान्दी तेज।
११	सोम	रातको चान्दी, गुड़ मन्दे होके कुछ तेज।
१२	मं०	चान्दी मन्दी होके कुछ तेज।
१३	बुध	गुड़तेज, चान्दीमें अच्छी तेजी चले।

सारांश चांदी—इस मास चान्दीमें ता० २० मार्चसे एक विशेष इकतरफी लाइन चलेगी। बाजारका रुख ता० २० से २२ तक देखें, यदि झुकाव मन्दीकी ओर अधिक हो तो २०) २५)की मंदी और झुकाव यदि तेजीकी ओर अधिक हो तो २०) २५)की तेजीकी लाइन समझनी चाहिए। यह लाइन इकतरफा चलेगी। यदि यहांसे तेजी न भी चली तो ता० २६ मार्चसे अवश्य ही चलेगी। परन्तु ता० २० से ही बाजारका झुकाव व रुख अवश्य पकड़ें। किसी कारण से यदि मन्दी चल पड़ी तो २०) २५)की मन्दी भी आ सकती है। परन्तु हमारा ध्यान विशेष कर तेजीकी ओर है।

अनूभूत योग

(लेखक—श्री पं० विद्याधर शर्मा ज्योतिर्विद्)

१ अष्टमेश यदि दशम स्थानमें स्थित हो तो बहुधा वे मनुष्य दत्तक जाते हैं, साथ ही दशम स्थानमें पापग्रह होना चाहिये। यह दत्तक योग ससुराल पक्ष अथवा काका (चाचा) आदि से प्राप्त होता है। राजपक्ष से पारितोषिक भी इसी योग से प्राप्त होता है।

२ अष्टमेश बलवान् हो, अष्टम में पापग्रह स्थित हों ऐसे प्राणी यदि आफीसर वर्ग या क्लर्क वर्ग के हों तो रिश्वतखोर होंगे, व्यापारी वर्ग के हों तो चोर-बाजार करके धन-संचय करेंगे, परन्तु कर्जेसे लदे रहेंगे

३ अष्टमेश या लाभेश की युति चतुर्थ स्थान में हो तो जमीन द्वारा अनायास द्रव्य प्राप्त होगा, कभी कभी इस योगमें स्थाई जायदाद भी प्राप्त होती है।

४ वृषभलग्न वालेको यदि गुरु सूर्य की युति पंचमस्थ हो तो जमीनसे द्रव्य लाभ होता है, यदि बुध भी पंचमस्थ हो तो मकानसे तथा जुआ आदिसे द्रव्य संचय होता है।

५ अष्टमेश व लाभेश का परिवर्तन योग हो तो आफीसर वर्ग के मनुष्य रिश्वतखोर होते हैं, बुध और शुक्र इन स्थानों में बैठे हों तो जुआ, सट्टा, लाटरीसे भी लाभ होता देखा गया है।

६ धनेश और अष्टमेश में परिवर्तन योग हो तो भी अनायास बिना परिश्रम कमाया द्रव्य प्राप्त होता है।

७ अष्टम स्थान में सूर्य और शुक्र की युति हो तो सुजाक, गर्मी, प्रमेह अवश्य होता है।

८ अष्टम स्थान में मङ्गल शनि, या शनि राहु, या मंगल राहु बैठे हों तो वह व्यक्ति बवासीर का रोगी अवश्य होगा। भगंदर भी हो जाय तो आश्चर्य नहीं।

९ अष्टम स्थान में शनिदेव १०-११-७ राशियों में स्थित हों, साथ में पापग्रह न हों, लग्न भी शुभग्रह से युक्त हो अथवा दृष्ट हो तो ऐसा मनुष्य दीर्घजीवी होता है।

त्रैमासिक व्यापार-भविष्य-प्रकाश

[ले०— श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्यः]

व्यापार करनेके पहिले किस फर्मको- कौनसे महीने में किस वस्तुसे विशेष लाभ होगा और कौनसी तारीखें उस महीनेकी लाभप्रद रहेंगीं, तथा घाटा देने वाली कौनसी कौनसी तारीखें होंगी, किस दिशा तथा किस नगर में व्यापार करनेसे सफलता मिलेगी, यह पहिले जानने के पश्चात् ही व्यापारमें व्यापारी वर्गको हाथ डालना चाहिये। इसके बाद ही अभीष्ट वस्तुका चांस अनुभवी शास्त्र-मर्मज्ञ दैवज्ञसे चांस मंगवाना चाहिये। मैंने यह लेख केवल व्यापारी भाइयोंकी सावधानीके लिए लिखा है ताकि उन्हें नये पण्डितम्मन्य आडम्बरी चांस-विक्रेता ज्यौतिषियोंके चक्करमें आकर घाटेका अनुभव न करना पड़े। इन बातोंको व्यापारी-भाईयोंको पहिले सोचना चहिये। सन्देहजनक अविश्वस्त लोगोंके चक्करमें न पड़ें।

जनवरी मासका दैनिक रुख

ता० १० सो० खुलते बाजार चांदी सोना रुई खरीदो।
११ मं० गुड़ सरसोंकी नरमाईकी तरफ ध्यान दो।
१२ बु० चांदी रुईका मुनाफा लेकर बेचो।
१३ गु० बाजार मन्दीकी ओर ढाई बजे तक रुख तेज।
१४ शु० तेजीका भड़का, तीनसे चार बजे तक बेचो।
१५ श० आजकी मंदी सवा दो दिन मंदी रहेगी, गली लगाओ।
१६ र० प्राईवेटमें बाजार थमे पड़े रहेंगे।
१७ सो० खुलते बाजार चांदी रुई खरीदो, मूंग अरहर बेचो।
१८ मं० एरण्डाकी नरमाई खरीदका मौका देगी।
१९ बु० चढ़े हुए भावोंमें सींगदाना तारामीरा चांदी रुई बेचो।
२० गु० सोनेकी नरमाई खरीदका मौका देगी।
२१ शु० साढ़े चार बजे रुई चांदी बेचो तिलहन मंदी।
२२ श० शेयर्स. लालधारीका वांदाना बेचना।
२३ र० प्राईवेटमें रुई चांदी सोनेके भाव थम जायेंगे।
२४ सो० चांदी रुई दो बजे बाद तेजीमें खरीदनेकी राय है।
२५ मं० तेजीका भड़का, सर्व वस्तुओंके भाव बढ़ जायेंगे।
२६ बु० सावधान, नफा मिले तो छोड़ो नहीं।
२७ गु० चांदी सोना तोरिया कालीमिर्च वायदा बेचो।
२८ शु० मंदीकी चाल सरकारी आर्डिनेन्शसे होगी।
२९ श० एकदम आठ घड़ीकी मंदी हवा बांध देगी।
३० इ० प्राईवेटमें तेजीका दौर रहेगा, खरीदो।
३१ सो० वायदेके भावोंकी बांधणीमें सुधार होगा।

फरवरी मासका दैनिक रुख

ता० १ मं० तेजा बेचीके काममें गली साफ करो।
२ बु० हो सके तो एरण्डा बेचो, रुई चांदी खरीदो।
३ गु० सोनेकी नरमाई रहेगी डबल बेचो।
४ शु० घटे भाव रुई खरीदो बराबर तेजी रहेगी।
५ श० शेयर चढ़ेंगे चांदी रुई सोना खरीदो।
६ इ० प्राईवेटमें बाजारोंमें अलसी एरण्डा मन्दा।
७ सो० खुलते बाजार चांदी रुई तोरिया खरीदो।
८ म० चार बजे नफा छोड़ो नहीं बेचना ही चांस है।
९ बु० सरसों अरहर गुड़ खरीदनेका चांस है।
१० गु० बराबर चांदी रुई मन्दीमें खरीदते जाओ।
११ शु० तेजीकी चमक फिरसे आयेगी।
१२ श० घटे भाव चांदी रुई एरण्डा सींगदाना खरीदो।
१३ इ० प्राईवेटमें अलसी एरण्डा सरसोंकी नरमाई।
१४ सो० मन्दीकी हवा बराबर विदेशी सरकारी खबरों पर होगी।

१५ मं० खुलते बाजार चांदी सोना रुई बेचो, शामको नफा।

१६ बु० बाजारोंमें मन्दीका तहलका, सर्व चीजोंके भाव गिरेंगे।

१७ गु० एकाएक तिलहनोंकी तेजीसे मन्दी स्टाक निकालो।

१८ शु० मूंग मसूर चांदी रुईमें करारी मन्दी, डबल बेचो।

१९ श० चार ग्रह-योग बराबर मन्दीकी लाईनें बना रहे हैं।

२० इ० प्राईवेटमें बराबर चांदी रुई चमकेगी।

२१ सो० खुलते बाजार चांदी रुई खरीदो, सोना बेचो।

२२ मं० तेजीका भड़का, एकदम बाजारोंमें तहलका।

२३ बु० सिर्फ चांदी रुईमें तेजी आकर फिर पीछी मन्दी, बेचो।

२४ गु० नजराना मन्दीका लगाओ, एरण्डा, रुई, चांदी मन्दी।'

२५ शु० चार बजे तक मन्दीकी चाल बादमें तेजी रहेगी।

२६ श० साधारण घटबढ़ होकर बाजार थम जायेंगे।

२७ इ० प्राईवेटमें तिलहनें अलसी सरसों खरीदो।

२८ सो० चांदी रुईकी पर्याप्त तेजी मन्दीकी ओर चलेंगीं।

मार्च मासका दैनिक रुख

ता० १ मं० सरकारी नियन्त्रण मन्दीका कारण होगा।

२ बु० चांस बार बार नहीं आता दीमाग खर्च करो!

३ गु० मन्दीका बोलबाला नजराना बेचान करो।

४ शु० तीन बजे बाद तेजीकी घुड़दौड़, पोते करो।

५ श० शेयर्स तिलहनोंमें तेजीका दौड़ रहेगा।

६ इ० प्राईवेटमें रुईमें बराबर मन्दी पर मन्दी रहेगी,

७ सो० घटे भाव चांदी सोना रुई खरीदो, नफा होगा।

८ मं० लोहा किराना एरण्डा सींगदाना बेचना ही चांस है।

९ बु० व्यापारिक दृष्टिसे बराबर चांदी सोना बेचोगे।

१० गु० नफा मिले तो छोड़ना गलतीका कारण होगा।

११ शु० तेजीका रुख सिर्फ चांदी रुईका रहेगा।

१२ श० चढ़े भावोंमें पहिले बेचकर डबल खरीदो।

१३ इ० प्राईवेटमें नरमाई आवे तो घबराओ नहीं।

१४ सो० दो बजे बाद तेजीकी दौड़ शुरु हो जावेगी।

१५ मं० तेजीकी लाईन बराबर, सायं० डबल बेचो।

१६ बु० साधारण घटबढ़में ऊँचेमें दो बजे बेचो।

१७ गु० मन्दीका नजराना चांदी रुईमें लगाओ।

१८ शु० दोतरफा बाजारमें घबरानेकी जरूरत नहीं है।

१९ श० प्राईवेटमें मन्दीकी चाल रहेगी, नफा लो।

२० र० साधारण तेजी-मन्दीके ऊपर विचार न करो।

२१ सो० खुलते बाजार चांदी सोना रुई खरीदो।

२२ म० तेजीका भड़का, शाम नफा लो और बेचो।

२३ बु० मन्दीका सन्देश दो बजेसे होगा बेचो डबल।

२४ गु० नजराना लगाओ आठ घण्टेकी मन्दी हवा बांध देगी।

२५ शु० बराबर घटे भाव चान्दी रुई खरीदनेकी राय है।

२६ श० समय मिले तो 'बम्बई'का काम मिलाओ।

२७ र० इकतरफा तेजीका भूत सर्वत्र आ जायगा।

२८ सो० खुलते बाजार चांदी रुई खरीदो अरंडा बेचो

२९ मं० तेजीका भड़का, शाम तक नफा मिले। छोड़ो नहीं।

३० बु० दो बजे बाद साधारण घटबढ़से मंदी आयेगी।

३१ गु० डबल बेचो मन्दीकी गली लगाकर काम करो,

अप्रैल मासका दैनिक रुख

ता० १ शु० मन्दीकी चाल दो बजेसे प्रारम्भ होगी बेचो।

२ श० ऊँचे भावोंमें डबल बेचना ही चांस है।

३ र० प्राईवेटमें बाज़ार थम जायेगा ध्यान रखो!

४ सो० दो बजे तक मन्दी बादको तेजी खरीदो।

५ मं० अचानक तेजी ६ घण्टेकी नफा लो और बेचो

६ बु० आजके योग ढाई बजेसे डबल बेचना ही चांस है।

तीनमासका पाक्षिक फलादेश

[श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्गसे]

माघ कृष्ण पक्ष

[ता० १५ जनवरीसे २९ जनवरी तक]

रुईमें घटबढ़ अधिक, व्यापारी सावधानीसे व्यपार करें। ति० १से ४ तक घटा बढ़ी से रुख तेजीका। ति० ५से ति० ३० तक रुईमें २०, २५, की तेजी। चान्दी ति० ६से तेज होगी। सोनेमें ति० २ से ६ तक थोड़ी घटाबढ़ी होगी। ति० ७से १२ तक घटबढ़ अधिक रुख तेजीका। मन्दीमें ४) ५) तेजीमें ५) १०) का हेरफेर है।

धान्य, घी, हल्दी, जीरा, नमक, गुड़, शक्कर, तोरिया, मूंग, और मूंगफली तेज। राजकीय वातावरण महत्वपूर्ण है। परराष्ट्रीय सम्बन्ध भारतके लिये श्रेष्ठ है। हिन्दुस्थान, पाकिस्तानमें मतभेद उत्पन्न होगा। शेयर बाजार उत्तरार्द्धमें तेज। मिल शेयर मन्दे। राजा प्रजामें सङ्घर्ष का योग भी है।

माघ शुक्ल पक्ष

[ता० ३० जनवरीसे १३ फरवरी तक]

रुई ति० १ से ४ तक तेज। ५से १२ तक मन्दी, बाद तेजी, घटबढ़ बहुत होने वाली है। चान्दीमें ति० ४ तक तेज रहकर बाद ति० १० तक घटबढ़से रुख मन्दीका। ति० ११से १५ तक बहुत घटबढ़ होगी। ११।१२ को मन्दी बाद तेजीकी धारणा है। सोना ति० ५ तक साधारण स्थिर रह कर ति० ६ से ४) ५) की तेजी।

धान्य भाव तेज। गेहूं, चावल, मसूर, मूंग, घृत, बिनोला, तेज। ति० १२के बाद शक्कर रसपदार्थ अफीम सरसों तिल तेज लोहा स्टील धीरे धीरे तेज होंगे। उत्तरार्द्ध में अन्तर्राष्ट्रीय राजकारणमें असन्तोष मतभेद तथा कहीं कहीं सैनिक सङ्घर्षसे शान्तिका भङ्ग होगा। पूर्वीय और पश्चिमी विभागमें उत्पात, भूकम्प आदि होंगे।

७ गु० मन्दीका एटमबम्ब, नजराना लगाकर काम करो।

८ शु० दो बजे बाद तेजीका रङ्ग, घटे भाव खरीदो।

९ श० साधारण घटबढ़में घबड़ानेकी जरूरत नहीं है

१० इ० प्राईवेटमें 'रुख' मजबूत रहेगा, कल तेजी होगी।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

[ता० १४से २७ फरवरी तक]

रुई तेज होगी। ति० १से ८ तक घटबढ़ होकर रुख तेजीका रहे। ति० ९से १२ तक मन्दी, बाद तेजी। चान्दी उत्तरार्द्धमें तेज। सोनेमें अधिक घटबढ़, रुख तेजीकी। ति० २ से तेजी रहकर ति० १०से १२ तक मन्दी, बाद तेजी। रुई में १५) २०) और चान्दीमें घटबढ़ होकर ४) ५) की मन्दी एवं ५, ७, की तेजी हो। सोनेमें ४) ५) की तेजीका योग है।

धान्यबाजार तेज रहेगा। सरसों, लोहा, स्टील, जस्त शेयर, अफीम, अलसी, एरण्डा, तिल, और तैल तेज होवें। अन्तर्राष्ट्रीय कारणों अथवा आपसी कलह व राजकीय कलह से यह पक्ष क्लेशकारक है। मित्र राष्ट्रोंमें मतभेद अधिक तीव्रतर होगा। पश्चिमी यूरोपमें क्लेश, युद्ध असन्तोष आदि होंवे।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

[ता० २८ फरवरीसे १४ मार्च तक]

रुईमें दुतर्फा घटबढ़ अतः व्यापारी सावधानीसे व्यापार करें। उत्तरार्द्धमें घटबढ़ होकर रुख तेज। चान्दी प्रायः तेज रहेगी। ति १०से तेजीके योग बनते हैं। सोना भी तेज हो तथा थोड़े फरकसे तेजीमें स्थिर रहेगा।

धान्य भाव मन्दीका रहेगा। तांबा, लोहा पीतल जस्त स्टील शीशा तेज, घी भी तेज। ति० ८ से मूंग मोठ बाजरा ज्वार तोरिया हल्दी और परदेशी वस्तुएं तेज होंगी। मशीनोंकी वस्तुएं ति० १० से तेज हों। शिल्पज्ञों को यह पक्ष उत्तम है, श्रम जीवियोंके लिये अनिष्ट सूचक है। व्या-

पारियोंके लिये तिं० ६के बाद ठीक नहीं, अतः सोच समझकर व्यापार करें। एरण्डा अलसी तिल तेल तेज।

चैत्र कृष्ण पक्ष

[ता० १५से २६ मार्च तक]

रुईमें ति० १से ५ तक १०, १५, की तेजी, ति० ६से ८ तक मन्दी, ति० ६से ११ तक तेजी व मन्दीका योग है। ति० ३० से पांचग्रह मीन राशिमें इकट्ठे हो रहे हैं, अतः ति० १३से रुईमें बहुत क्रान्ति होगी। चान्दी सोनेका बाजार बहुत ऊंचा नीचा होगा। चान्दीमें ४) १०) एवं सोनेमें ५) ७)से अधिक घटबढ़ होगी। अतः व्यापारी सावधानीसे व्यापार करें।

धान्य भाव तेज। घी, गुड़, शक्कर तोरिया और अलसीके भाव ति० ८ से तेज। पञ्चग्रह योगोंसे व्यापारी वर्ग में बहुत असन्तोष रहे। यह पक्ष भारतके लिये श्रेष्ठ जायगा, भारतमें व्यापारकी नई नई योजनाएँ सफल होंगी। तथा कई नये कारखाने खुलेंगे। अनेक उद्योगोंके राष्ट्रीय करण होंगे। और जलयानोंके कारखाने खुलकर भारतकी योग्यता बढ़ेगी, रेलवे मजदूरोंमें असन्तोष होनेका योग दिखाई देता है।

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श

प्रत्येक वस्तु की अर्ध साप्ताहिक तेजी मन्दी

[लेखक—श्री पं० बिहारीलाल जी शर्मा दैवज्ञभूषण]

मकर संक्रान्ति सौर माघमास

[ता० १४ जनवरी से १२ फरवरी पर्यन्त]

प्रकृतिमें ऋतुकी अनधिकार चेष्टा चलना प्रतीत होता है। वस्तुओंके भावमें मोटा फेर फार चलना सम्भवित है। रुई रेटमें ५०) ६०) कालीमिर्चके मूल्य १५०) १७५) ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें २५०) ३००) टके, चान्दी, एरण्डा, मूंगफलीके मूल्यमें ८) १०) और सोना हेसियन और अलसीके भावमें ३) ४) का परिवर्तन हो जाना कोई बड़ी बात नहीं कहायगी।

वायदा व्यापारकी योजना

ज्योतिषके संयोगों और व्यापारिक टोन देखते यह महीना वायदा व्यापारके लिये पूंजीपतियोंको धन कमानेका है, किसी भी वस्तुका नजराणा (तेजी मन्दी) लगाते बार बारमें हुई घटाबढ़ीके सम्प्राप्त चान्समें वस्तुका लेना बेचना, बेचने लेनेके प्रयास रक्खें। ये सब काम बाजारमें हाजिर रहते हुए सत्वरता पूर्वक साधें। तार चिठ्ठीके आर्डर पर किया हुआ सौदा सफल हो या न हो। आशा है व्यापारी समुदाय हमारे संकेतोंका समुचित उपयोग करेंगे।

ता० १४ जनवरी प्रातः ४ बजे से ३॥ दिन में—

सोनेके भावमें सस्ताईका सन्नाटा रहे, प्रत्येक वस्तुके भावमें साधारण तथा अच्छी घटा बढ़ीका समय है। जब २ दुतर्फा भाव चले तो ऐसे समय समझदार व्यापारीको चाहिये कि तारुणीका धन्धा करे। तात्पर्य यह कि घटा-बढ़ी का भी उपयोग कर लें।

ता० १७ जनवरी प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिन में—

आई हुई तेजी ठहरे नहीं, और अच्छी सस्ताई आना पाया जाता है। डिफर्ड शेयरके भावमें ५०) ७५) कालीमिर्च रुईमें १०) १५) एरण्डा, मूंगफली, और जांदीके भावमें २) ३) अलसी हेसीयन और सोनेके रेटमें १) खिसक जाना प्रतीत होता है। बहुत समय बाद एकांगी सलाह माल माथे बेचनेकी दी जा रही है। जिस व्यापारी को जौनसी वस्तुसे सम्पर्क हो उसे जरूर बेचिये और घटे भाव सौदा सुलटानेमें रहें।

ता० २० जनवरी दिनके १२ बजेसे ३॥ दिनमें—

वस्तुओंके भावमें भिन्नता मालूम देगी। किसी वस्तु का भाव घटेगा और किसीका बढ़ेगा।

ता० २३ जनवरी सायं ८ बजेसे ३। दिन में—

वस्तुओंमें चांदी, सोना और रुई बेचना मंजूर कर लीजिये और अलसी, एरण्डा, मूंगफली खरीद किया कर दीजिये, सौदा किये बाद नफाका भाव जिस हालतमें भी मिले लाभका व्यापार कर लीजिये।

ता० २६ जनवरी रात ११ से ३॥ दिनमें—

ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें १००) १२५) टके, कालीमिर्च ३०) ४०) रुई २०, ५०) एरण्डा, मूंगफली ४) ६) चांदी ३) ४) और सोना हेसियन और अलसीके भावमें २) ३) टकेका चक्कर (घट-बढ़) पड़ जाना पाया जाता है। ऐसी स्थितिमें हर उछाले वस्तु बेचते रहें। और प्रत्येक घटे भावमें नफासे सौदा सुधारते रहें।

ता० ३० जनवरी प्रातः ५ बजे से ३ दिनमें—

वस्तुओंके भावमें दुतर्फा घटा-चढ़ी चलेगी ही। मंदीके बहावमें वस्तु बेचना और घटे भाव वस्तुका खरीदना समझदार व्यापारीका काम है। इसी प्रकार घटे भाव डबल खरीद उछालेमें बेचनेका प्रयास रक्खें।

ता० २ फरवरी दिनके १२ बजे से ३॥ दिनमें—

सम्भव है रुईके मूल्यमें ८) १०), डिफर्ड शेयरके भावमें ४०) ६०), कालीमिर्च रेटमें ३०) ४०), मूंगफली एरण्डामें ४) ६) टके, चान्दीमें ३) ४) और हेसियन, अलसी, सोनेके भावमें १॥) २) टके बढ़ना पाया जाता है।

ता० ५ फरवरी रात ८ बजे से ३॥ दिनमें—

रुई को छोड़ हर एक वस्तुमें तेजीका तरारा दिखाई देगा। बदस्तूर वस्तु खरीदिये और तत्कालीन सम्प्राप्त उछाले में बेचते जाइये

ता० ८ फरवरी रात ११ बजे से ३॥ दिनमें—

मामूली मन्दी भले ही आये परन्तु हमारी कोई खास सलाह है नहीं। व्यापारी भाईको जैसा उचित मालूम दे वैसा व्यापार करें करायें।

कुम्भ संक्रांति सौर फाल्गुन मास

[ता० १२ फरवरीसे १३ मार्च तक]

इस मासके ग्रहोंकी चाल ढालमें शान्तिवर्धक और सस्ताईके प्रतिपादक जो शुभ ग्रह हैं, वे अपनी असमर्थता प्रकट कर रहे हैं। और क्रूर ग्रह अपनी शक्ति का दुरुपयोग करनेमें जुटे है। यह समस्या युद्ध ही नहीं अपितु महायुद्धकी स्थितिको विकट रूप देनेकी प्रेरणा में हैं। इसी प्रकार वस्तुओंकी प्राप्ति अप्राप्तिमें कई प्रकारकी कठिनाई होगी। भावोंका अनुसन्धान अधिकतम तेजीका पाया जाता है। रुई १००) १२५) ताता स्टील डिफर्ड शेयर ३००) ४००) कालीमिर्च १५०) २००) चान्दीके मूल्यमें १०)१५) एरण्डा मूंगफली और सोनेके भावमें ८) १०) अलसी हेसियनमें ३) ४) टकेका चक्कर पड़ते मन्दीका क्राइसीस आते नितान्तमें तेजीके उछाले चलते रहेंगे। देखा जाय तो समय सावधानी पूर्वक भरपेट रोजगार करने का है।

वायदा व्यापार की आयोजना

जिस व्यापारीको धन कमाना हो सम्भाल पूर्वक वायदा बाजारोंमें सौदा सूत करें और तेजी लगाएँ, वस्तु खरीदें, चाहे तो नजराणा लगाते प्रत्येक भावके उतार-चढ़ावमें लेवा बेचीकी तारुणी करते रहें।

ता १२ फरवरी प्रातः ८ बजे से ३॥ दिनमें—

रुई, चांदी, और डिफर्डके भावमें पुख्ता परिवर्तन हो जाता है। रुई रेटमें १५) २०) स्टील डिफर्ड शेयरमें १००) ७५) कालीमिर्च ३०) ४०) एरण्डा, मूंगफली, और चान्दी ४) ६) टके, अलसी, सोना, हेसियन १॥) २) टके दुतर्फा चढ़ाव उतार लेंगे। चान्स पक्का और परीक्षित है। जब दुतर्फा भाव चलने का प्रसंग उपस्थित हुआ है तो बिना किसी ननुनच के नजराणा लगा लीजिये और पेटेमें वस्तुको लेवा बेचीकी तारुणी करते रहिये।

ता० १५ फरवरी दिनके चार बजे से ३॥ दिनमें—

जिस वस्तुके भाव बढ़े हुए प्रतीत हों, उसे बेचनेमें रहें और जिन २ वस्तुओंके भाव घटे हुए हों उन्हें खरीदनेका प्रयास रखें। इस प्रकार दुतर्फा सौदा करते

हुए प्रत्येक चढ़ाव उतारके बदलेमें धन कमाइये।

ता० १८ फरवरी रात ११ बजे से ३॥ दिन में—

वस्तुओंके भावमें साधारण घटबढ़ चले। खासकर स्टील शेयर और तिलहनके भाव बढ़े।

ता० २२ फरवरी प्रातः ७ बजे से ३॥ दिनमें—

वायदा वस्तुओंमें कई एक वस्तुओंकी ड्यू डेट निकटतम आ रही है। प्रकट होने वाले सरकारी बजट का समय भी समीप दिखाई दे रहा है। उभय पक्षकी तारतम्यता देखते धातुओंमें स्टील डिफर्ड शेयर १५०) २००) चान्दी ५) ७) सोना ४) ६) और वनस्पतिजन्य वस्तु रुई २०) ३०) कालीमिर्च ४०) ५०) एरण्डा मूंगफली ५) ७) और अलसी हेसियनके भावमें २) ३) का चक्कर पड़ जाना सम्भव है। योग पक्का और परीक्षित है।

ता० २५ फरवरी दिनके २ बजे से ३॥ दिनमें—

जब कि ८० घण्टेके समयमें केवल १२ घण्टे बाजार खुले रहेंगे तो बन्द बाजार और समयकी खींचमें नया सौदा का प्लान बनाना असम्भव है।

ता० २८ फरवरी रात १० बजे से ३॥ दिनमें—

चाहे वस्तु धातुकीय हों, चाहे वनस्पति जन्य, बदस्तूर खरीदनेमें रहिये और उछले हुए भावोंमें नफा सुधारिये। समझ लीजिये कि बजटका परिणाम कहा जा रहा है।

ता० ४ मार्च प्रातः ५ बजे से ३॥ दिनमें—

रुईमें ८) १०) कालीमिर्च २०) ३०) स्टील डिफर्ड ४०) ५०) चांदी ४) ६) एरण्डा मूंगफली ३) ४) और अलसी, हेसियन सोनेमें १॥) २) टके बढ़ना प्रतीत होता है। चान्स पक्का है। किसी वस्तुका भाव एक दिन आगे और किसी चीज का भाव एक दिन पीछे बढ़नेके टाइममें खरीद लीजिये।

ता० ७ मार्च दिनके १ बजे से ३॥ दिनमें—

चलती हुई तेजी में मंहगाईका इंजक्शन लगा है। पूर्वोक्त कलममें बताई गई वस्तुओंके भावमें तेजी आनेमें कमी रही हो तो यहां पूर्ति जानिये। बिना किसी हिचकिचाहटके वस्तु बेचने पर आमादा हो जाइए।

ता० १० मार्च रात ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

ताता स्टील डिफर्डके भावमें ५०) ७५) कालीमिर्च ४०) ५०) रुई १५) २०) एरंडा मूंगफली चांदी ४) ५) सोना, हेसियन और अलसीमें २) ३) टके खिसक जाना (घटना) पाया जाता है।

मीन संक्रान्ति सौर चैत्र मास

[ता० १३ मार्च से १३ अप्रैल तक]

इधर उधरकी अफवाहें अधिक संख्यामें पैदा होती रहें। वायदा बाजारमें स्थाई मन्दी और अनलिमिट तेजी चलना पाया जाता है। ऐसी स्थितिमें टाटास्टील डिफर्ड का भाव १५०) २००) कालीमिर्च १००) ७५) रुई ४०) ५०) और एरण्डा मूंगफलीके भावमें ५) ७) चान्दी ४) ६) सोना अलसी हेसियनके भावमें ३ ४) टकेका उतार चढ़ाव चलना प्रतीत होता है।

वायदा व्यापारकी आयोजना

ज्योतिषके संयोग और व्यापारिक व्यवस्थाके टोन ऊपर बताए जा चुके हैं। दोनों ओरका तात्पर्य यह पाया जाता है कि यहां हर एक वस्तुका भाव अपनी २ भिन्नता में चलेगा। और किसी वस्तुका भाव घटेगा किसीका बढ़ेगा। ऐसी स्थितिमें घटे हुए भावोंमें वस्तु खरीदनेका प्रयास रक्खें और बढ़े हुए भावोंमें बेचनेका आइडिया रखते बार बार सौदाओंका अदला बदली करते रहें।

ता० १३ मार्च प्रातः ५ बजे से ३॥ दिनमें

होलीकी लपटोंके साथ साथ वस्तुके भावमें भी मामूली तेजी मालूम देगी। व्यापारिक टोनसे जिस वस्तु के भाव घटे हुए हों उसे बिना किसी संकोचके खरीद लीजिये और नफेके साथ वापस बेचनेका ख्याल भी रखिये। ध्यान रखिये चान्स सौ टका सही है।

ता० १७ मार्च दिनके १ बजेसे ३॥ दिनमें

वस्तुओंमें आई हुई तेजीका फिर जाना पाया जाता है। ध्यान रहे समय उपहास का चल रहा है ऐसे वक्त कोई भी सलाह बताना मजाक करना है।

ता० २० मार्च रातके १ बजे से ३॥ दिनमें

चान्दीमें अच्छी मन्दी आनेका योग है। चलती हुई मन्दी रुई रेटमें ८) १०) कालीमिर्च २०) ३०) डिफर्ड शेयरका भाव ४०) ५०) और एरण्डा मूंगफलीके रेटमें ३) सोना चांदी अलसी हेसियनके भावोंमें १॥) २)

टके बढ़ना पाया जाता है चान्स तत्कालीन है।

ता० २४ मार्च प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें

वस्तुओंके भावमें चलती मंहगाईमें सस्ताईका ववंडर आयगा। जिन जिन वस्तुओं के भाव बढ़े थे यहां घट जायेंगे। सोना चांदी रुई बेचने में रहिये साथ ही डिफर्ड शेयर भी सेल कर सकते हैं।

ता० २७ मार्च दिनके २ बजेसे ३॥ दिनमें

विक्रम सम्वत् २००५ का अन्तिम कदम तेजीके उछाले का है अतएव ताता स्टील डिफर्डके भावमें ५०) ७५) एरण्डा मूंगफली ३) ४) चान्दी २) ३) सोना, हेसियन, अलसी १) और कालीमिर्चके रेटमें २०) ३०) तथा रुई के मूल्यमें १०) १५) टके बढ़ना पाया जाता है।

ता० ३० मार्च रात ११ बजेसे ३॥ दिनमें

ऐसे समयमें मार्केटका टोन देखते, जिस वस्तुके भाव घटे हुए सुनाई दें उसे खरीद लें और बढ़े हुए भाव वाली वस्तुको बेचनेमें न चूकें।

ता ३ अप्रेल प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें

जो समस्या सारे वर्षमें नहीं जुटी वह यहां उपस्थित हुई है। राजकीय घटनाओंको भयंकर शब्दोंमें सूचित करते वस्तुओंके भावमें एक ओर तेजीका तूफान और दूसरी ओर मन्दीकी बाढ़ दिखाई देगी। संयोगोंकी समस्या देखते तेजी मन्दी लगा पेटामें घट बढ़के चान्समें लेते और बेचते रहिये।

ता० ६ अप्रेल शामको ७ बजेसे ३॥ दिनमें

वस्तुके भावमें कभी तेजी की फुकार और कभी कभी मन्दीका सन्नाटा मालूम देगा। यहां जिस वस्तुको लेने या बेचनेमें आपको (कस नफा) मालूम दे उसे लीजिये या बेचिये। भाव जरूर मिलेंगे।

ता० १० अप्रेल प्रातः ५ बजेसे ३॥ दिनमें

सौर बर्षान्त अन्तिम समय सोना चान्दी रुई आदिके लिये भरपूर मन्दीका सूचक है। मार्केट टोनके अनुसार वस्तु बेचिये और नफाके साथ सौदा सैटल करते बाजारसे अलग हो जायें।

——

तेजी मन्दी के जनरल चान्स

चान्दी, सुवर्ण, रुई बारदाना, शेयर, कालीमिर्च, पीपल आदि का बाजार रुख

ता० १० जनवरीसे ८ अप्रैल १९४९ तक

[लेखक—श्री पं० गणेशनारायण शर्मा दैवज्ञ]

चांदी के अचूक चांस

जनवरी में—ता० ११ तेज १) १॥) ता० २५ को तेज २) २।) ता० २७ को मन्दी २॥) ३) ता० २९ को तेज ॥।) १) फरवरीमें—ता० १२ को तेज १) १॥) ता० १७ से १९ तक तेजी ३) ३॥) रु० हो जायगी। ता० २३ से २६ तक मन्दा ४) ४।) रु० मार्च में—ता० १२ से १७ मार्च तक सोना चांदीमें तेजी चलेगी, चांदी ४) सोना ३) रु० लगभग तेजी, ता० २३ मार्च मन्दा १) १।), ता० ४ अप्रैल को चांदी तेज।

जनवरी १९४९ ई०

ता० चांदी सोना	रुई, बारदाना, शेयर,	कालीमिर्च पीपल गुड़
१० पहिले मन्दा १॥) फिर तेजी १।)	खुलते बाजार ११ बजेसे तेज।	२ बजेसे तेजी २) २॥)
११ तेजी ५ बजेसे मन्दा	तेजी रुई २) २॥) शे० ५)	पहले मं० १२ बजे तेज का० १) पी० ॥=)
१२ पहिले तेजी फिर मन्दी ३ बजे	तेजां रु० ३) बा० १) शे० ३)	तेजी कालीमिर्च ॥) पीपल ।–)
१३ दुतर्फा योग	नजरानें लगा दो	नजराने खाना।
१४ खुले मन्दा, १ बजे तेज	मन्दा रहे खरीदो	पहिले मन्दा दो बजेसे तेज।
१५ बाजार रुख देखो	तार फोनका ख्याल करो	अपनी ही समझमे खेलो
१७ पहिले तेजी फिर मन्दा	हर उछालेमें बेचो	आई हुई तेजी ठहरेगी नहीं
१८ मन्दी १॥) फिर तेज ॥)	मन्दा आकर तेज होगा	मन्दीमें खरीदो ३ बजे
१९ हर उछालेमें बेचो	मन्दी वालोंके हाथमें है	मन्दी खेलना ही जीत है
२० नजराने निकलेंगे	दुतर्फा लगा दो	पहिले मंदा फिर तेज
२१ सुवर्ण मन्दा	रुई शेयर मन्दा	तींन बजेसे तेजी
२२ तेजी ॥।) १)	तेजी चालू होगी	खुले भाव खरीदो गुड़ तेज
२४ मन्दी ४ बजे तेज	मन्दी ३ बजे खरीदो	घटे भावोंमें खरीद लो
२५ तेजी चलेगी	तेजी रुई ४) ५) शे० ८) १०)	तेजी कालीमिर्च २) २॥) पी० १) १।)
२६ समान भाव	दुतर्फा घटाबढ़ी	अच्छी घटाबढ़ी गुड़ मन्दा
२७ मन्दी खेलो	बाजार टूट जायगा	काली० ४) ५) पी० २) मन्दा
२८ सुवर्ण मन्दा	शेयर मन्दा बाकी तेज	पीपल मन्दी मिर्च तेज गुड़ तेज
२९ तेजी खेलो ॥) १)	तेजी रुई २) २॥) शे० ४) ५)	तेजी काली० २) पीपल १) गुड़ ॥।)
३१ रुख तेज है	घटे भाव खरीदो	तेजी वालोंकी जीत होगी।

फरवरी १९४९

ता० चांदी सुवर्ण	रुई, बारदाना, शेयर,	कालीमिर्च पीपल गुड़
१ दोनों तरफ चलेगा	पहले तेज फिर मन्दा	पहिले मन्दा फिर तेज
२ अच्छी मन्दी १) १।)	उछालेमें बेचो	मन्दी चलना पाया जाता है
३ तेजी चलेगी	घटे भावोंमें खरीदो	तार तेजीका आएगा
४ पहिले मन्दा रात तेज	उछालेमें बेचो	मन्दी आने पर खरीदो ३ बजे
५ दुतर्फा चलते तेजी	नजराने हजम होगे	घटे भावोंमें खरीदो
७ मन्दा ३ बजेसे तेज	घटे भाव खरीदो २ बजे	पहिले मन्दा फिर तेजी
८ तेजी मामूली रहेगी	खेलो तेजी रु० २) शे० ५) बा० १)	ओछी तेजी काली० ॥) गु० ≋) पी० ।)
९ बेचो मन्दी चालू	उछालेमें बेचो	काली० ।॥) १) गु० ।) पी० ॥) मन्दा
१० उछालेमें बेचो	मन्दी ४ बजे तक	पहिले मन्दा ३ बजेसे तेज
११ दिनमें मन्दा रहेगा	बेचो मन्दी रुई ३) ३।।) शेयर ५)	गुड़ ।॥) काली० १) १।) पी० ;।) मन्दा
१२ तेजी चांदी ।॥) सो० ॥)	तेजी खेलों बा० १) रुई ४) शे० ६)	गु० ।) का० मि० ।॥) पी० ।) तेज
१४ तेजी खेलना सीखो	घटे भावमें खरीदो	तेजीका योग आया है
१५ मन्दी चांदी १॥) सो० ॥)	उछालेमें बेचो	दुतर्फा घटाबढ़ी चलेगी
१६ दुतर्फा योग है	पहले मन्दा २ बजेसे तेज	घटे भावोंमें खरीदो
१७ घटे भावोंमें खरीदो	पहिले मन्दा फिर तेज	मन्दा होकर ३ बजेसे तेज
१८ रुख तेज	तेजी वालोंकी जीत है	खरीदे हुए मालका नफा लो
१९ पहिले तेज रात मन्दा	तेजीका नफा ४ बजे से लो	मन्दी आकर तेजी होगी
२१ तेजी खेलो चांदी १) सो० ॥)	खुले बाजारसे ३ बजे तक तेज	पहिले मन्दी फिर तेज
२२ तेजी ३ बजे करीब हो	उछाला आने पर बेचो	पहिले तेज रात मन्दा
२३ मन्दीका झोंका आएगा	बन्द बाजार नफा मन्दीका लो	मन्दी खेलना अच्छा है
२४ अच्छी मन्दी चान्दीमें	मन्दीका बाजार है	तारमें मन्दीकी खबर आएगी
२५ मन्दीका योग है	मन्दीके ग्रह चालू हैं	मन्दी खेलना अच्छा है
२६ चांदी १) सो० ।) मन्दा	मंदीका मुनाफा लो	बन्द बाजार होते पोतेमें आ जाना
२७ खुले बाजार खरीदो	फिर तरक्की तेजी है	तेजी वालोंकी जीत होगी

मार्च १९४९

ता० चांदी सोना	रुई, बारदाना, शेयर,	कालीमिर्च, पीपल, गुड़
१ उछालेमें बेचो	पहिले तेज १२ बजेसे मंदा	तीन बजेसे मंदा चलेगा
२ पहिले तेज फिर मंदा	२ बजेसे मंदा चलेगा	आज भी योग मंदीका है
३ मंदे चलेंगे	मंदीका नफा बंद बाजार लो	मंदी ४ बजे तक रहेगी
४ चांदी १) तेज	रुई ३) बा० १) शेयर ५) तेज	खुलते बाजार खरीदो
५ दुतर्फा योग	नजराने हजम	पहिले मंदा फिर तेज
७ घटाबढ़ीसे तेज	घटे भाव खरीद लें	तेजी चालू होगी
८ पहिले मंदा फिर तेज	२ बजेसे अच्छी तेजी	खरीदका नफा लो ४ बजे

९	समान भाव	नजराने खा जाना	तेजी मंदी लगा दो
१०	अच्छी तेजी	खुलते बाजार खरीदो	तेजी का० २) पी० ॥ गु० ॥!)
११	आज मंदा रहेगा	तेजीका नफा ले १२ बजे बेचो	खुलते बाजार बेचो
१२	पहिले मंदा फिर तेज	२ बजेसे तेजी चालू हो	अच्छी मंदी रहेगी
१४	तेजी मंदी लगा दो	नजराने लगा दो	समान भाव रहेंगे
१५	घटे भाव खरीदो	तेजी खेलना चालू करो	अच्छी तेजी हर वस्तु में
१६	रुख तेज	रुई बारदाना शेयर तेज	फिरतकी मंदी आ सकती है
१७	अच्छी तेजी	तेजी हो कर मंदा रहेगा	पहिले तेज ३ बजेसे मंदा
१८	ग्रह मंदीसे तेज	पहिले मंदा फिर तेज	तेजी चालू हो गई है
१९	फिरतकी मंदी	मामूली झटका मन्दीका है	तेजी खेलो
२१	तेजी खेलो	तेजी वालोंकी जीत हैं	तेजी हर वस्तुमात्र
२२	घटे भावोंमें खरीदो	तेजी खेलना अच्छा है	तेजीके योग चालू हैं
२३	बेचो मन्दी	मन्दीका झटका लगेगा	मंदी वालोंको लाभ होगा
२४	ग्रहयोग मन्दे ही हैं	योग बेचना बतलाते हैं	चाल मंदाकी अधिक है
२५	उछालेमें बेचो	मंदीके लक्षण हैं	मन्दीकी लाइन चालू
२६	मंदे अधिक हैं	मंदा पहिले ४ बजे तक	मंदाका नफा बंद बाजार ले लो
२८	खरीदो	२ बजेसे तेजी चालू	खुलते बाजार खरीदो
२९	भारी घटाबढ़ी	नजराने लगा दो	दोनों तरफसे जीत होगी
३०	मन्दी खेलो	मन्दीका व्यापार करो	तेजीमें बेचो
३१	घटे भावोंमें ले लो	२ बजेसे तेजी	पहिले मन्दा १ बजेसे तेज

अप्रैल १९४६

ता०	चान्दी सोना	रुई, बारदाना, शेयर,	कालीमिर्च पीपल गुड़
१	घटा बढ़ीसे तेज	घटे भाव खरीदो	पोते माल रखना
२	ओछी टोन	नजराने हजम	मामूली घटाबढ़ी
४	तेजी खेलो	घटे भाव खरीदो	फिर तेजी चालू हो गई है
५	दुतर्फा योग	मामूली घटाबढ़ी	घटे खरीदो ऊँचेमें बेचो
६	बेचो मन्दा है	आज मन्दी है	मन्दीके योगायोग हैं
७	आज भी मन्दी	मन्दी वालोंकी जीत है	मन्दा खेलो

नैषा तर्केण मतिरापनेया, प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय श्रेष्ठ ।
यां त्वमापः सत्य धृतिर्बतासि, त्वादृङ्नो भूयान्नचिकेतः प्रष्टा ॥

हे प्रियतम ! सम्यक् ज्ञानके लिए शुष्क तार्किकसे भिन्न शास्त्रज्ञ आचार्य द्वारा कही हुई यह बुद्धि, जिसे कि तू प्राप्त हुआ है, तर्क द्वारा प्राप्त होने योग्य नहीं है। तू बड़ा ही सत्यधारणा वाला है हे नचिकेतः! हमें तेरे समान प्रश्नकर्ता प्राप्त हो।

व्यापारसे मनमाना धन कमाओ ! धन कमानेका अचूक समय

रुई ७५०) या ४००) चांदी ७०) या २०५) सोना ६५) या १२२)

सरसों १२) या २८) बारदाना ८०) या १७५)

चपड़ा गुड़ अलसी एरण्डा सर्की (बिनोला) काली मिर्च तेल आदिके बाजारोंमें भी आशातीत भयानक घटाबढ़ी आगेके १४ मासमें होगी। चाहे जिस वस्तुका चाहे जिस मण्डीका सौदा हाजर या वायदेका आपको लाभ कारक हो यह चाहते हों, तो आज ही भारतके सुप्रसिद्ध कई व्यापारियोंसे प्रशंसा पत्र प्राप्त, तेजी मन्दी विशेषज्ञ ज्यो० पं० हरिशङ्कर शास्त्रीकी स्पेशल रिपोर्टके ग्राहक बनें। ग्राहक बननेसे ऊपरवाली तूफानी घटाबढ़ीसे व्यापारके अनुसार लाभ, सफलता, यश आदि प्राप्त होना सम्भव है। हाजर वा वायदे मार्केटकी तूफानी घटबढ़से कई मण्डियें तथा कई धन मदांध सटोरियोंके फेल होनेकी सम्भावना है। अतः आप व्यापारसे पर्याप्त लाभ लेना चाहते हों तो आज ही ग्राहक बनें। अन्यथा चांसोंको खोकर नफेकी जगह नुकसानी भरके डबल फीस देकर पूछना उचित होगा क्या ?

नोट (१) किसी भी रिपोर्टके ग्राहकको दैनिक साप्ताहिक मासिक व जनरल चांसोंका खुलासा पत्रोंसे एवं समय २ पर तार आदिसे फ्री मिला करेंगे।

नोट (२) किसी भी वस्तुकी रिपोर्ट या ज्योतिष सम्बन्धी बात बी० पी० द्वारा नहीं भेजी जावेगी।

नोट (३) गरीब व्यापारी व पुराने ग्राहक तथा सहयोगी ज्योतिषी तथा खुदके खर्चेसे तार द्वारा राय पूछने वाले व्यापारी फीसके लिये कुछ रियायत प्राप्त कर सकते हैं।

नोट (४) किसी भी वस्तुकी कोई भी रिपोर्ट लेने वाले ग्राहकोंकी जन्मकुण्डली हो तो भेजना आवश्यक है।

नोट (५) किसी भी १ वस्तुकी १ मासकी रिपोर्टकी फीस ५०) पेशगी भेजें।
१ वस्तुकी ३ मासकी रिपोर्टकी फीस १२१) आधी फीस पेशगी, बाकी मुनाफे बाद।
१ वस्तुकी ६ मासकी रिपोर्टकी फीस २००) आधी फीस पेशगी, बाकी मुनाफे बाद।
१ वस्तुकी १२ मासकी रिपोर्टकी फीस ३५०) आधी फीस पेशगी, बाकी मुनाफे बाद।

नोट (६) वार्षिकसे मासिक तककी सब रिपोर्टें खास स्पेशल होंगी। वार्षिक व ६ मासके ग्राहकोंकी फीस आधी पेशगी प्राप्त होने पर रियायती तोर से सन १९४९ के फरवरी व मार्चकी रिपोर्ट फ्री दी जावेगी, व उन्हें १।४।४९ से ग्राहक माना जावेगा।

नोट (७) ३।६।१२ मासके रिपोर्टके ग्राहकोंको बकाया आधी फीस नफे और समयानुसार देनी होगी।

नोट (८) ज्योतिषके आधारसे शुद्ध मुहूर्त तथा जन्मपत्र या वर्षफल आदि तथा भयानक कष्ट या तकलीफों आदिके निवारण तथा साधन एवं दरिद्रता आदिके निवारणके साधन आदि दैवीशक्ति द्वारा चमत्कृतरूपसे दूर करने करानेका काम भी बहुत कम चार्ज व शीघ्र रूपसे किया जाता है। विशेष जानकारीके लिए पत्र व्यवहार करें (किसी भी व्यापारीका पत्र व्यवहार बिना रजामन्दीके कभी भी प्रकट नहीं किया जाता है)।

अध्यक्ष—श्री सत्येश्वर ज्योतिष भवन

मु० पो० खिड़कीयां जि० होशंगाबाद (सी० पी०)

रे मन !

[लेखक—श्री पं० दयानन्द जी जोशी]

रे ! मन ! क्या नहीं कर सकता है तू ? । तू तो बड़ा समर्थ है । महान् तपस्वीको भी पतित बना देता है तू क्षण में । पूर्ण यतिको भी कामी बनाने की सामर्थ्य है तुझमें । अक्रोधीको क्रोधी बना कर घोर अनर्थ करने को उतारू कर सकता है तू क्षणमें ही । निर्लोभीको लोभके पङ्कमें फँसाते भी तो किञ्चित् देर नहीं लगती तुझे ! मोह जितको मोहके चक्करमें डाल कर रुला दे सकता है तू छिन भरमें । महादानीको भी चटपट कृपणताका पाठ पढ़ा कर बड़ा ही कंजूस बनाने में भी नहीं चूकता तू । स्वार्थहीन सज्जन व्यक्ति को भी स्वार्थान्ध बना कर उसके द्वारा निन्दित कर्म करवाने में भी बड़ा दक्ष है तू । बड़े २ साम्राज्योंको भी नष्ट करवाने में भी तो तू ही अग्रसर रहता है सदा । अपने आपको देश-भक्त कहने वालोंसे भी तो देशद्रोहका कार्य करवा डालता है तू; राजनीतिके चक्करमें तो अनेकों जातियों और राष्ट्रोंको उलझा कर ऐसा मतिहीन बना दिया है कि उनके द्वारा निकृष्टतम कर्म करवा कर उनको मानवताकी ओरसे गिरा-कर ही सांस ली है तूने । अपने अपने देशके हितके लिये ही ये गत दोनों महायुद्ध लड़वाये । अमेरिका बृटेन, रूस फ्रान्स आदि राष्ट्रोंने जर्मन, जापान और इटलीसे जिसमें कुटिल और कूट नीतिका खुल्लम खुल्ला उपयोग किया था, सभीने अपने अपने देशके हितके लिये ही तो । हार जीत तो होती ही है सदा किसी न किसीकी; युद्धके उत्तरदायित्वके लिये दोष भी है उन सभी राष्ट्रके नेता बराबर ही, क्योंकि स्वार्थपरता ही तो मुख्य कारण था । और होता ही है सदा ऐसी कलहोंका । भाई मन ! न्याय पूर्वक विचार कर देखेगा यदि स्वयं निष्पक्ष होकर तो मानना ही पड़ेगा इस द्वितीय महायुद्धके दोषी उन ही राष्ट्रों को जिन्होंने सन १९१४ वाले प्रथम महायुद्धके अन्त हुए बाद जर्मन राष्ट्रको छिन्न भिन्न करके नष्ट प्राय ही कर दिया था अपनी कुटिलतासे, जापानका बढ़ता व्यापार और वैभव खटकता था जिनकी आंखोंमें अतः अनेकों यत्न भी किये गये उसके मार्गमें रोड़े अटकानेके, उनके द्वारा जो सदा ही व्यस्त रहे हैं और रहते हैं अपने साम्राज्यको बढ़ानेमें पर सह नहीं सकते अन्य देशके साम्राज्यका फूलना फलना । लूट कर ले गये जो अपार द्रव्य हमारे देशका, भूखे नङ्गे करके हमें और परस्पर लड़ाकर विनाशका बीज बोते हुए टुकड़े कर गये जो हमारे भारत राष्ट्रके अपने स्वार्थके लिये । वे ही तो वास्तवमें दोषी हैं सभी युद्धोंके । क्योंरे ओह दुष्ट मन ! ऐसे अत्याचारी डाकुओं और देशवासियोंके हृदयमें बैठकर उनको चाल बाजियों और धोखा धड़ी सिखाने और इस देशका घोर अमङ्गल कराने वाला भी तो तू ही है ।

त्रिगुट देशोंके देश भक्त नेताओं (हिटलर तोजो मुसोलिनी) आदिको मित्र राष्ट्रोंके स्वार्थी और अत्याचारी नेताओं द्वारा निरन्तर कटु और अनुचित शब्दों द्वारा सम्बोधन करवाकर संसारमें उनको वृथा बदनाम करवाने वाला और युद्धान्त पश्चात केवल त्रिगुटके ही मुख्य नेता-ओंको युद्ध अपराधी ठहरवाकर उनके स्वार्थी शत्रुओं द्वारा मृत्यु दण्डादि अमानुषीय व अन्याय युक्त विधान करवाने वाला भी तो तू ही है ओ मन ! जब कि सभी युद्ध ग्रस्त राष्ट्र अपराधी है युद्धके लिये बराबर ही और वास्तविक दोषी ही न्यायका ढिंढोरा पीटकर दण्ड दें दूसरे देशके अनन्य भक्तोंको तब यही तेरा न्याय है ओ अन्यायी मन !

दासताकी बेड़ियोंसे छुटकारा दिलाने वाले महान् त्यागी भारतके उच्चादर्शोंको आधुनिक स्वार्थी जगत्में उच्च-तम सिद्धान्त सिद्ध करके मनवाने वाले महात्मा गांधी को तेरे ही कुचक्रके कारण गोलीका आखेट बनना पड़ा था रे दुष्ट मन !

मानव देहधारीसे केवल मतभेद और प्रतिशोधकी तीव्र भावना के कारण द्वेष और वैमनस्य पूर्ण शत्रुत्व रखना अपने अन्तरात्माके आदेशकी अवहेलना ही तो है ।

आर्य्य (हिन्दू) धर्मके साधुओंकी वाणियां कितने उच्च आदर्शकी शिक्षा दे रही है ऐ हिन्दुओंके हृदयोंमें रहने

वाले मन सुन तो—

"जो ताकूं कांटा बुवे ताहि बोय तू फूल ।
ताकूं फूलके फूल हैं वाको हैं तिरशूल ॥"

आदि २ ऐसी अनेक वाणियां हिन्दुत्वकी महत्तम भावनाकी प्रतीक ही तो हैं। ऐसी ही उच्च आदर्शकी बातें कहनेके कारण ही तो महात्मा गांधी मारे गये एक हिन्दू ही के द्वारा तेरी कृपासे ओ पापी मन ! हिन्दू धर्म नोचता नहीं सिखाता कभी भी ओ अज्ञानी मन !

प्रभुता प्राप्त शासकवर्गके हृदयमें पैठकर उनकी बुद्धिको सन्देहात्मक और दुराग्रही बनाकर संघर्ष बढ़ाने सहायता कर रहा है तू । और मानव भाषा (हिन्दी) के विरुद्ध अच्छे राजनीतिज्ञ माने जाने वाले नेताओंके द्वारा मिथ्या हठ करवानेकी महान् भूल करने को उकसाने वाला भी तो तू ही है ऐ अदूरदर्शी और खटपटी मन !

नीचता पूर्ण बातों और घातक सिद्धांतोंको हिन्दू बच्चों के कोमल हृदयोंमें घुसाकर हिन्दुत्वको मिटानेका संकल्प दुराशा ही है ओह कर्मीने मन ! एक सच्चा आर्य्य (हिन्दू) तो शत्रुको भी इतनी घृणित सम्मति नहीं दे सकता। रे मूर्ख वह तेरा दास नहीं हो सकता क्योंकि वह आत्माके शुद्ध अजर अमरादि का ज्ञाता होता है। क्यों किसी हिन्दू बालकके हृदयमें ऐसा विष बीज बोनेका असफल प्रयास कर रहा है ? दुष्ट नीच ! तुझे उचित तो यह था कि भारतके स्वतंत्र होते ही सभी भारतीयोंका और मुख्यकर अपने आपको हिन्दू मानने वाले प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें घुसकर सभी प्रकारके निजी स्वार्थ और साम्प्रदायिक भेद-भाव भुलाकर निष्कपट भावसे अपने देशकी सेवा करने वाले भाईयों को तन-मन-धनसे पूर्ण सहयोग देनेकी प्रबल प्रेरणा करता तू, शुद्ध प्रेमके साथ और अपने देशकी स्वतंत्राको इतनी दृढ़ बननेमें सहायक होता कि संसारकी सभी राजसत्तायें मिलकर भी इसकी ओर देखनेका साहस न कर सकतीं और संसारका प्रमुख राष्ट्र पुनः होसकता यही देश भारत !

किसी भी स्वतंत्र देशमें जो अपना शिर सदैव संसारके राष्ट्रोंमें ऊंचा रखना चाहता है कभी भी संकुचित साम्प्रदायिक राज्य नहीं पनप सकता रे मूर्ख मन ! अब भी समय है कि देश वासियोंके हृदयोंमें घुसकर देशकी स्वतंत्रामें सच्चाईसे भाग लेनेकी प्रेरणा करनेमें लग जाय तू ! याद रख कि जो लोग इस समय शासन रूपसे सेवा करने वालोंका विरोध कर रहे हैं; वे अदूर दर्शी हैं कहीं इस तरह पुनः देश अंग्रेजोंकी दासतामें न चला जाय, अतः रे मन ! ऐसे नीच विचारोंके हृदय प्रदेशमें आसन जमाकर उन्हें सन्मार्ग में ला ताकि तेरा भी कल्याण हो। शासक वर्गके हृदयोंमें पैठकर उनको निष्पक्ष और निःस्वार्थ सेवा करनेकी सुमति दे रे मित्र मन !

—०—

हिन्दुत्वका गौरव

आज भी हिन्दुत्वका गौरव-गान सुनकर मानवताका माथा ऊँचा होता है। हिन्दुत्वमें महानता, आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास, प्रगति, स्वावलम्बन और सम्पूर्ण विश्वको अपने उदार अङ्कमें भरकर अभ्युदय तथा श्रेयके पथ पर चलानेका गुरुत्व है।

हिन्दुओंकी निर्भयता, वीरता, साहस और बलिदानका इतिहास विश्वधर्मकी रूप रेखा है। हिन्दु-संस्कृति एक पूर्ण धर्म-मानवधर्मकी आधार शिला है।

ज्ञान, विज्ञान, गौरव, विजय, धर्म और मनुष्यताका मूर्तिमान् स्वरूप हिन्दु है।

सनातन-संस्कृति और एक धर्म-राष्ट्रकी स्थापना हिन्दुका कार्यक्षेत्र है। हिन्दु निर्भय होकर अपने अधिकारोंको प्राप्त करनेके लिए प्रगतिशील रहता है। हिन्दुस्थान पर हिन्दुओंका धार्मिक और राष्ट्रीय अधिकार है।

रुई चांदी सोना गुड़ खांडकी अनुभूत रिपोर्ट

[लेखक—दै० भू० श्री पं० गिरिधारीलाल जी ज्यो०]

(१) प्रथम सप्ताह—

पौष शुक्ला १० रविवार ता० ६ जनवरी १६४६ से ता० १४ जनवरी तक मंगलका अस्त उत्पात करेगा। रुईमें मन्दीकी चाल रहेगी, बढ़े वहां बेचो। ता० १०-११ और ता० १३-१४ में अवश्य मन्दी। चान्दी बढ़ेगी नहीं तो घटेगी भी नहीं, परन्तु ता० १०-११ में एक बार पूरा मन्दीका रिएक्शन बनेगा। यदि यहां मन्दी हो तो आगे भी मन्दी समझना। गुड़ खांडमें उथलपुथलसे तेजी होगी।

(२) दूसरा सप्ताह---

ता० १५ से २३ जनवरी तक रुई तेज होके मन्दी होगी। ता० १६-१७ और २२-२३ में दो दिन अवश्य तेज जनरल ध्यान घट बढ़ ज्यादा होगा। चान्दीमें मन्दी होके तेजी होगी। ता० १७-२१-२२-२४ तेजी। गुड़ खांड सम भाव या तेज रहेगा।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० २४ से ३१ जनवरी तक चान्दीमें घट बढ़ अवश्य होगी। घटनेमें लेते रहो घबराओ मत २ ३) की अवश्य तेजी होगी। ता० २४ से २६ तक प्रति दिन ॥) घटेगा, १) रु० बढ़ेगा। ता० २८-२६ को विशेष घट बढ़। रुईमें ता० २५-२६-२७ तेजी होगी। ता० २८-२६ में एक अवश्य मन्दी। गुड़ खण्डमें घट बढ़से तेजी। ता० २६ से गुड़में अच्छी घट बढ़।

(४) चौथा सप्ताह—

रुई चान्दीमें अधिक घट बढ़ होगी। ता० १-२ फरवरी को रुई चान्दीमें उछाला आवेगा। हमारा ध्यान तेजीमें है परन्तु दुतर्फा लगाके कार्य करो। खाण्डमें तेजीके योग हैं। तिलहनमें विशेष घट बढ़का साम।। ता० ६ फरवरी तक करना ।ड़ेगा।

(५) पाँचवां सप्ताह—

ता० ७ से १३ फरवरी तक रुई एक दिन तेज एक दिन मन्दी होकर जनरलमें मन्दीकी सूचक है। ता० ७-८-६-१० में एक तेजी है और सब मन्दी है। चान्दीमें घट बढ़ रहेगी। गुड़ खांड साधारण तेजीमें चलेंगे।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १४ से २४ फरवरी तक रुई बेचनेमें कोई भय नहीं। ता० १४ से ही इकतर्फी मन्दी रहेगी। गुड़ खांडमें तेजी। चन्दीमें ता० १६ या १७ से तेजी। रुई ता० १४ के पहले यदि विशेष मन्दी नहीं हुई तो ता० १४ से आगे अच्छी मन्दी होगी। ता० २४ को जो वस्तु तेज हो उसका व्यापार तेजीका और जो मन्दी हो उसका मन्दीका ता० २७ तक करना हित है। ता० २६ को रुई तेज और सब वस्तु मन्दी।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० १ से १४ मार्च तक रुई अन्तके तीनों दिनोंमें तेजी और शेष सब दिनोंमें मन्दी होगी। ता० ४ से १४ तक निश्चय मन्दी होगी अचूक चांस है। चान्दीमें मन्दीके कोई योग नहीं है। ता० १ को मन्दीमें खरीदो। ता० ६ के पहले-पहले तेजी होगी। यदि ता० ६ को भी तेजी रहे तो ता० १४ तक तेजी चलेगी। यहां शुक्रास्त उत्पात करेगा। ता० ८।६।१०को रुई चान्दीमें उथल पुथल होगी।

(८) आठवां सप्ताह—

ता० १५ से २१ मार्च तक रुई चांदीमें कुछ मन्दी होगी। ता० १६-२०-२१ को घट बढ़ होगी। चान्दी घटके बढ़ जायगी। रुईके लिए निश्चित नहीं। गुड़ खाण्डमें तेजीका नवीन वातावरण खड़ा होगा।

(६) नवम सप्ताह—

ता० २२से २६ मार्च तक पञ्चग्रहोंका योग हो रहा है। यहां पर या तो बाजार बंद रहेगा या तेजी मन्दी वाले अपना-अपना दाव पेच लगाते रहेंगे। हमारा ध्यान मन्दीका है।

(१०) दशवां सप्ताह—

ता० ३० मार्चसे ७ अप्रेल तक रुई मन्दी। यदि ता० ३१ को रुई मन्दी रहे तो पक्की मन्दी समझो। चान्दीमें घट बढ़ होगी। रेवतीमें कई ग्रहोंका योग मन्दीका सूचक है। गुड़ खाण्डकी मन्दीमें खरीदना अच्छा है।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' से]

पौष शु०	११ सोमवार	ता० १०	जनवरी	पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए।
	१२ मंगलवार	ता० ११	,,	पुत्रदाएकादशी व्रत वैष्णव सम्प्रदायका।
	१३ बुधवार	ता० १२	,,	प्रदोष व्रत, लोहड़ी
	१४ गुरुवार	ता० १३	,,	मकर संक्रान्ति, पुण्यकाल दूसरे दिन, मुहूर्ती १५
	१५ शुक्रवार	ता० १४	,,	सत्य व्रत, माघस्नानारम्भ, संक्रान्तिपुण्यकाल।
माघ कृष्ण	३ सोमवार	ता० १७	,,	श्रीगणेश ४ संकष्टचौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।३६
	११ सोमवार	ता० २४	,,	षट्तिला एकादशी व्रत।
	१३ बुधवार	ता० २६	,,	प्रदोष व्रत।
	३० शनिवार	ता० २९	,,	शनैश्चरी अमावस्या।
माघ शुक्ल	१ रविवार	ता० ३०	,,	चन्द्रदर्शन।
	५ गुरुवार	ता० ३	फरवरी	वसन्त पचमी श्री ५
	८ रविवार	ता० ६	,,	भीष्माष्टमी।
	११ बुधवार	ता० ९	,,	जया एकादशी व्रत।
	१२ गुरुवार	ता० १०	,,	भीष्म १२
	१३ शुक्रवार	ता० ११	,,	प्रदोष व्रत।
	१४ शनिवार	ता० १२	,,	कुम्भ संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नपर्यन्त, सत्यव्रत।
	१५ रविवार	ता० १३	,,	माघी १५ माघस्नान समाप्ति।
फाल्गुन कृष्ण	४ बुधवार	ता० १६	,,	श्रीगणेश चौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ६।४०
	८ रविवार	ता० २०	,,	श्रीसीता जन्म ८
	११ बुधवार	ता० २३	,,	विजया एकादशी व्रत।
	१३ शुक्रवार	ता० २५	,,	प्रदोष व्रत, श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत।
	३० रविवार	ता० २७	,,	अमावस्या।
फाल्गुन शुक्ल	२ मंगलवार	ता० १	मार्च	चन्द्रदर्शन।
	७ सोमवार	ता० ७	,,	होलाष्टकारम्भ।
	१० गुरुवार	ता० १०	,,	गुरुपुष्ययोग।
	११ शुक्रवार	ता० ११	,,	आमला एकादशी व्रत।
	१२ शनिवार	ता० १२	,,	प्रदोष व्रत।
	१५ सोमवार	ता० १४	,,	सत्य व्रत, होलिकादहन, मीनसंक्रान्ति मु ३० पु. का. मध्या.या.
चैत्र कृष्ण	१ मंगलवार	ता० १५	मार्च	धूलिवन्दन (छारेंडी) श्वपचस्पर्श होला १
	३ गुरुवार	ता० १७	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ६।३४
	५ शनिवार	ता० १९	,,	रङ्ग पंचमी।
	७ सोमवार	ता० २१	,,	शीतला ७

चैत्र कृष्ण	११ शुक्रवार	ता० २५	मार्च	पापमोचनी एकादशी व्रत ।
	१२ शनिवार	ता० २६	,,	शनिप्रदोष व्रत ।
	३० मंगलवार	ता० २६	,,	अमावस्या ।
चैत्र शुक्ल	१ बुधवार	ता० ३०	,,	चान्द्र सम्वत्सर २००६ प्रारम्भ नवरात्रारम्भ घटस्थापन ।
	२ गुरुवार	ता० ३१	,,	चन्द्रदर्शन ।
	८ बुधवार	ता० ६	अप्रैल	श्री दुर्गाष्टमी ।
	६ गुरुवार	ता० ७	,,	श्री राम ६ व्रत ।

महापुरुषोंकी जयन्तियां निर्वाणदिन और प्रसिद्ध मेले

माघ कृ०	२ रविवार	ता० १६	जनवरी	स्व० श्री १०५ मती राजमाता सोलन (सिरमौरीजी) निर्वाण तिथि
माघ कृष्ण	१० रविवार	ता० २३	जनवरी	श्री सुभाषचन्द्र बसु 'नेताजी' का ५३ वां जन्मदिवसोत्सव ।
माघ शुक्ल	१ रविवार	ता० ३०	जनवरी	स्व० श्री महात्मा गांधी निर्वाण दिन ।
	८ रविवार	ता० ६	फरवरी	स्व० श्री पं० मोतीलाल नेहरू निर्वाण दिन ।
फाल्गुन कृष्ण	७ शनिवार	ता० १६	फरवरी	स्व० श्री गोपाल कृष्ण गोखले निर्वाण दिन ।
	६ सोमवार	ता० २१	फरवरी	समर्थ श्रीगुरु रामदास जयन्ती ।
	१० मंगलवार	ता० २२	,,	स्व० श्री कस्तूरबा गांधी निर्वाण दिन ।
फाल्गुन शु०	१ सोमवार	ता० २८	,,	स्व० श्री कमला नेहरू निर्वाण दिन ।
चैत्र कृष्ण	४ शुक्रवार	ता० १८	मार्च	स्व० श्री १०५ मती श्र० सौ० महारानी साहिबा सोलन निर्वाण तिथि
चैत्र कृष्ण	६ बुधवार	ता० २३	,,	स्व० श्री भक्तसिंह राजगुरु सुखदेव फांसी दिवस ।
	१० गुरुवार	ता० २४	,,	स्व० श्री गणेशशङ्कर विद्यार्थी बलिदान दिवस ।

ज्योतिर्विज्ञान

[लेखकः—श्री पं० केदारनाथजी राजज्यौतिषी]

हम अपने सूर्य को तारा नहीं कहते सूर्य ही कहते हैं। और वास्तवमें भी पृथिवी निवासी जीव मात्रके लिये ये ही सूर्य, सूर्य हैं। किन्तु विश्वमें जैसे और और चमकीले तारे हैं, उसी भांति हमारा सूर्य भी एक तारा ही गिना जाता है। क्योंकि जितने भी आकाशमें तारे दीख रहे हैं, ये सब हमारे सूर्यसे प्रकाशमें कम नहीं हैं। इसका कारण आकाशके स्थिर नक्षत्र सबके सब हमारे सूर्यके समान ही चमकीले हैं, किन्तु हमारा सूर्य हमसे तारा नाम धारी उन असंख्य सूर्योंकी अपेक्षा अधिक सन्निहित (नजदीक) है इसी कारण इससे ताप तथा प्रकाश पृथिवी पर हमको मिलता है, अथवा यों कहना उचित होगा कि—

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च"

अर्थात् सूर्य है तो हम हैं और सूर्य नहीं तो हम भी जीवित नहीं रह सकते। जिस दिन सूर्यके उदय में जरा भी विलम्ब हो जाय अथवा वर्षा आदि ऋतुओंमें दश पांच दिन यदि सूर्य भगवान बिलकुल दर्शन न दे तो कैसी खलबली मच सकती है। सूर्यकी सत्तासे ही हमारी सत्ता है, इसको माननेमें किसी को कुछ सन्देह नहीं रह जाना चाहिए। आजके ज्योतिर्विज्ञान वेत्ताओंने सप्रमाण निश्चय कर लिया है कि हमारा यह सूर्य हमसे ६ करोड़ २७ लाख मील दूर है। प्रकाशकी गति आजके ज्योतिर्विज्ञानने प्रति सैकिण्ड १८६००० मील निश्चत की है। इस गणनासे सूर्यका प्रकाश हम तक पहुँचनेमें ८॥ मिनट लग जाते हैं।

जो तारा आज ध्रुव कहलाता है वह भी एक सूर्य है और हमसे इतनी दूर है कि एक सैकिण्डमें १८६००० मीलकी गतिसे चलता हुआ प्रकाश पृथिवी पर ४७ वर्ष में आकर पहुंचता है। जिस क्षणमें हम आज ध्रुवको देख रहे हैं ठीक उस स्थान पर इस क्षणसे ४७ वर्ष पूर्व के क्षणमें उस स्थान पर था। आजका चला प्रकाश तो आजसे ४७ वर्ष पीछे दीखेगा। ऐसे-ऐसे तारा नामधारी सूर्योंकी दूरी जानी जा चुकी है। भविष्यमें २०० इंच वाली अमेरिकाकी दूरबीनके उपयोगसे कितने सूर्य देखे जा सकेंगे यह कल्पनातीत है।

आजके नवयुगमें ईश्वर की सत्ताके माननेमें भी संदेह ग्रस्त लोग भी हैं, परन्तु उनको ईश्वर सत्ताके माननेमें भले हीं सन्देह हो, किन्तु सूर्यकी सत्तासे ही हमारी सत्ता है इस नियमके माननेमें किसीको अणुमात्र भी संदेह नहीं हो सकता।

आजके वैज्ञानिकोंका सिद्धान्त हो चुका है कि एक दिन यह सूर्य भी धीरे धीरे ठण्डा होते होते बिलकुल ताप रहित हो जायगा। प्रलय काल माना जा सकता है। अस्तु।

वैदिक सिद्धान्तके अनुसार आजके युगको भी मान लेना पड़ेगा कि सूर्य कभी भी ठण्डा नहीं होगा। चाहे इसकी रोशनी कितनी ही खर्च होती रहे, क्योंकि जिस इञ्जनमें कोयले पड़ते रहें वह इञ्जन ठण्डा क्यों होने लगा। इसी प्रकार इस अग्निसोमात्मक जगत्‌में अग्निका आहार सोम है। सूर्य भी अग्नि रूप है, इसमें सतत सोमकी आहुती होती रहती है, और उस सोमका ही सूर्य में जलते रहना सूर्यकी सत्ताका आधार है। जिस दिन यह आहुति सूर्यमें पहुँचना बन्द हो जायगी वहीं प्रलयकाल होगा।

पुराणकारोंने ब्रह्माजीके १ दिनको सृष्टिकाल और उतनी ही बड़ी रात्रिको प्रलयकाल कहा है, इस कालके सूक्ष्मसे सूक्ष्म भेद लेकर उससे बड़ेसे बड़े परिमाणके कोष्ठक यहां लिखता हूँ।

वार्कलिनाम्न ऋषेर्मते----

१५	स्वेदायनानि	.... १	लोमगर्तः
१५	लोम गर्ताः	.... १	निमेषः
१५	निमेषाः	.... १	अनः
१५	अनाः	... . १	प्राणः
१५	प्राणाः	.... १	इदम्
१५	इदानि	.... १	एतर्हि
१५	एतर्हीणि	.... १	क्षिप्रम्
१५	क्षिप्राणि	... . १	मुहूर्तः
३०	मुहूर्ताः	.... १	अहोरात्रम्

पुराणकारमते----

१५	निमेषाः	.. .. १	काष्ठा
३०	काष्ठाः	.... १	कला
३०	कलाः	.... १	मुहूर्तः
३०	मुहूर्ताः	.... १	अहोरात्रम्

अमरमते

१८	निमेषाः	.... १	काष्ठा
३०	काष्ठाः	.. .. १	कला
३०	कलाः	.... १	क्षणः
१२	क्षणाः	.... १	मुहूर्तः
३०	मुहूर्ताः	... . १	अहोरात्रः
३०	अहोरात्राः	.... १	मासः
१२	मासाः	.... १	संवत्सरः

साधारणमते

१५	कलाः	.... १	घटी
२	घट्यौ	... ... १	मुहूर्तः
१५	मुहूर्ताः	.... १	अहः
२	अहनी	.... १	अहोरात्रम्
१५	अहोरात्राः	... . १	पक्षः
२	पक्षौ	.... १	मासः
६	मासाः	.... १	अयनम्
२	अयने	.... १	संवत्सरः

कल्पे मन्वन्तराणि		मन्वन्तरे दिव्य युगानि	
१	स्वायम्भुवम्	.... ७१	... ... ७१
२	स्वारोचिषम्	.... ७१	.... १४२
३	उत्तमम्	.... ७१	.... २१३
४	तामसम्	.... ७१	.. ... २८४
५	रैवतम्	.... ७१	.... ३५५
६	चाक्षुषम्	.... ७१	.... ४२६
७	वैवस्वतम्	.... ७१	.... ४९७
८	सूर्यसावर्णिः	.... ७१	.... ५६८
९	दक्षसावर्णिः	.... ७१	.... ६३९
१०	ब्रह्मसावर्णिः	.... ७१	.... ७१०
११	धर्मसावर्णिः	.... ७१	.... ७८१
१२	रुद्रसावर्णिः	.... ७१	.... ८५२
१३	देवसावर्णिः	.... ७१	.... ९२३
१४	इन्द्रसावर्णिः	.. ... ७१	.. .... ९९४
१५	सन्ध्या	.... ६	.... १०००

त्रिंशत्कल्पास्त्रिंशद्दिनानि-एको ब्रह्ममासः

१	श्वेतवाराहः	१	नारसिंहः
२	नीललोहितः	२	समानः
३	वामदेवः	३	आग्नेयः
४	रथन्तरः	४	सौम्यः
५	रौरवः	५	मानवः
६	प्राणः	६	तत्पुरुषः
७	बृहत्	७	वैकुण्ठः
८	कन्दर्पः	८	लक्ष्मी
९	सत्यः	९	सावित्री
१०	ईशानः	१०	अघोरः
११	व्यानः	११	वराहः
१२	सारस्वतः	१२	वैराजः
१३	उदानः	१३	गौरी
१४	गारुडः	१४	महेश्वरः
१५	कूर्मः	३०	पितृकल्पः
शुक्ल पक्षः		कृष्ण पक्षः	

	युगानि	सन्धिकालः	मध्यकालः	संध्यांशाः	समष्टिः
देववर्षमानानि	सत्ययुगम्	४००	४०००	४००	४८००
	त्रेतायुगम्	३००	३०००	३००	३६००
	द्वापरयुगम्	२००	२०००	२००	२४००
	कलियुगम्	१००	१०००	१००	१२००
	चतुर्युगम्	....	....	....	१२०००
	दिनकल्पः	...	...		१२००००००
	रात्रिकल्पः	...	....		१२००००००
मानुषवर्षमानानि	सत्ययुगम्	....	...		१७२८०००
	त्रेतायुगम्	....	....		१२९६०००
	द्वापरयुगम्	....	...		८६४०००
	कलियुगम्	....	...		४३२०००
	चतुर्युगम्	...	....		४३२००००
	दिनकल्पः	....	....		४३२००००००००
	रात्रिकल्पः	....	....		४३२००००००००

एकस्मिन्मन्वन्तरे मानुषवर्षाणि	३०६७२००००
षट्सु मन्वन्तरेषु मानुषवर्षाणि	१८४०३२००००
सप्तविंशति दिव्ययुगानां मानुषवर्षाणि	११६६४००००
सत्ययुगे मानुषवर्षाणि	१७२८०००
त्रेतायुगे मानुषवर्षाणि	१२९६०००
द्वापरयुगे मानुषवर्षाणि	८६४०००
कलेर्भुक्तानि मानुषवर्षाणि	५०००
अद्यावधि सृष्टेर्भुक्तकालः	१९६०८५३०००
कलेर्भोग्यानि मानुषवर्षाणि	४२७०००
त्रिचत्वारिंशद्दिव्ययुगानां मानुषवर्षाणि	१८५७६००००
उत्तरदिनार्धे सप्तमन्वन्तराणां वर्षाणि	२१४७०४००००
चतुर्दशमन्वन्तरान्ते सन्धिकालः	२५९२००००
अद्यप्रभृतिसृष्टेर्भोग्यकालः	२३५९१४०००

पुराणमते निमेषाः			अमरमते निमेषाः			धार्कलिमते निमेषाः		
काष्ठा	....	१५	काष्ठा	....	१८	अनः	....	१५
कला	......	४५०	कला	....	५४०	प्राणः	......	२२५
मुहूर्तः	....	१३५००	क्षणः	....	१६२००	इदम्	....	३३७५
			मुहूर्तः	....	१९४४००	एतर्हि	....	५०६२५
						क्षिप्रम्	......	७५९३७५
						मुहूर्तः	... .	११३९०६२५

★ मेरी बदली कब होगी ★

ज्योतिषियोंके पास नौकरी-पेशा व्यक्तियोंके बहुधा इस प्रकारके प्रश्न पूछे जाते हैं कि उनका स्थानान्तर वर्तमान स्थानसे किसी अन्य जगह होगा या नहीं ? यदि हुआ तो कब ? मैंने इस प्रकारके प्रश्नोंको कई बार हल करके अनुभव किया है। उसी योगको 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकों, इस प्रकारके पृच्छकों एवं सर्वसाधारण ज्योतिषियों के विचारार्थ यहां लिख रहा हूँ। मुझे आशा है पाठक वृन्द इस प्रकारके प्रश्न के उपस्थित होने पर इसका अनुभव करेंगे।

जब कभी कोई व्यक्ति यह प्रश्न करे कि मेरा स्थानान्तर होगा क्या ? उस समयकी प्रश्न-लग्न कुण्डलीमें यदि निम्न लिखित ग्रहस्थिति हो तो प्रवास होगा अन्यथा नहीं होगा।

लग्न, सप्तम, तृतीय अथवा नवम (प्रवास स्थान) स्थानमें चन्द्र हो तो समीपका प्रवास होता है और यदि लग्न तथा चन्द्र चरराशिगत हों तो अधिक लम्बा प्रवास होगा। प्रश्नकर्ताकी पत्रिकामें जब चन्द्र चरराशिपर भ्रमण करता है तब वह घर छोड़ता है। और जब गुरु चरराशिमें प्रवेश करता है तब भी स्थानान्तर होता है। कुण्डलीमें प्रवास स्थान पर भी यह योग अनुभवमें आया है। —श्री पं० हरिशंकर शास्त्री ज्यो०

मकर-संक्रान्ति

[लेखक—गणकरत्न श्री पं० नन्दलालजी चौमाल ज्योतिश्शास्त्री]

यथा सूर्योजगद्धाता जगदस्य प्रवर्तकः।
तद्वत् संक्रमणस्तस्य शुभाशुभ निदर्शकः॥

सं० २००५ शकः १८७० पौष शु० १४ गुरुवार ता० १३ जनवरी १९४८ ई० को सूर्योदयादिष्ट घट्यादि २८।५७ पर चतुर्दशी तिथि, गुरुवार, आर्द्रानक्षत्र, ऐन्द्रयोग, गरकरण और कर्कलग्नमें सूर्य मकर राशिमें प्रविष्ट होंगे। यहींसे उत्तरायण और शिशिर ऋतु (निरयनमानसे) तथा देवताओंका दिन और दैत्योंकी रात्रि प्रारम्भ होती है।

पुण्यकालादि विचार

धर्मसिन्धु के "मकरे परे चत्वारिंशन्नाड्यः पुण्यकालः" इस वचनसे दूसरे दिन अर्थात् पूर्णिमा शुक्रवार ता० १४ जनवरीको मध्याह्न १२।५७ पर्यन्त विशेष उत्तर पुण्यकाल रहेगा और मध्याह्नके अनन्तर सूर्यास्त पर्यन्त उत्तरोत्तर गौण पुण्यकाल माना जायेगा। मकर संक्रांति और षट्तिला एकादशीको तिलमिश्रित जलसे स्नान, शरीरमें तिलोंका उद्वर्तन, तिलहवन, तिलमिश्रित जलपान, तिलभक्षण और तिलदान करनेका विशेष महात्म्य है—

तिलस्नायी तिलोद्वर्त्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पापनाशिनी॥

वैसे तो सारी हेमन्त और शिशिर ऋतुमें तिल सेवन स्वास्थ्यके लिए अत्यन्त हितकारक है। तिल अत्यन्त पौष्टिक पदार्थ है, आयुर्वेद शास्त्रमें भी इसके अनेक गुण हैं। कृष्णतिलका विधिपूर्वक नियमित सेवन करनेसे अनेकों रोग नष्ट होकर आयु ओज कान्तिकी वृद्धि होती है, इसी कारण हमारे कान्तदर्शी महर्षियोंने माघ मास (मकरके सूर्य) में तिल सेवनको धार्मिक रूप दिया है, अस्तु।

यह संक्रान्ति १५ मुहूर्ती, अश्ववाहन, उत्तरमें मुख, पूर्वमें गमन, कृष्णवस्त्रा, चर्मकंचुकी, कांस्यपात्र, चित्रान्न-भोजन, इक्षुरसपान, विप्रजाति और वृद्धावस्थाकी है। संक्षेपमें इनका फल निम्न है—धान्य और रसादि पदार्थ की महंगता रहे, रोगभय, आर्यजनों और श्रमिकवर्गको पीड़ा, दृष्टिगमन दिशादिकाफल—उत्तरीय प्रदेशोंमें कष्ट, शूर, मद्र, कलिंग (जगन्नाथपुरीसे कृष्णातीर कटक पर्यन्त) बंगाल मगध (बिहार) के राजन्यवर्गको क्लेश होगा। ईशान कोणमें भय व्यापेगा, दक्षिणमें युद्ध भय और पश्चिममें सुभिक्ष होगा।

यह संक्रान्ति रात्रिके प्रथम प्रहर, कर्क लग्नमें प्रवेश हुई है, लग्नेश चन्द्रमा व्ययमें है। धन भावमें शनि और सुखेश रोगेश भाग्येश लाभेश गुरु शुक्र छठे हैं, इस ग्रह स्थितिका सम्यक् विचार करनेसे ज्ञात होता है कि राजा प्रजाकी शारीरिक मानसिक आर्थिक स्थिति उत्तम न रहेगी। यत्र तत्र संघर्ष छिड़ा रहेगा। कृषकों और श्रमजीवियों की स्थितिमें सुधार न होनेसे उनमें क्रान्तिकी भावना जागृत होगी। संसार आर्थिक संकटसे पीड़ित रहेगा।

काश्मीर कर्क राशिके प्रभावमें है और संक्रान्ति प्रवेश समयका लग्न भी कर्क ही है अतः अभी काश्मीरकी समस्या सुखदरूपमें सुलझती प्रतीत नहीं होती। दोनों पक्षोंकी ओरसे विरामसन्धि या युद्ध बन्द हो जाने पर कुछ समयके लिए अस्थायी शान्ति हो सकती है, परन्तु आगे गुरुके मकरमें जाने पर काश्मीर विभाजन अवश्यम्भावी है; परिणामस्वरूप आगामी वर्षमें भी वहां विद्रोहाग्नि भड़कती रहेगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक सङ्घका वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलन सरकारके सशक्त हाथोंसे दबा दिया जायेगा परन्तु भस्मान्तरित वह्निकी भांति यह आग अन्दर ही दबी रह कर समयान्तरसे पुनः प्रज्वलित हो अपने विरोधियोंको भस्मसात् कर देगी।

——

साहित्य-समालोचना

ज्योतिर्विज्ञान (मासिक पत्र)

वार्षिक मूल्य ६)

सम्पादक और प्रकाशक– श्री मूलचन्द्र शर्मा ज्यो॰
कनाट रोड, महू (होलकर स्टेट)

भारतमें ज्योतिषकी खोजपूर्ण पत्र-पत्रिकाओंका अभाव सा ही है, सर्व प्रथम 'श्रीस्वाध्याय' ने ही अपने स्तम्भोंमें इस अभावकी पूर्तिका प्रयत्न किया। कहना न होगा कि 'श्रीस्वाध्याय' की यह साधना सफल रही और अब हिन्दी गुजराती मराठीमें दो-तीन सहयोगियोंका प्रादुर्भाव हुआ है। श्री मूलचन्द्रजी शर्माका प्रयत्न प्रशंसनीय है। विगत डेढ़वर्षसे 'ज्योतिर्विज्ञान' निकाल कर इन्होंने भारतीय ज्योतिश्शास्त्रकी अच्छी सेवा की है। मर्मज्ञ अधिकारी विद्वानोंके ज्योतिष सम्बन्धी लेख इस पत्रमें रहते हैं। हम पत्रकी सफलता चाहतेहैं और प्रत्येक ज्योतिषप्रेमी सज्जनसे इस पत्रका ग्राहक बननेके लिए अनुरोध करते हैं।

'प्राणाचार्य' और 'धन्वन्तरि' के विशेषांक तथा 'परलोकसर्वस्व' 'श्रीभैरवस्तवसार्वभौम' आदि पुस्तकें समालोचनार्थ प्राप्त हो चुकी हैं। जिन पुस्तकों की दो प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं उनकी समालोचना और एक प्रतिका संक्षिप्त परिचय आगामी अङ्कमें प्रकाशित होगा।

कुछ प्रधान नगरोंमें श्रीस्वाध्याय मिलनेके स्थान

दिल्ली—(१) श्री प॰ दयानन्दजी जोशी बतासागली
(२)—नारायणदास जयदयालमल बुकसेलर दरीबाक॰
बम्बई—भावीरुख कार्यालय, राममन्दिर-बिल्डिङ्ग-कालबादेवी रोड, बम्बई नं॰ २।
बम्बई—नारायणमूलजी बुकसेलर, नारायण मन्दिरके पास कालबादेवी रोड, बम्बई २।
कलकत्ता—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी हरिसन रोड।
कानपुर—बम्बई पुस्तक एजेन्सी चौक बाजार।
आगरा—श्री प॰ ज्योतिप्रसादजी शास्त्री, भैरोंनाला बेलनगंज आगरा।
उज्जैन—श्री पं॰ रामचन्द्रजी त्रिवेदी मारुतीगंज
जयपुर—जैन न्यूजपेपर एजेन्सी जौहरी बाजार
भरतपुर—श्री पं॰ गोविन्दजी मिश्र चौबुर्जा

इन नगरोंके अतिरिक्त भारतके प्रत्येक छोटे बड़े नगरों में 'श्रीस्वाध्याय' के लिए उत्साही कार्यकुशल एजेण्टों की आवश्यकता है। निम्नपते से नियमादि मँगवाइये—

व्यवस्थापक—'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

नये सहायकोंका अभिनन्दन

आयुर्वेदजगतके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् अ॰ भा॰ आयुर्वेद-महामण्डलके भू॰ पू॰ अध्यक्ष भिषक्केसरी प्राणाचार्य श्री पं॰ गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी सीताबर्डी; नागपुर और पाचोरा (पूर्वखान्देश) के प्रसिद्ध व्यापारी श्री वेणुभाई रावल महोदयने इस अङ्कसे 'श्रीस्वाध्याय' का सहायकत्व स्वीकार कर पत्रको विशेष रूपसे अपनाया, अतः हम उक्त दोनों महानुभावोंका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। श्रद्धेय श्री छांगाणीजीका भारतके चुने हुए पीयूषपाणि प्रधान चिकित्सकोंमें विशिष्ट स्थान है। ७३ वर्षकी इस वृद्धावस्थामें भी आप निस्वार्थभावसे जनता-जनार्दनकी सेवा करते हुए सच्छास्त्रोंके स्वाध्यायमें निरन्तर संलग्न रहने वाले स्थितप्रज्ञ महापुरुष हैं। अतुल सम्पत्तिके स्वामी होते हुए भी आप अपना सब कार्य स्वयं करते हुए एक साधारण कुटीमें आदर्श ब्राह्मणका जीवन यापन कर रहे हैं। सादगी नम्रता और सज्जनताकी तो आप प्रतिमूर्ति ही हैं। आपका विशेष परिचय जाननेके लिए 'छांगाणी अभिनन्दन ग्रन्थ' देखना चाहिए।

श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग

सं॰ २००६ का पञ्चाङ्ग अभीतक प्रकाशित न होनेसे हजारों ग्राहकोंके पत्र हमारे पास आ रहे हैं उन सबको अलग अलग उत्तर न देकर इस विज्ञप्तिके द्वारा सूचित किया जाता है कि पञ्चाङ्ग छप रहा है, माघ शुक्ल १५ तक तैयार होकर ग्राहकोंके पास पहुंच जायगा। सनातनधर्म प्रतिनिधिसभाके लिए पञ्चाङ्गमुद्रणका बिलकुल नया कार्य होनेसे पञ्चाङ्गोपयोगी टाइप कुण्डलियां आदि बाहरसे ढलवाकर मँगवाना पड़ा। इस स्वावलम्बनमें बहुत अधिक समय तो अवश्य लग गया परन्तु अब भविष्यके लिए सब सुविधा होगई है, आधेके लगभग पञ्चाङ्ग छप चुका है और अब हम शीघ्रसे शीघ्र पूरा छपवाकर ग्राहकोंकी मांग पूरी करनेके प्रयत्नमें हैं। विलम्बके लिए प्रेमी ग्राहक क्षमा करें और जिन्हें जितने पञ्चाङ्गोंकी आवश्यकता हो शीघ्र आर्डर भेज कर मंगवा लें। जिन ग्राहकोंका मूल्य हमारे पास आ चुका है उन्हें छपते ही तत्काल भेजा जायगा।

हरदेवशर्मा त्रिवेदी

अध्यक्ष श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग कार्यालय, सोलन, (शिमला)

व्यापारीवर्ग सावधान !

लक्ष्मी प्राप्त करनेका अपूर्व अवसर आ रहा है ! !

फरवरी मार्च अप्रैल मासमें व्यापारिकक्षेत्रोंमें क्रांतिकारक उलटफेर होंगे ।

गत आठ वर्षोंसे 'श्रीस्वाध्याय' भारतीय साहित्य संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी सेवाके साथ ही अपने अमूल्य स्तम्भों द्वारा व्यापारीवर्गको जो सत्परामर्श देता आ रहा है वह सर्वविदित ही है। व्यापारी 'श्रीस्वाध्याय' को पूंजीकी भांति सुरक्षित रखते हैं और समयपर न मिले तो व्याकुल हो जाते हैं। कार्यालयमें आने वाले प्रतिदिनके पत्र और तार इसकी लोकप्रियताका प्रत्यक्ष प्रमाण है। जहां 'श्रीस्वाध्याय' भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर व्यापारीवर्गको लाभ पहुंचानेका सत्प्रयत्न कर रहा है, वहां अब कई आडम्बरप्रिय निरक्षर धूर्त लोग जनताको धोखेमें भी डालने लगे है, अतः ऐसे—

नकली ज्योतिषियोंसे सावधान रहें

इन लोगोंने 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित चान्स रिपोर्ट और भविष्यवाणियोंकी मनमानी नकल करके अपने नामसे ५) दश रुपया मासिक लेकर बेचना प्रारम्भ कर दिया है। व्यापारीवर्ग सस्ती रिपोर्ट और कम पैसेके लोभमें ऐसे अनधिकारी लोगोंके चक्करमें फंसकर लाभके बदले हानि होने पर ज्योतिश्शास्त्रपरसे भी अपना विश्वास खो बैठते हैं। किन्तु इसमें शास्त्रका कोई दोष नहीं, यह अपराध तो केवल निरक्षर-भट्टाचार्य लोगोंका ही है। "नीम हकीम खतरा जान" उक्ति प्रसिद्ध ही है।

श्रीस्वाध्यायसदन से प्रामाणिक रिपोर्ट प्राप्त कीजिये

ज्योतिषशास्त्र पर आने वाले इस आक्षेप को मिटाने और व्यापारीवर्ग को लाभ पहुँचानेके लिए श्रीस्वाध्यायसदनने सूक्ष्म शुद्ध गणित के आधार पर प्रतिमास की अनुभूत रिपोर्ट लिखकर स्थायी ग्राहकों को भेजने का निश्चय किया है। हमारी यह रिपोर्ट केवल एक व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज ही न होगी, अपितु भारत के सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों के सहयोग और परामर्श से श्रद्धेय श्री पं० हरदेव जी शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य के तत्त्वावधान में बहुत परिश्रम पूर्वक निर्मित होगी। ऐसी अद्भुत मासिक रिपोर्ट और चान्स व्यापारियोंको दूसरी जगहसे एक हजार रुपया व्यय करने पर भी प्राप्त न हो सकेंगे। सर्व-साधारण व्यापारियोंको लाभ पहुँचानेके उद्देश्यसे अभी आरम्भमें एक मासकी एक वस्तुकी रिपोर्टकी फी० ५०) और तीन मासकी १२०) होगी। रुपये पेशगी मनीआर्डर द्वारा प्राप्त होने चाहिए। वी० पी० से किसी को भी नहीं भेजी जायेगी। जो व्यापारी अपनी ग्रहदशाके अनुकूल व्यापारमें लाभ प्राप्त करनेका शास्त्रीय निर्णय कराना चाहें उन्हें अपनी जन्मपत्री भी साथ भेजनी चाहिए।

विशेष सूचना—स्मरण रहे कि यह प्रामाणिक विशेष रिपोर्ट केवल २० ग्राहकोंको ही हाथसे सुन्दर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखकर भेजी जायेगी। सोलनमें छपनेका साधन नहीं है और समयाभावसे अधिक लिखी भी नहीं जा सकेगी, अतः जिन २० ग्राहकोंके रुपये सबसे पहले प्राप्त हो जाबेंगे उन्हीं सज्जनोंको समय पर भेजी जा सकेगी। पहले चेतने वाले व्यापारी ही इस अपूर्व अवसरसे लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

निवेदक— नन्दलाल चोपाल

श्रीस्वाध्यायसदन [ज्योतिषविभाग] सोलन (शिमला)

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्ली में छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) में प्रकाशित